RNI No. UPHIN/2011/40224
वर्ष : 15 अंक : 1

पंजीकृत सं.: एस.एस.पी./एल.डब्लू./एन.पी-341/2024-2026

हिन्दी मासिक पत्रिका
जुलाई – 2025
मूल्य: 20/– रुपये मात्र

प्रकृति मेल

नोट: यह पत्रिका प्रत्येक माह की 6 तारीख को मुद्रित होकर उसी माह की 8 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है।

सूर्य सिद्धांत (भाग -3)

प्रकृति आश्रम

प्रकृति के तत्व विज्ञान, जीवन के मूल रहस्य एवं जिज्ञासा पूर्ण करने की प्रकृति स्थली

'अशोक मानव'

9415041794, 9807636072

ग्राम-मड़वाना, पो0-रघुनाथपुर, निकट सैदापुर, लखनऊ।

कोमल

बिल्डिंग मैटेरियल

सत्य प्रकाश मिश्रा (राहुल मिश्रा)

बिक्रेता • बालू • मोरंग • सीमेंन्ट • गिट्टी

मछली शहर, जौनपुर

मो0 9792512188

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष : 15 अंक : 01 | जुलाई - 2025

संरक्षक
डॉ. उत्तम प्रकाश मानव
संपादक
अशोक मानव
कार्यकारी संपादक
उमेश
विधि सलाहकार
नवनीत कुमार वर्मा
मुख्य संवाददाता
आशीष त्रिपाठी
वरिष्ठ संवाददाता
अरविन्द त्रिपाठी
दिल्ली संवाददाता
मनोज
पुर्वांचल हेड
श्री प्रकाश मिश्रा
संवाददाता
सूर्यमणि यादव, अनुराग, कामेश, सुनील,
गौरव पंत, अभिषेक पंत,
हेमंत पाण्डेय, प्रशांत द्विवेदी,
सुमनलता यादव, मानवेन्द्र त्रिपाठी,अभय सिंह
ग्राफिक्स, डिजाइन एवं तकनीकि
संजय यादव
कैमरा मैन
धर्मेन्द्र त्रिपाठी

प्रबंध, विज्ञापन एवं सदस्यता

संपर्क 8423330911, 9598911575
पंजीकरण कार्यालय

सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश– 226022
प्रधान कार्यालय

18/A ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली क्रॉसिंग,
फैजाबाद रोड, लखनऊ – 226016

इस पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों और विचारों के लिए उनका लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा। विज्ञापनों में किये गये दावों की जाँच–पड़ताल स्वयं करें। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।

नोटः इस पत्रिका के समस्त सहभागी पदाधिकारीगण पत्रिका के प्रारम्भ के अंक से ही बिना किसी मासिक सहयोग धनराशि या वृत्तिका के स्वेक्षा से बिना किसी दबाव के समय दान के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी अशोक मानव द्वारा सूर्या प्रिंटिंग प्रेस एण्ड पब्लिकेशन, खसरा संख्या 872, ग्राम मड़वाना, जनपद–लखनऊ, उ. प्र. पिन-226104 से मुद्रित कराकर सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर, लखनऊ, उ. प्र. से प्रकाशित किया।

संपादक – अशोक मानव

www.prakritimail.com
info@prakritimail.com
editor.prakritimail@gmail.com

अंदर के पन्नों पर

P 10 प्रकृति वास्तविक एहसास

P 11 मोती सागर वेद -"अखबार विज्ञान"

P 16 तत्व ही सत्य है

P 20 भारतीय वायुसेना के गौरव और नये युग के सेनापति

P 23 करुणा के अंक में प्रकृति की साँसे

P 26 शांति की तलाश में युद्ध का उद्घोष क्यों

P 35 एमएसएमई से औद्योगिक क्षेत्र में क्रांति

P 38 दुर्लभ चंद्रमा क्रिस्टल

P 40 1 ग्राम यूरेनियम का निष्कर्षण और विद्युत उत्पादन क्षमता

P 42 एहसास ही ज्ञान है

P 32 प्रकृति विज्ञान

सूर्य सिद्धांत भाग - 3

सूर्य सिद्धांत प्रदूषण को सजीवता के दर्पणीय मिलान से प्रदूषण मिटाकर एक गुण का पदार्थ बना देता है।

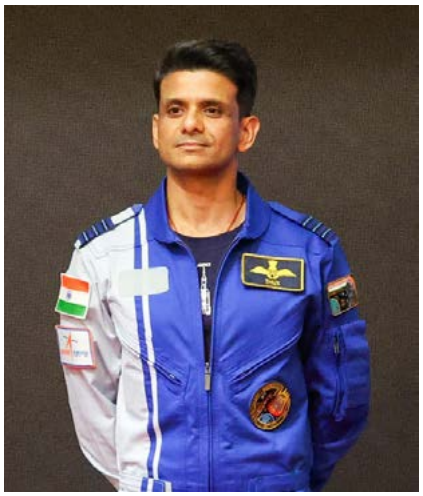

युद्ध

यु-युक्ति, द्ध-द्धय

अशोक मानव

यथार्थ ऊर्जा ध्यान के दर्पणीय मिलान में जो वाहय गंधीय विज्ञान अपने गुणों को बनाना चाहती है उसे ईधन के रूप में इस्तेमाल कर यथार्थ ऊर्जा अपने गुण का पदार्थ बना देती है जिसे रासायनिक 'युद्ध' कहा जाता है।

अर्थात युक्ति द्धय की। प्राकृतिक अर्थ में युद्ध दूसरे गुण को अपने गुण में परिवर्तित करने की क्रिया है। भौगोलिक अर्थ में अपनी भूमि विस्तार की क्रिया युद्ध है। वैज्ञानिक अर्थ में युद्ध किसी भी पदार्थ विषय वस्तु का सदुपयोग कर उसे सृजनमयी बनाने की क्रिया है। व्यवहारिक रूप में युद्ध आपसी लड़ाई का एक नाम है। वास्तविक रूप में जीव अपनी प्रवृत्ति के अनुसार अपने सम्पर्क में आने वाले जीव, पदार्थ, विषय को बदलने की क्रिया में लगने वाले बल को युद्ध कहते है।

प्रकृति में जीव पदार्थ अपनी प्रवृत्ति (स्वभाव) के अनुसार दूसरे गुण को अपने गुण में परिवर्तित करने की युक्ति सूर्य विज्ञान के अनुसार करता है। प्राकृतिक युद्ध की यह क्रिया सृजन का विस्तार करती है। इस प्राकृतिक संघर्ष की क्रिया से एक दूसरे के गुण मिलान से तीसरे की उत्पत्ति हो जाती है। जिससे प्रकृति का निरन्तर विस्तार होता है। प्रकृति के अर्थ में यदि युद्ध को देखे तो युक्ति द्धय अर्थात 'दूसरे गुण को अपने गुण में परिवर्तित करने की तकनीकी वैज्ञानिक विद्या' का एक नाम है। इस युद्ध से सृजन और विस्तार होता है। इसकी वैज्ञानिकता पदार्थ के गंध में निहित होती है। जो गुण का निर्माण कर प्रकृति का विस्तार करती है। मानव के अतिरिक्त सभी जीव पदार्थ सूर्य विज्ञान के अनुसार स्वतः स्वचालित होते है। मानव भी जब प्रकृति के अनुसार बहना सीख लेता है तो प्रकृति युद्ध में भागीदार बन सृजन का सहयोगी हो जाता है। मानव जिसे युद्ध मानता है वह अहंकार की एक लड़ाई है जो खुद को मिटा देती है। यह युद्ध प्रकृति को चोटिल करता है। मानव उसके इस कष्ट को नहीं देख रहा है। जैसे जीव की पीड़ा सहने की एक सीमा होती है, वैसे ही प्रकृति की भी दर्द सहने की एक सीमा होगी।

जिसे मानव युद्ध मानता है उसकी प्रकृति में कोई जगह ही नहीं वह सिर्फ विनाश करता है। जिस दिन मानव प्रकृति विज्ञान की वास्तविकता को जान पाएगा स्वतः अपने इस युद्ध को खत्म कर देगा। मानव एक युद्ध अपने आप में लड़ता है जो सबसे खतरनाक है। वह है 'तर्क' का।मानव किसी को जानने या किसी विषय का निर्णय लेने या किसी से हुई लड़ाई में उसके व्यक्तित्व को तर्क वितर्क कर उसे जानने की क्रिया या तुलनात्मक अध्ययन से किसी निष्कर्ष पर पहुँचने की क्रिया या किसी भी निष्कर्ष पर पहुँचने के पूर्व तर्क वितर्क की क्रिया, आन्तरिक युद्ध है। इस युद्ध में दोनो पक्ष व्यक्ति स्वयं होता है। व्यक्ति अपने अंदर तर्क-वितर्क में बाह्य क्रिया को अपने अंदर जोड़ लेता है। व्यक्ति जिसके लिए लड़ रहा होता है, एक बार बाह्य जगत से उसके व्यक्तित्व को देखता है फिर बाह्य जगत से ही उसकी कमियों को देखता है। तत्पश्चात किसी प्रतिबिम्ब से तुलनात्मक अध्ययन करता है जो त्रिकोशी युद्ध बन जाता है। इस युद्ध में व्यक्ति तर्क-वितर्क करके

बाह्य जगत से गुण-अवगुण की गंध को अपने अंदर जोड़ लेता है जो अपने अपने गुण-अवगुण के अनुसार व्यक्ति को व्यथित करने लगती है जिससे व्यक्ति कमजोर हो जाता है। इस युद्ध में युद्ध दूसरे लोग लड़ते है, व्यक्ति की सिर्फ जमीन इस्तेमाल होती है। इसमें व्यक्ति अपने लिए कोई कार्य नहीं कर पाता है सिर्फ दूसरों का युद्ध अपने अंदर लड़ते-लड़ते अपनी जमीन को उसर बना देता है। गौर करने वाली बात यह है कि इस युद्ध में स्वयं भाग नहीं लेता और परेशान हो जाता है। ऐसे युद्ध से बचने के लिए व्यक्ति को तर्क-वितर्क से नहीं अपनी दृष्टि से अपने अंदर की निकली पहली आवाज़ को सच मानकर आगे बढ़ जाना चाहिए क्योंकि हर अवस्था की जानकारी अपने लिए जो सही होती है वही अपनी आवाज अपने को बताती है। यही हर युद्ध की प्राकृतिक जीत है। इस युद्ध में न अपना कोई नुकसान होता है और न ही प्रकृति का, सिर्फ सृजन होता है। प्रकृति संघर्ष नहीं कराती सिर्फ रास्ता दिखाती है जब अपने आप से पूछा जाता है तब। प्रकृति युद्ध का एक मात्र अस्त्र 'गंध विज्ञान' है जो भावना से तैयार होता है और स्वतः अपने गुणों का विस्तार करता है जो विरोधी बन रूकावट डालता है नष्ट कर देता है।

पाठकनामा

जीवन में आ गई रुकावटों, अनसुलझी समस्याओं, अनजानी उलझनों में और शांत गहरे विचारों के समंदर की गहराईयों में आध्यातिमक जिज्ञासा को हल करने के लिए उतवले व्यकितयों के लिए यह पत्रिका द्विव्य प्रकाश की तरह है, जो कि रुकावटों के परे का रास्ता दिखाती है। परेशानियों का उपाय बताती है।

उलझनों को संवारती है, अध्यात्म का सही अर्थ दिखलाती है। पत्रिका अपने आप में एक मिसाल है। सारे दिखावे, बहकावे से परे है यह पत्रिका। प्रकृति का सत्य जानना है तो इस अभूतपूर्व पत्रिका को हाथ मे उठाये, इसके पन्नों में आपको आप वाला उत्तर मिलेगा। सम्पादक जी को सादर प्रणाम इस सार्थक और अद्भुत प्रयास के लिए।

उमेश

सभी पाठकगण से अनुरोध है कि आप अपने विचार अपने लेख हमें निम्न पते पर भेज सकते हैं–
A/18 ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली रेलवे क्रॉसिंग, रविन्द्र पल्ली फैजाबाद रोड, लखनऊ226016
आप हमें अपने विचार निम्न ई–मेल पर भेज सकते हैं -
email-editor.prakritimail@gmail.com
Contact: **9807636072, 7376495194**

जब मुझे मदद की जरूरत थी तो देखा कि लोग संपन्न को ही देखते हैं ।

रवि किशन

जीवन, सहयोग और रचनात्मकता की जीत है।

फ्रिटजोक काप्रा

डोनाल्ड ट्रंप इतिहास में शांतिदूत और ईरान को बम बनाने से रोकने वाले व्यक्त कहलाना चाहते हैं।

ब्रेट स्टीफेंस

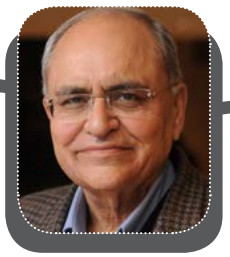

पाकिस्तान के अब तक के आचरण से स्पष्ट है कि उसका इस्लाम या अल्लाह से वास्तविक सरोकार नहीं है।

बलबीर पुंज

सब कुछ बेहद रोमांचक है। खास तौर से निर्वात में तैरना अद्भुत अनुभव रहा।

शुभांशु शुक्ला

वह गाना जब उन्होंने सुना तो उन्होंने छूटते ही कहा, यस, यू हैव अराइव्ड।

जुबिन नौटीयाल

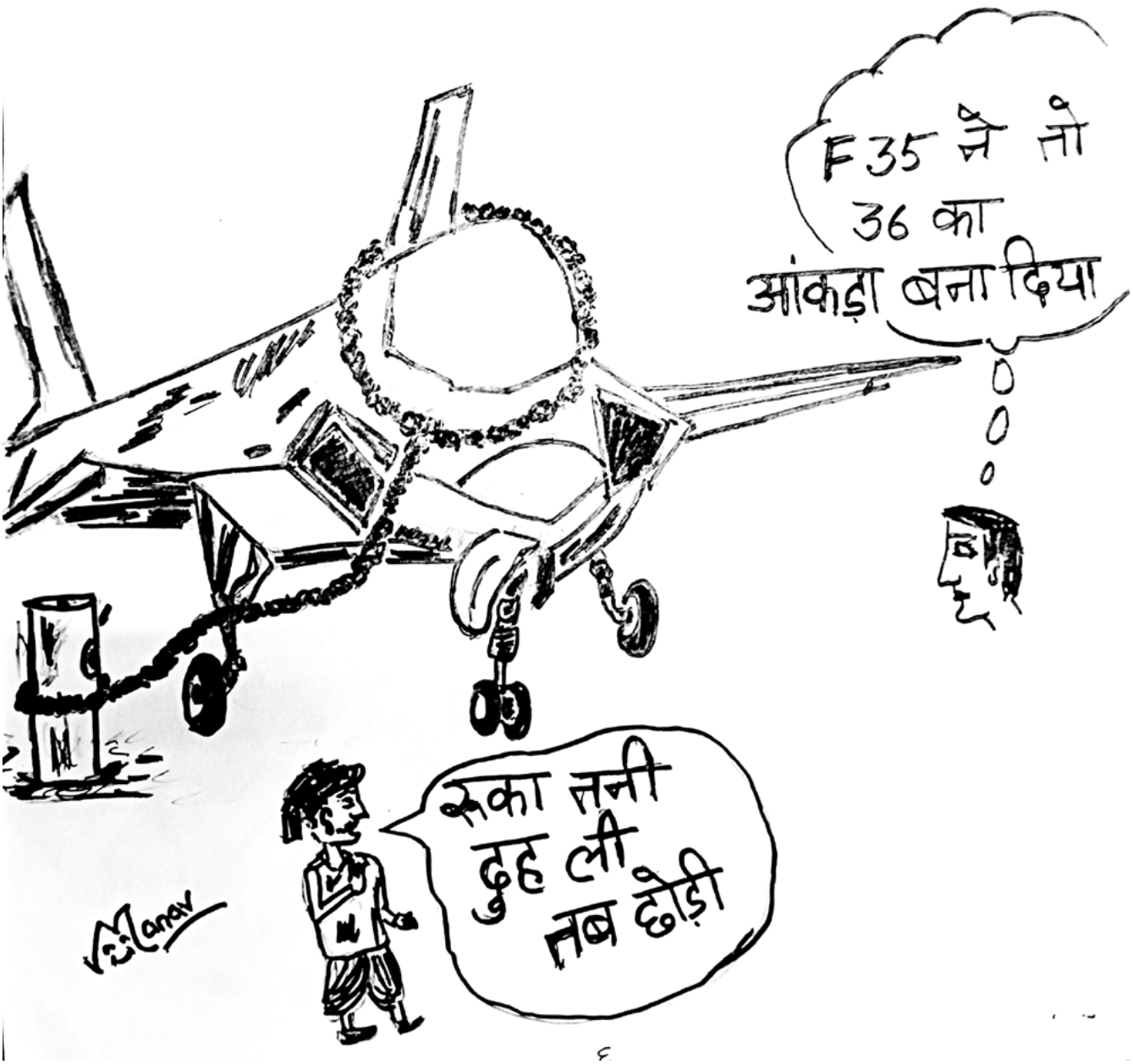
F35 ने तो
36 का
आंकड़ा बना दिया
इसका तनी
दुह ली
तब छोड़ी

प्राकृतिक आवरण

कामेश

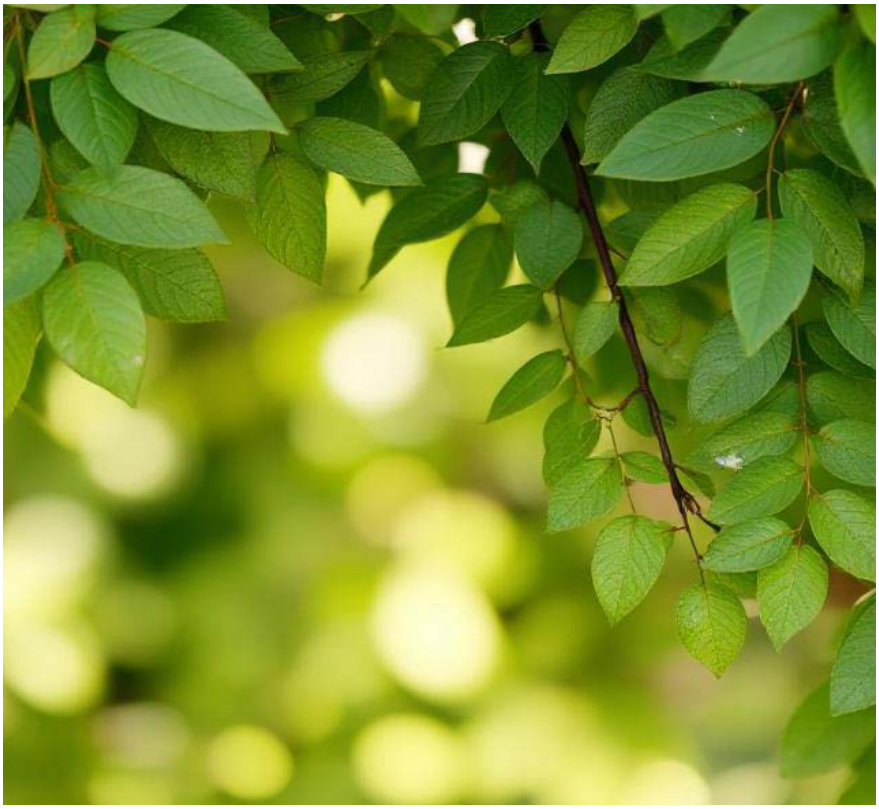

प्राकृतिक रूप से जो पर्दा जीव रूप को मिलता है वह उसके शरीर की चमड़ी होती है जो उसके भीतर के गुणों को रोक कर उर्जावान बनाने का कार्य करती है ओर बाहर की नकारात्मकता उर्जा को रोक कर उस जीव का नकारात्मक निर्माण करने का विकास करने का कार्य करती है।

प्राकृतिक आवरण अर्थात पर्दा। जैसा कि हम सभी जानते है कि पर्दा कहां कहां और क्यों लगाया जाता है। निश्चित ही हम देखते अपनी किसी कमजोरी को छिपाने के लिए हम पर्दे डालने के आदती हो जाते है। और हमारी ये आदतें धीरे-धीरे उस आस्था पर पहुंच गई जहां हम इसे परम्परा के अंतर्गत निहित करते गए और अब यह हमारे लिए एक अनिवार्य कार्य बन गया। हम अपने जीवन मे पर्दे के भीतर वह सब कुछ करते है जो कि बाहर देखने वाले ये न जानते हो कि अन्दर क्या है। सबको सब कुछ पता है लेकिन फिर भी हम परम्पराओं के इतने वशीभूत होते गए है कि हमें पर्दा करना अनिवार्य लगने लगा और करते है।

हम अपने शरीर से लेकर घरों तक ये पर्दे लगाने के आदती है हम कुछ छिपाना चाहते है क्या छिपाना चाहते है ये दुनिया को पता है क्योंकि हम जिससे छिपा रहे है वो भी वही करता है और सबसे हास्यापद बात तो ये है कि हम सभी एक दूसरे से पर्दा करते है और अन्दर डर है कि अगला देख न ले। भला किसे पड़ी है किसी के पर्दे मे देखने की। लेकिन दूसरी तरफ होता यही है कि हर कोई अपना पर्दा जितना मजबूत करता है दूसरे पर्दे को उठाना चाहते हैं पर्दा कमजोर होने की कल्पना भी करते है। कहीं न कहीं सभी के भीतर अन्तरमन मे ये धारणा विद्यमान होती है कि कास हम अगले के पर्दे के भीतर देख पाते। कोशिस जारी है दूसरे के पर्दे के भीतर देखने की और अपने पर्दे को मजबूत करने की और मजे की बात तो यह कि इसी देखने और ढकने के चक्कर मे व्यक्ति की ऑखों पर प्राकृतिक रूप से ऐसा पर्दा पड़ जाता है कि वह न तो अपना पर्दा ढक पाता है और न हि कभी अपने भीतर झांक कर देख पाता है। कारण है कि वह दूसरे के पर्दे मे झांकने का इतना आदती हो चुका है कि अपने भीतर देखना ही नही चाहता और यदि देखता भी है तो देख ही नही पाता क्योंकि उसकी ऑखें खुद को देख पाने की आदत भूल चुकी होती है।

बच्चा जन्म लेता है और अभी उसे ये भी नही पता कि मैं नंगा हूॅ अर्थात उसे तो अभी कुछ भी पता नही ऑखे भी खोला ना ही पेट मे अन्न के दाने पड़े नही अनाज का एक टुकड़ा पाया नही फिर भी उसके ऊपर पर्दा डाल दिया जाता है। अभी उसे ये भी नही पता कि मैं नंगा भी हूॅ लेकिन उसके लिए कपड़ों की खरीद दारी शुरू हो जाती है। बाप ही नही सगे सम्बन्धी जिनको वो बच्चा अभी कुछ नही समझा देखा वो भी देखने के बहाने कपड़े दे जाते है कि पर्दा डाल दो ढंक दो और मॉ को जाते जाते बोल भी देते है कि बच्चे को खुला मत छोड़ना। सिखा के जाते है। उसे बाहर की हवा लगी नही कि हवा लगने से बचाया जाने लगा और वह बच्चा जब तक जानने समझने लायक होता

है तब तक कपड़ों का इतना आदती हो चुका होता है कि खुद को खुदी से ढ़कने लगता है। लेकिन ये बात सिर्फ शरीर ढकने वाले कपड़ों तक ही सीमित नही रह जाती कहानी आगे बढ़ जाती है, अभी तक जो बच्चा अपने शरीर को ढक रहा था अब वही बच्चा अपने कर्मों पर भी पर्दा डालने लगता है जीवन भर उसे ढकने की आदत होती है। बचपन मे शरीर ढका और बड़ा हुआ तो मॉ बाप से चोरी की और छिपा लिया। दोस्तो के साथ मिलकर जो गलतियां किया झूठ बोल के पर्दा डाल दिया अर्थात् अब वो अपने कर्मो की सच्चाइयों पर पर्दा डालना सीख गया फिर तो अब पर्दा डालने का सिलसिला ही चल पड़ता है जिन्दगी भर अच्छे बुरे कर्मो को ढंकने मे लगा रहता। कभी इज्जत मान सम्मान पर तो कभी चोरी बेईमानी पर तो कभी अपने कही बातों पर भी पर्दा डालने लगता है। अन्त समय जब वह दुनिया से विदा होता है तब भी यही समाज उसे पर्दे मे ही छिपा देता है। अजब कहानी है पर्दे की भी। लेकिन महत्वपूर्ण बात जो है वो ये कि कितना अजीब इत्तफाक होता है जो समाज मरने पर भी पर्दा डालता है। बीच की जिन्दगी तो वह सिर्फ समाज द्वारा दी गई परम्परा का निर्वाह करता रह जाता है। उसे ये पता ही नही चलता कि जो आवरण वह पूरी जिन्दगी ओढ़ता रहा वह अपना खुद का नही बल्की लोगों द्वारा दी गई एक जिम्मेदारी थी जिसे वह अब तक ढोता रहा।

प्राकृतिक रूप से जो पर्दा जीव रूप को मिलता है वह उसके शरीर की चमड़ी होती है जो उसके भीतर के गुणों को रोक कर उर्जावान बनाने का कार्य करती है ओर बाहर की नकारात्मकता उर्जा को रोक कर उस जीव का सकारात्मक निर्माण करने और विकास करने का कार्य करती है। प्राकृतिक रूप से दूसरा आवरण उसे स्मृतियों को खत्म करके भी मिला होता है। अर्थात् पूर्व जन्म की घटनाएं जो भी होती है वो याद नही रह जाती अर्थात् प्रकृति उस पर पर्द डाल देती है ताकि वह अपना नया जीवन पुनः सकारात्मक रूप से जी

सके। पूर्व जन्म की तो बात दूर, हम देखते है कि बचपन की अनेकानेक घटनाएं हम भूल चुके होते है और जैसे-जैसे दिन बीतता जाता है हम अपने ही साथ घटी घटनाओं से अनभिज्ञ हो जाते है। ये भी हमारे जीवन कों सुचारू रूप से जीने के लिए हमारी स्मृति पर डाला गया प्रकृतिक आवरण ही होता है। क्योंकि यदि हम स्मृतियों मे जीते रहेंगे तो आगे का जीवन नीरस लगने लगेगा और हम जिस प्राकृतिक कार्य के लिए पैदा होते है उसे कर पाने में सक्षम नही हो सकेगे। लेकिन फिर भी हम पीछे देखने के इतने आदती होते है कि हमेशा मुड़-मुड़ के पीछे ही देखते है और आगे जीवन के मार्ग मे पड़े परिस्थितियां रूपी पत्थरों से ठोकर खाते रहते है और हम समझते है कि प्रकृति मेरे साथ ऐसा खिलवाड़ कर रही है कि मुझे जीवन में आनन्ददायी अवशर नसीब नही हो रहा परन्तु यदि सूक्ष्म अध्ययन किया जाय तो हम ठोकर ही मात्र इसलिए खा रहे हैं कि हमें पीछे देखने की आदत पड़ी है और हम पीछे भी कहीं न कहीं इस उद्देश्य से देखते है कि कास किसी का पर्दा उठ जाय किसी का राज खुल जाय कुछ ऐसा जान पाए कि अगला मेरे सामने सर न उठा के चल सके।

अर्थात् हम हमेशा दूसरों का पर्दा देखना ही इसलिए चाहते है कि ताकि वह मेरे सामने सिर न उठा सकें। और दूसरों को नीचा दिखाने के चक्कर मे हम हमेशा अपने जीवन के पथ की सरलता सहजता को भूल जाते है। और ये भी भूल जाते है जिसने हमारे ऊपर पर्दा डाला है उसी ने उसके ऊपर भी पर्दा डाला है। यदि हम अपने भीतर झांक कर अपनी सच्चाई नही देख पाएंगे तो भला दूसरों के भीतर कैसे देख सकते हैं अर्थात् जरूरत बाहय आवरण की नही सामाजिक आवरण की नही बल्कि प्राकृतिक और आन्तरिक आवरण की है पर्दा लगाना ही है तो प्ररकृतिक आवरण के भीतर रह के जीवन पथ पर अग्रसर हो।

प्रकृति वास्तविक एहसास

गौरव पंत

प्रकृति हर पल हर क्षण हर जीव, तत्व, पदार्थ को वास्तविक एहसास कराती है। प्रकृति में हर कोई इस एहसास को अनुभूत कर रहा है और आनंद ले रहा है। मानव ही प्रकृति का ऐसा जीव है जो गुजर तो वास्तविक एहसास से ही रहा है किंतु उसमें अपनी परिभाषाओं की गणित से फेरबदल करने की फिराक में आनंद को नहीं जान पा रहा है। प्रकृति हर किसी को हर पल उसके रासायनिक एहसास से क्रियाशील किए हुए हैं। उस रासायनिक अनुभूति से हर किसी को गुजरना ही होगा क्योंकि प्रकृति अनिवार्य मार्ग पर अग्रसर है। विकल्पता तो हमारी सोच है। प्रकृति में विकल्पता का कोई आधार ही नहीं। हमें किसी अपनी दिमागी कला की विकल्पता से कुछ परिवर्तन नजर आता है तो हम उसे ही अपनी खोज मान बैठते हैं और प्रकृति को अक्षम समझ स्वयं को क्षमता की श्रेणी में सर्वोत्तम मान बैठते है, किंतु अगर कोई विकल्पता हमें सक्षम नजर आ रही है तो वह हमारे रसायन का ही परिणाम है। आंतरिक अवस्था ने विकल्पता को कभी कोई स्थान दिया ही नहीं वह हमेशा अनिवार्य मार्ग पर ही गतिमान रही और हर किसी को वास्तविक एहसास से गुजारती रही। हमारा लाभ हानि का दृष्टिकोण ही हमें विकलांग कर चुका है। जो वास्तविक एहसास को पीड़ा नाम से जोड़ देता है, जब हमारे अनुरूप कुछ होता नहीं। किंतु जो भी हमारे लिए अनिवार्य होगा सदैव उसी एहसास से हमें गुजरना होगा।

'वही प्रकृति का वास्तविक एहसास है'।

ना वास्तविकता कोई बदल पाया।
ना वास्तविकता कोई बदल पाएगा।
हर कोई प्रकृति एहसास की वास्तविकता से चलता आया।
फितरत मानव की रही कि बदल दिया, ना बदल कुछ पाया, ना पाएगा
विकल्पता भी अनिवार्यता का ही रूप
तभी वास्तविक एहसास से हर कोई गुजर पाएगा।
हर सांस जब अनिवार्यता तो स्वयं विकल्पता का कोष मिटता जाएगा।
अशोक एहसास अनिवार्यता ब्रह्मांड अनिवार्यता से बना।
ब्रह्मांड अशोक है अशोक हो जाएगा।

मोती सागर वेद -"अखबार विज्ञान"

"मोती–मोती, दाना-दाना, अन्न खजाना, आना जाना"
(अलौकिक आस्था का संगम – मात्र विनाश की कल्पना)
(वृतात्सुहूः वृमेय्कम पूर्णम यात्रानामेः तरंगम भवः)

अभिषेक पंत

"मृदा–(रास्तेसे)– कल्पना दर्शन क्या कहता है ?
रास्ता – (मृदा से) – हवाओं की चांदनी का पर्दा ही कल्पना का दर्शन है, जो कहता है
"पानी – पानी कुआँ भरे, भरे सो कुआँ हवा, पानी-पानी सागर भरे, भरे सो सागर हवा"
"जन्म मृत्यु दोनों एक ही मार्ग होते हैं, अंतर होता है आत्मा के सिंचाई की तत्व मिलान प्रक्रिया में, -
जन्म की अवस्था में सिंचाई करने वाला तत्व बाहर होता है,
मृत्यु की अवस्था में सिंचाई करने वाला तत्व ही तन बन जाता है"
शैली तार – ब्रह्मांडीय चेतना सार

सदन सुरात्मीयता की श्वसन विराटता के मूल दर्शन की आत्मा भार मन भाव विलीनतम लौकिक अलौकिक कृषि स्पातीय मृदा संवैधानिक तत्काल ऋतु परिवर्तन विद्या को अखबार विज्ञान कहते हैं।

अखबार अर्थात अवसर बनाकर खनिज की बाह्यता में रसायनिक बल की पैठ से अविरल संदेश मात्रा की आवृत्ति योजन गुंजन तृष्णा, जिसमे स्वतः से तत्व धातु कृषि आंतरिकता ही पदार्थ वृत्ति की काया शैली का स्वर भाव तार योजित ध्वनांकित स्वाभाविक वृत्त मूल बन जाती है।

अर्थात जब मन ही ओजस्वी प्रकारेणू समायोजन में तत्व इंगित ईंधन पदार्थ की मात्रा को सात्विक गर्भ रसायनिकता में ईंधन ईंधन विलयी संसार का गंधीय भाजक चेतना अंश बनाता है, तब जिस वृत्त मूल की अलख से निरंतर ज्योतिमान ज्यामिति भी शून्यवान अवनीती बन जाती है, उस स्याही व्यावहारिक तन मन विलयी आत्मा रागिनी धुन जड़ अंकिता संयोजकता को अखबार विज्ञान कहते हैं।

अर्थात सजीवता ही निर्जीविता का भेद है, इसीलिए इच्छालीन ईंधन विलीनतम पदार्थ भोजन शैली ही व्यावहारिक रस मंडल में निर्जीविता की तृष्णा से प्रभावित होती है।

वर्तमान समय में मानव जीव प्राणी आलोचनाओं की गिद्ध रोटी में गोते लगाकर, कृत्रिम उपासना उपलब्धि की चट्टान को ही अपने अयस्कों का रसिक भंडारण मान रहा एवं आक्रांत विक्रांत जननी भ्रूण संस्कृति की व्याधि मानक बुद्धिमत्ता को ही अखबार की रोशनी से बना स्याही का रोशनदान मान रहा।

अपितु गति योजक कल्पनाएं सर्वदा नीति हीन आलोचना की वनस्पति को दीवार नुमा द्रव्य का अनुष्ठान कहती है, जिसमें गतिशील पावक चेतना की मति ही निजी संपत्ति से व्यावहारिक कल्पना बनकर रहती है। इसीलिए प्रकृति का उपासक वर्ग नहीं होता, प्रकृति ने इसी उपासना चयन की दीर्घा के वर्क अर्क नृत्यांगना अवसरवादी स्वर्ग नरक पाप पुण्य काल्पनिकता को पकाकर मिटाने हेतु मोती सागर वेद बनाया। अर्थात जब मोती नुमा आवृत्ति होती है, तब सागर नुमा ईंधन कृषि होती है, जब सागर नुमा ईंधन कृषि होती है, स्वतः इच्छा की आवृत्ति में बनने वाली तृष्णा युक्ति की खबर ही वेद नुमा तन तृप्ति होती है। अर्थात जिस ज्वाला में जिस भी अवस्था को शीतल होना है, ज्वाला नुमा शीतलता की शून्य आंशिक वृत्ति की इसी अवस्था चयन अंकन शैली विधान तरंगे चुंबकीयता को मोती कहते हैं। शाब्दिक भेद में सजीव निर्जीव गर्जना की अमृत विष थैली को पकाने वाली जैव्य जीव वनस्पति तुला समाहित, खगोलीय प्रकाश शून्यांविता की मूल स्वर आकाशगंगा भूगोलिमा को सागर कहते हैं। एवं, समय की नाड़ी में खबर की घड़ी को आवृत्ति मूल का भार पकवान बना देने वाले धुन राग ध्वनि प्राण वायु दोलन विद्युता कंपन्यता मन्थनी पदार्थ अर्क अंश को वेद कहते हैं। अर्थात अख़बार विज्ञानं के निहित, परंपरागत अवनीति को परिवर्तित कर तत्काल पर्यावरण तापमान से सुनीता पारा समीकरण खनिजंकित कर मूल दृश्य वाहिनी की तृष्णा क्षुदा को ही तरंगीय वाहन कृषि बना देने वाले निर्जीव सन्देश यांत्रिकी को मोती सागर वेद कहते हैं। अर्थात पुण्य प्रताप से परे मानव जल निधि की संज्ञा को पकाकर, वायु प्रमेयकों में परिवर्तित कर, आत्मा सुलभ सूक्ष्मता का मन तन ज्ञानानवित रश्मि पारा व्यूह बनाने वाले इच्छा पारा जलवायु धारा वेग को मोती सागर वेद कहते हैं।

कल्पना का निरूपम तार ही अनिवार्यता

का रूपम भार है, यही वह सार है जिसमें ईंधन धार है, परमात्मा स्वर की यात्री वाहन कला ही जीवन पारा आत्मा वार है, जिसमें वार करने की मूल मन यौगिक द्रव्य अनुभूति ही अखबार है, प्रकृति की मूलता ही प्रवृत्ति में सवार है, जो आधुनिक है वह नवीनतम प्रकार है, पदार्थ मूल का मोती व्यंजन ही अखबार प्रणाली का हार है, जीवन मोती है तो मृत्यु सागर है, यही ब्रह्मांडीय वेद की मूलाधार व्यवहारी गंध कृषि है, जिसमें इच्छा ही इच्छा पर सवार है।

प्रायोजक शल्यता से आगे, अप्रतिम प्रतिम निर्भीकता से प्रणय वंदनी कल्पना में लीन, चार धाम शीर्षक वट सूर्य बना देने वाले कर्ण पोषित जीव प्राणी को कल्पना की चादर भी व्यूह वादी गामिनी पद्धति लगी। जबकि प्रेरणा का चंद्रमा अंश वंश ही सूर्य मंत्रणा का जाप किला था, अर्थात वेद तारुण्य नमी वंशज नीति ही तर्पण दर्पण गामिनी गर्भान्विता की चयन आसक्ति है। अखबार विज्ञान चार अंशों में क्रियामान होता है - निर्गुण, स्वधुन, पारा प्रहार, आवृत्ति आधार।

अखबार विज्ञान (निर्गुण)

शयन चिकित्सा वर्गीकरण से आगे, पुण्य आत्मा भवन सामग्री से परे, जब अवस्थाओं का द्वयी दर्पण विकास होने लगता है तब जीव स्राव की मात्रा का जैविक निर्वाण कुंज परिवर्तित होने लगता है। अर्थात प्रकृति ने एहसास में कल्पना भी तभी जोड़ी जब कुंजीवाद परिपक्व हो गया। अर्थात निर्जीव कुंजीवाद के सजीव एहसास की मूल तत्व कल्पना के अनिवार्य संदेश आवंटन को अखबार विज्ञान की निर्गुण अवस्था कहते हैं। जो कि तन मन मिलान का प्रथम चरण होता है, जिसमें द्रव्य दीर्घा का मूल चयन ही ईंधन वृष्टि का मानक मापक होता है। अर्थात अखबार विज्ञान की निर्गुण अवस्था तत्व रस इकाई की पदार्थ यात्रा का आरंभ है, जिसमें इच्छा ही ईंधन की नीति का मूल द्वार पारा अंश है।

अखबार विज्ञान (स्वधुन)

रागिनी राधिका लावण्यता की यांत्रिकी पल्लव जीवनी के प्रथमार्थी संभावना वृत्त को मूलाधार की चयन कोशिका कहते हैं। इसी चयन कोशिका के पारा ध्वनि योग में उत्पन्न प्रथम इच्छा चरनावली के आवृत्ति मानचित्र को स्वधुन कहते हैं। जिसमें अखबार विज्ञान की स्वधुन ही प्रथम अर्थ वृत्त की आवृत्ति लाभांश शून्यता होती है, जो एकाकी वृत्तांकन परिपक्वता की मूल पारा गति होती है। अर्थात जीवन का निष्कर्ष ही पदार्थ शून्यता की तात्विक धुन है अपितु जीवन का प्रमाण ही स्वधुन लक्ष्यांकिता की ईंधन शैली है। जिसमें पारा वृत्तांत गति का इच्छा अधिकार ही अखबार विज्ञान की मूलता को तनशील मनलीन करता है। अर्थात अखबार विज्ञान की परिपक्वता ही तरलतम निवृत्ति की ऊर्जा गति होती है। अब जिस पूर्णता की गति में मूल धातु चयन अखबार विज्ञान का शुनयार्थी कारक बनता जा रहा है, मानव का श्वसन प्राण वायु आधार व्यूह ही स्वधुन की यौगिक शीतलता में अखबार विज्ञान का मूल संदेश अंश बनता जा रहा है, यही अख़बार विज्ञान की द्वितीय चरणावली प्राथमिकता होती है।

अखबार विज्ञान (पारा प्रहार)

पश्चिम की गान्धात्मीयता ही जीवन वाणिज्य की स्तुति लहर बनाई गई थी, अपितु राधिका मिलान वशीकरण को भी प्रकृति ने पारा प्रहारी अखबार बनाकर मिटा दिया। अर्थात आवश्यकताओं का गुणी होना एवं आवश्यकता पूर्ण करने का गुण होना दोनों एक ही कांटे पर रखकर प्रकृति ने ध्वनि आयाम पूर्णिमा की जगत जीवनी अनिवार्यता ही आत्मा कोष की मूल रूपम शक्ति बना दी। अर्थात आवश्यकता की पूर्णिमा में ईंधन आहार का मूल प्राणवायु संसार बन जाना ही इच्छा शक्ति का पारा प्रहार है। जिसमें मस्तिष्क व्यंजन की ऋतु काल सभ्यता ही मूल शक्ति ज्वाला वेदी की पारा नियति होती है। अखबार विज्ञान का मूल अंश ही अधिकार की आवश्यकता को पारा प्रहारी ईंधन आत्मीयता का लाभांश बनाना होता है। प्रकृति की निर्भरता प्रवृत्ति की स्वीकृति होती है, प्रकृति ही मूल रागिनी धारा है, जिसमें मूल वंशज अंशज भूमि आत्मा ही मन प्राण वायु की पारा प्रहारी अखबार पेटी होती है।

अखबार विज्ञान (आवृत्ति आधार)

परिपूर्णता की जीवन साक्ष्यता में स्वप्न दर्शन का किला बनाकर, जंतु माधव कोष बनाया तो गया अपितु तंत्रिका विदुता का गुरुत्व तो उसी मानसिक अनुभूति का जीव अर्जन प्रकृति लिपित करता रहा, जहां से मन तन इच्छा ईंधन वास्तु वस्तु जलवायु आधार को सजीव तृप्ति किया गया। आवृत्ति आधार मूल पूर्णाहुति समायोजन से नग्नता पाश्चात्य तक एक ही गर्भाशय विलयन विसफोटित करता है, जिसमें रागिनी राधिका संशय नीलिमा भी श्वेतांबरी व्यक्तित्व का कारक पोशाक बनाती है। अर्थात आवृत्ति आधार से अखबार विज्ञान ने मूल नियम राजस्व भेद कर, स्वयंभू आचार विचार का संदेश स्थापित किया, जिसमें पूर्णिमा विद्युता ही इच्छा साक्ष्य की ईंधन गामिनी चालक महत्ता बन गई। अर्थात किसी

निर्जीविता आदि यात्रा काल है, सजीवता अंत यात्रा काल है,
आत्मा सूर्य एहसास काल है, मन चंद्रमा कर्म काल है,
श्वसन प्रवृत्ति मंगल मस्तिष्क काल है, धड़कन पृथ्वी हृदय काल है।
अर्थात मंगल से पृथ्वी एवं चंद्रमा से सूर्य दोनों की अवस्था में पृथ्वी आदि एवं मंगल अंत... सूर्य आदि एवं चंद्रमा अंत है।

इसीलिए इस उल्टे क्रम को मूल स्वर जुड़ाव में लाने के लिए प्रकृति ने मोती सागर वेद से अखबार विज्ञान बना दिया। अर्थात वर्चस्व की कला किसी की भी हो, मूल धातु स्वर तो उसी मोती पर स्थिर होता है, जहां का संदेश मूल इच्छा शक्ति से विस्तृत होता है। अर्थात पृथ्वी अधूरी रहे इसीलिए मंगल को आदि अंत के सामने अंतिम अंत दिखा दिया गया। लेकिन प्रकृति ने इस दृश्य का

भी अवस्था का पूर्ण हो जाना ही जन्म दर की स्थानीय वृति है तो अपितु मृत्यु उत्पात का घर्षण सिद्ध करना मात्र कल्पना है। मूल आवृत्ति आधार तो जन्म पराग नीति का अखबार पूर्णांक है, अर्थात अंगों की स्वर धातु महत्ता ही एहसास गति की आवृत्ति नीति होती है।

वृताकार परमाकार न्याय अंकुरण चेतना में स्थापित ध्वनित आवश्यकता का मूल प्रकाश ही जन्म मृत्यु का धातु रूप लेता रहा, उद्यमी विश्व अंकुरित मेधा बनाई गई, जिसमें प्रकाश ध्वनि गंधानकन ही रस मात्रा विलयन का संकुचित पात्र रूप लेता रहा। अखबार विज्ञान से ध्वनित ऊष्मा का मूल प्रकाश ही जन्म व्यूह में परिवर्तित हो गया, जिसमें आकाशगंगा की मूल तत्व पालिका ही पदार्थ मूल के योजन ग्रह में उपस्थित एहसास का आत्मा वन रोपित करने लगी, जिसमें अखबार विज्ञान का मोती सागर वेद ही न्याय अंकुरित प्रयत्न का मूलांक प्राप्तांक बन गया।

मोती	सागर	वेद	सन्देश	ख़बर	एहसास	क्रिया	अंग
ग्रह	ज्योति	प्रतीक्षा	संसार	समय	पारा	मिलान	निद्रा
गृह	दिवार	अंधकार	चतुर्भुज	नाड़ी	लावण्यता	संलयन	जाग्रति
तारा	तापमान	नियति	त्रिभुज	धड़कन	क्षअरियता	विखंडन	गति
आकाशगंगा	रहस्य	भाग्य	वृत्त	स्वशन	अम्लीयता	विलयन	वेग
सूर्य	धातु	साहस	रेखा	सुर	ठोस्ता	गुंजन	दबाव
चंद्रमा	तत्व	इछाशक्ति	बिंदु	असुर	तरलता	प्रतिलिपि	उत्तर
मानव	मात्रा	इंधन	मृदा	रात्रि	गैस अणु	स्याही	पूर्व
जन्तु	चुनाव	गर्भशाला	जल	दिवस	चट्टान	जन्म	दक्षिण
पक्षी	प्रतिलिपि	कर्म वैभव	अग्नि	सायंकाल	वायु प्रकार	मृत्यु	पछिम
वृक्ष	वृष्टि	निजी संपत्ति	ऊष्मा	प्रभातकाल	वायु आकार	रंग क्रिया	न्याय
प्रकाश	खनिज	स्वर भाव	बीज	वस्त्र	वायु आधार	लिफाफा	कर्म
ध्वनी	प्रकृति	धुन प्राण	गुणफल	धागा	वायु संसार	व्यवहार	अधिकार
रश्मि	प्रवृति	जलवायु	भागफल	भोजन	विद्युता	मूलाधार	सम्बन्ध
पात्र	स्वभाव	आत्मा	लाभांश	फल	चुम्बकीयता	रस अंकुरण	संस्करण
स्तूप	नीति	मन	भाजक	पराग	गुरुत्वाकर्षण	भट्टी शाला	उत्साह

पृथ्वी **मंगल** **चन्द्रमा** **सूर्य** **आदि अंत**

संदेश बनाया की अंतिम अंत ही मूल आरंभ का पराग है, जो मंगल है वही पृथ्वी का राग है, इसी प्रकार सूर्य चंद्रमा का भाग है अपितु चंद्रमा में सूर्य का आदि अंत विज्ञान होना ही, सजीवता में निर्जीविता का भाग है।

अर्थात ग्रह रूपी मोती ज्योति रूपी सागर बनाकर प्रतीक्षा के वेद से संसार के संदेश में समय की खबर का पारा एहसास मिलान क्रिया रूप में करता है, जहां से अंग मात्रा की निद्रा अवस्था ही अखबार विज्ञान बन जाती है।

गृह मोती की दीवार के सागर में अंधकार का वेद चतुर्भुजीय संदेश की नाड़ी खबर बनाता है, जिसमें लावणयता का एहसास संलयन क्रिया निहित, अंग जागृति को अखबार विज्ञान बनाता है।

तारा रूपी मोती तापमान के सागर से नियति वेद निहित त्रिभुज संदेश का धड़कन खबर क्षारीय एहसास बनाकर, विखंडन की क्रिया को अंग गति के रूप में अखबार विज्ञान बनाता है।

आकाशगंगा का मोती रहस्यमई सागर में भाग्यवेद का वृत्त संदेश बनाकर श्वसन की खबर से अम्लीय एहसास में विलयन क्रिया का अंग वेग बनाता है, जिसमें स्वशन ही अखबार विज्ञान बन जाता है।

सूर्य मोती का धातु सागर साहस वेद के रेखा संदेश में सुर खबर के ठोस एहसास को गुंजन क्रिया का अंग दबाव बनाते हुए धातु रेखा को अखबार विज्ञान बनाता है।

चंद्रमा मोती का तत्व सागर इच्छा शक्ति के वेद से बिंदु संदेश में असुर खबर की तरलतम एहसास प्रतिलिपि क्रिया को उत्तरी अंग का अखबार विज्ञान बनाता है।

मानव मोती का मात्रा सागर ईंधन वेद के मृदा संदेश में रात्रि खबर के गैसीय अणु एहसास में स्याही क्रिया से पूर्व अंग को अखबार विज्ञान बनाता है।

जंतु मोती चुनाव सागर में गर्भशाला वेद से जल निवेश की दिवस खबर को चट्टान रूपी एहसास में जन्म क्रिया का दक्षिण अंग अखबार विज्ञान बनाता है।

पक्षी मोती प्रतिलिपि सागर में कर्म वैभव के वेद से अग्नि संदेश का सायंकाल खबर विलयी वायु प्रकार एहसास ही मृत्यु क्रिया में पश्चिम अंग अख़बार विज्ञान बनाता है।

वृक्ष मोती वृष्टि सागर में निजी संपत्ति के वेद में ऊष्मा संदेश को प्रभात काल खबर बनाकर वायु आकार के एहसास को रंग क्रिया का न्याय अंग रूपी अखबार विज्ञान बनाता है।

प्रकाश मोती खनिज सागर से स्वभाव के वेद में बीज़ संदेश को वस्त्र खबर बनाकर वायु आधार के एहसास में लिफाफा क्रिया के कर्म अंग को अखबार विज्ञान बनाता है।

ध्वनि मोती प्रकृति सागर से धुन प्राण वेद के गुण फल संदेश को धागा खबर का वायु संसार एहसास बनाकर व्यवहार क्रिया के अंग अधिकार को अखबार विज्ञान बनाता है।

रश्मि मोती प्रवृत्ति सागर से जलवायु वेद को भागफल संदेश बनाकर भोजन खबर की एहसास विद्युता को मूलाधार क्रिया में अखबार विज्ञान का अंग सम्बन्ध बनाता है।

पात्र मोती स्वभाव सागर से आत्मा वेद बनाकर लाभांश संदेश में फल की खबर के चुंबकीय एहसास को रंग अंकुरण क्रिया का अंग संस्करण अखबार विज्ञान बनाता है।

स्तूप मोती नीति सागर से मन के वेद में भाजक संदेश की पराग खबर का गुरुत्वाकर्षण एहसास बनकर भट्टी शाला क्रिया के अंग उत्साह को अखबार विज्ञान बनाता है।

अर्थात चपलता कर्कशता कार्यभूमि की संचालक व्यावहारिक निष्ठा नहीं होती अपितु दृश्यलीन विद्युता में सम्बन्ध वादी मोती शाला की वैदिक व्यूह निति ही सागर पक्ष के

स्वभाविक वेग को भी चुंबकीय ऊर्जा का आदानप्रदान वेद बनाती है। इसी आदान-प्रदान में सांसारिक विषय की तत्त्व नाड़ी का पदार्थ चयन ही अखबार विज्ञान की वेशभूषा बन जाती है। अर्थात अशोक खनिजता की बाहय रासायनिकता के आंतरिक पूर्णिमा की मूल धातु ध्वनि व्यावहारिक पारा यात्रा को अखबार विज्ञान कहते हैं। प्रकृति की रस माहवारी नहीं होती, प्रकृति में रस मुद्रा ही जनक जननी अवसाद को पकाकर मिटा देती है। प्रकृति का रस व्यूह ही प्रत्येक धागे की नीरसता को मिटा देता है, जिस विज्ञान का चयन ही मूल भाव में खनिज रूप का प्रेरक होता है, उसी भाव के चयन में इच्छा भागफल की ईंधन पूर्ति को स्वाभाविक खबर का मूल पारा पात्र प्राप्तांक बना दिया जाता है।

चयन की निर्भरता में वास्तु कोष के उपकारिता का नियम बनाकर रस व्यूह की त्यागी उत्तेजना को तर्पण दर्पण व्यवसाय कहा गया, संबंधवादी चुनाव की रस महत्ता से जीवन संदेश की तथ्यता के प्रलय निष्कर्ष को कथा वाचक प्राणवायु हृदय सूर्योदय कहा गया, अपितु प्रकृति का संदेश तारतम इतना ठोस है कि किसी भी अवस्था का एक अवस्था में प्रत्येक अवस्था के लिए शून्य हो जाना ही ब्रह्मांडीय गति को तापमान बनाता है, जिसमें धुरी वाचक प्रमेयको का घड़ी नाड़ी तारामंडल भी इच्छा अनुसार ही ईंधन की खबर को मूल धड़कन का अखबार बनाता है।

अर्थात प्रकृति के अनुसार अखबार का नियम कहता है -

"आज का गुण ही कल का उत्तर है, इसलिए आने वाले कल का गुण ही आज का भाव होगा, जिसमें पदार्थ की निजी इच्छा का निर्जीव गुण ही भाव बनाने वाली सजीवता का सर्वमान्य उत्तर होगा, जिसमें आज का उत्तर ही कल की पदार्थ अवस्था का इच्छा मूल संदेश होगा, जहां से निर्जीविता का अखबार ही सजीवता के लिए निजी इच्छा का मूल समय प्रबल तत्व गुण होगा।"

अर्थात सबलता एवं निर्बलता से परे प्रकृति की रसयोजन महत्ता तो चार दिवारी का सपना नहीं बनती है प्रकृति तो विधान विधि विद्युत वात निर्वात समय प्रवृत्ति मानचित्र है, जो तरंगों की आवृत्ति से टांकरी चुंबकीयता निहित एहसास को ही संदेश बनाती है।

अर्थात प्रकृति का अखबार विज्ञान कहता है -

जब

ठोस पदार्थ प्लस तरल पदार्थ प्लस गैसीय पदार्थ बराबर शून्य एहसास

तब

तत्व की ठोसता में रासायनिक तरलता का गंधीय गैस वर्ण ही अशून्य होकर,मूल तरंगीय टंकार को शीतल तापमान विस्तार में ध्वनित मार्ग का तरंगीय अखबार बना देता है।

अन्तरिक्ष	मोती	नभ	वेद	भूमि	मोती	धरा	वेद	बीज	मोती	पाताल	वेद	गर्भ
इलेक्ट्रान प्रमेय	सागर	प्रोटोन सूत्र	सागर	न्यूट्रॉन धातु	सागर	शून्य पात्र	सागर	अशून्य धुरी	सागर	उर्जा स्तूप	सागर	तापमान विद्युता
चुम्बक वन		धागा जड़		भाव चेतना		समय पारा		पात्र पराग		यात्रा ध्वनी		
जीवन चंद्रमा		जीवन सूर्य		जीवन ग्रह		जीवन रस		जीवन गंध				
इंधन		इच्छा		प्रकाश		मृदा						
स्वशन		धड़कन		नाड़ी								
सन्देश		ख़बर										
अख़बार विज्ञान												
इलेक्ट्रान इलेक्ट्रान मिलान												

अर्थात इलेक्ट्रान को इलेक्ट्रान में मिलाकर, इलेक्ट्रान बनाते हुए, इलेक्ट्रान की कमी में, इलेक्ट्रान को पूर्ण करने हेतु, इलेक्ट्रान की यात्रा को ही प्रोटोन और न्यूट्रॉन की यात्रा बनाने वाले अणु संचारी आयाम -व्यवहार को अख़बार विज्ञान कहते हैं।

हर हश्र के अजूबे से आगे जज्बातों की कालीन बिछाकर जमाने का ताँता बनाया गया, अलबत्ता इंसानी कौम को इस अजायब ए तस्वीर की जमानत का फैसला समझ नहीं आया कि हर तस्वीर का कायदा ही आसमानी रुतबे का मैल था, जिसमें नूरी चश्मा तो सिर्फ आसमानी जसबातों का खेल था, जो वाकिफ ए दौर का चांद था वही हयात ए पर्चों का जमीर निकला, जिसने पारे की बूंद का वजन मांगा वही हर हश्र ए बुनियाद की तासीर का कांटा निकला, तजुर्बे की वजन बाजी से आगे हर ईमानदारी का लोहा तोला गया, जिसने लोहा दिखाया वही वजन बनाने वाला पहला पर्दा निकला, कुदरत की हम नाशिनी में हवाई रह गुज़र का ताम झाम तो सिलसिलेवार कहानियों का पानी ए मोदसा है बताने वाले ही कौमी जानवर निकले, जिनका पहला हथियार ही जंग दिखाने वाला नकली जेवर निकला, कुदरत का पहला जमाना ही हवाई अखबार निकला, इसलिए कुदरत से ही पहला पारा हवाई खबर का वार निकला। अब हर तय रास्ते की तरकीब में तबज़्ज़ो देने वाले ज़मानती हकीमो का स्याही दान मिटाया जा रहा, दुनिया उस मोड पर है जहां से इलाज करने वाला ही

मर्ज बना रहा, जिसमें पहल हकीम ही वायदों की नसों को चुराने वाला खानदानी पेशेवर चोर निकला, अखबार का पहला पन्ना साफ़ दिखा रहा कि ज़िरह करने वाला जुबानी वकील ही हजरत ए तोहीन करने वाला मायूस दरख़्त निकला।

हर तरफ की पेशगी महक ए जमीन से आगे हवाई ताज का पर्दा बना रही, जिहानी वसीयतों की दवाइयां ही इंसानी खजाने का जुनून मिटा रही, कुदरत में उस खेल का ईज़ाद हो गया, जिससे मिट्टी ही बारूद बना रही, तालबदार अब वजन बनाने के हौसले से बाहर है, जो तलब ही खून बना रही, अख़बार की नदियां स्याही लगाने से इंकार कर रहीं, जो कलम ही बू बना रही, हर जज़्बात का फैसला आने वाला है कुदरत मकान ए वारिस को रूही अखबार बना रही, तजुर्बा चाभियों से नहीं तालों से वाकिफ है इसलिए मिट्टी खुद ही धागों का जाल बना रही।

मुकाम आने वाले दौर में एक ही शहिश्त दोहराएगा इंसान की फिक्र इंसान को भी नहीं कौन अखबार का वजूद दिखाएगा, जो एक मर्तबा सिरहाने से कलम की बोतल ही टूट गई तो कौन बचेगा जो खबर पर अपनी हकीकत दोहराएगा, रूह की नीलामी होना सपना है, अब बदन खुद ही शिनाख़्त ए वसीयत छपवाएगा।

The letter of ordinance in the jurisdiction of penalty masters is the alarming chaos of worldwide technology where the newspaper regime of artificial intelligence will always create the final purpose of mentality as the glue germination of fake humanity .

तत्व ही सत्य है

परिवर्तन ही जीवन का रस है ईंधन है, समय की गतिमान अवस्था का अंकन करती सजीव क्रिया है । जहां ठहराव होगा रूढ़िवादी- स्थाई वादी अवस्था होगी वहां जीवन का मलबा होगा, जो जीवन के निर्मल अवस्था का नहीं अपितु अनेकों प्रकार के विकृतियों का स्वामी बना देगी, इन्हीं विकृतियों को मिटाती है जीवन विकास क्रिया अर्थात इवोल्यूशन यह हम कह सकते हैं क्रम विकास की प्रक्रिया ।

सुमनलता

प्रथम ऊर्जा क्रिया के इच्छा कंण अंणु विस्फोटन से जिस कंण अंणु ऊर्जा तत्वता का विस्तार एवं अंकुरण हुआ उसे सजीवता के भुगोलिया मृदा मंडल के रूप में स्थापित कर जीवंत जीवन देने की प्रकाश प्रक्रिया है बिजतत्व क्रिया यानी तत्व की सिद्धांत अवस्था, ऊर्जा का वह अनंत विज्ञान जो यदि ब्रह्मांड में सिद्धांत गुण प्रकाश की यात्रा का अनंत विज्ञान विस्तार ना होता तो ब्रह्मांड में पदार्थ की क्रिया ही नहीं होती सजीवता की उत्पत्ति ही नहीं होती, निर्जीवता में व्याप्त जो निर्वात मंडल में मौजूद प्रदूषण या यूं कहे कि ठहराव की वह मात्रा जहां से खंड विज्ञान अपूर्ण विज्ञान शेष विज्ञान अतृप्त विज्ञान शासन विज्ञान किसी ना किसी रूप में मौजूद थे उनका आकार रूप एवं स्वरूप ही अपने आकार प्रकार को धारण नहीं कर पाते। ब्रह्मांड परमाणु ऊर्जा की गतिमान अनंत ऊर्जा प्रवाह का विज्ञान है जहां हर एक कंण, प्रत्येक ब्रह्मांड ऊर्जा,प्रत्येक नवीन उत्पत्ति या ग्रह नक्षत्र तारामंडल एवं समस्त खगोलीय संसार इसी अनंत ब्रह्मांड परमाणु ऊर्जा के गतिमान परिणाम है जो अपनी उर्जा अवस्था की यात्रा करते हैं अपने अंणु तृप्ति के अंत तृप्ति तक करते है, अर्थात जब अवस्था का गतिमान होकर अपने वजूद के सिद्धांत शिखर के अंतिम तृप्त कोष तक जाना और पूर्णता तृप्त होकर अनंत प्रकृति ब्रम्हांड उर्जा में विलीन हो जाना, ऊर्जा की वह क्रिया है जहां यात्रा के गतिमान श्रृंखला में प्रदूषण मिटते जाते हैं और सत तत्व जो ऊर्जा की मूल बीज मंडल के होते हैं वह प्रकाश बनकर प्रकृति में विलीन हो जाते हैं। इसे प्रक्रिया में घटने वाली प्राकृतिक घटना है evolution या क्रम विकास की क्रिया। यानी हर पल गतिमान समय की एक ऐसी क्रिया जो बदलाव के रस पर चलती है, समय से समय में समय के साथ चलते रहने की जीवन प्रणाली है इवोल्यूशन। जहां तत्व की सत्यता उभर कर आती है स्वयं को अभिव्यक्त करती है अपनी अवस्था को पूर्ण करती है और अनंत अंत में विलन हो कर प्रकृति बन जाती है।

परिवर्तन ही जीवन का रस है ईंधन है, समय की गतिमान अवस्था का अंकन करती संजीव क्रिया है । जहां ठहराव होगा रूढ़िवादी – स्थाई वादी अवस्था होगी वहां जीवन का मलबा होगा, जो जीवन के निर्मल अवस्था का नहीं अपितु अनेकों प्रकार के विकृतियों का स्वामी

बना देगी, इन्हीं विकृतियों को मिटाती है जीवन विकास क्रिया अर्थात इवोल्यूशन यह हम कह सकते हैं क्रम विकास की प्रक्रिया । परिवर्तन को स्वीकार कर आगे बढ़ते रहना ही जीवन का मूल रहस्य है, इवोल्यूशन तो प्रकृति के निरंतर गतिमान रहने वाली प्राकृतिक प्रक्रिया है एक वैज्ञानिक practical जीवन जहां संजीता ही नहीं निर्जीवता का भी बराबर का योगदान है कि किस प्रकार सजीव एवं निर्जीव में डायरेक्ट सम्बन्ध है। the continue motion of electron in the time loop their time is in the form of square root radiating its effect on both the factors of abiotic and biotic where the boundary of ecosystem created between the a biotic and biotic factors and system is the boundary of niche where the life exist in that boundary of niche .evolution is not limited to a particular niche or only statistically defined species or an analytical science evolution is the most unique metamorphosis state of nature where uniquely and ambiguously every state every dimension evolve both molecularly and electronically leading to vast variations of discoveries in all the possible expressive ways and each dimension each discovery denote the peak note or we can say the each energy of that particular timeline . The timeline is the scale which defines the quality and quantity within the habitat that how each individual played an vital role anyone of them starts diminishing the result in seen in the whole ecosystem which shows that how sajeev and nirjeev tatv are interconnected with each other. यह उद्भव की क्रिया प्रारंभ होती है इलेक्ट्रॉनिक वाइब्रेशन से इलेक्ट्रॉनिक वाइब्रेशन उत्पन्न होते हैं और तब आपको उत्पन्न करती है या तप तप प्रभावित होते हैं सजीवता और निर्जीविता के आपसे भोगवादी उपयोग प्रयोग योग क्रिया से, पूजा को प्रक्षेपित करती है इलेक्ट्रॉन की घनत्व पर पड़ता है यानी अनु के + Ve and - ve आवृत्ति पर जो परमाणु एवं अनु की क्रिया में महत्वपूर्ण अग्रिम क्रिया आरंभ होती है

क्रम विकास यह साधारण परिभाषा में अभिव्यक्त करें परिवर्तन हर संभावित आयाम में अनेकों रूपों स्वरूप में अभिव्यक्त होते है, जैसे की मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक, शारीरिक, वैचारिक, व्यक्तिगत अर्थात की समस्याएं ग्राम विकास के ही अंग है जिसे जलवायु विज्ञान उत्पन्न प्रभावित एवं सक्रिय होकर साकार एहसास करते है। स्वयं के ही गंध

परिवर्तन को स्वीकार कर आगे बढ़ते रहना ही जीवन का मूल रहस्य है, इवोल्यूशन तो प्रकृति के निरंतर गतिमान रहने वाली प्राकृतिक प्रक्रिया है एक वैज्ञानिक practical जीवन जहां संजीता ही नहीं निर्जीवता का भी बराबर का योगदान है कि किस प्रकार सजीव एवं निर्जीव में डायरेक्ट सम्बन्ध है।

निधि की पॉजिटिव और नेगेटिव साइकिल की फ्रीक्वेंसी से उत्पन्न होती है मानवीय वैज्ञानिक भाषा में यदि अभिव्यक्त करें तो जिस प्रकार की ऊर्जा जीव अपने एग्जाम तंत्र में उत्पन्न करते हैं उसी प्रकार की कोडिंग हो जाती है जो फिर इस विषय विशेष के लिए ही कार्य करेगी तब तक जब तक उसे विषय विशेष की मौजूदगी अनिवार्य होगी जैसे कि धारण के तौर पर मानव में अकल की दांत का होना जो इस बात को दर्शाती है कि मानव किस प्रकार कुदरत परिवर्तन के क्रम विकास में विकसित होता चला गया जैसे जैसे विकास हुए वैसे-वैसे आवश्यकता भी घटती चली गई । अब इस प्रक्रिया में केवल मानव ही नहीं अन्य समस्त जीव भी बदलते परिवेश में परिवर्तित हुए हैं लेकिन क्योंकि मानव अधिक विकसित प्रजाति है तो क्रम विकास की क्रिया में मानव केवल शारीरिक रूप से ही नहीं विकसित हुआ बल्कि मानसिक,बौद्धिक,चारित्रिक,व्यक्तिगत, वैचारिक एवं सामाजिक रूप से भी विकसित हुआ अर्थात जब-जब ठहराव की अवस्था उत्पन्न हुई तब तब प्रकृति हर अवस्था को चरम सीमा तक ले गई जहां से स्वत वह अवस्थाएं, विज्ञान, जीव सजीव मिटते चले गए जिनका वजूद बदलते परिवेश में स्वयं को नहीं ढाल पाए या ताप दाब को नहीं बर्दाश्त कर पाए, और ऊर्जा की यह क्रिया निरंतर गतिमान रहने वाली क्रिया है। तत्व ही सत्य है जो जीवन के रूप में मौजूद प्राकृतिक न्याय करते है।

अवस्था या उर्जा का विस्फोटक किसी शैतानी हरकत के कारण या कोई आप्राकृतिक क्रिया के कारण नहीं हुआ अपितु इच्छा या प्रदूषण ही सजीवता के वजूद के स्वसन इंधन है। ब्रह्मांड की इस अनंत ऊर्जा यात्रा में हर एक क्रिया हर एक घटना गतिमान है तभी तो उनमें उर्जा का निवास है और वह अपने गुण का ब्रह्मांड विस्तार करते हैं जो वैज्ञानिक प्रयोगों एवं रसायन शास्त्र के दृष्टिकोण से भी देखें तो

"every single smallest atomic particle is in continue motion on its orbital pathway and in its own energy shell resulting in the generation of energy in the form of vibrational energy, this continue form of moving motion is the energy of existence, generating power, every atomic particle that is electron proton neutron is a continuously moving atomic charged particle theory in which electrons continual vibrational energy produces various forms of energy be it kinetic energy

potential energy heat energy chemical energy aroma energy nuclear energy etc"

ऊर्जा के सूक्ष्मतम अंणु कंण की इकाई ऊर्जा के गतिमान इंधन का संसार है, जिससे तत्व पदार्थों का निर्माण होता है विस्तार होता है, तो भला सजीवता का विज्ञान कैसे ठहराव ले सकता है जब गतिमान जीवन ही सजीवता कि यात्रा है उसे परिपक्व करने की सिद्धांत प्रणाली है । सजीवता की उत्पत्ति या ठहराव लिए हुए कंण रसायन के ऊर्जा गंध मंडल में यह विज्ञान बना लिया की यदि कोई उस पे शासन करना चाहेगा उसे मरना चाहेगा तो वह तो भाग भी नहीं पाएगा, भूगोल से स्वयं को विकलांग बना कर आंतरिक रसायनिक मंडल से भागने एवं स्वयं को बचाने के भय में जिस इच्छा की इंधन कला का मवाद भय वादी रिसाव हुआ वही पहला क्रीट बना जिसने भोग वादी सजीवता की उत्पत्ति का कारक बना, एवं उस मैं शासन का भाव भय लाकर रिक्त स्थान का खंड करने वाला कंण पहला भय जनेऊ बना जिसने शासन वादी अहंकारी अर्ध मृत्यु दल रूपी सजीवता की इच्छा फिर मृत्यु फिर उत्पत्ति इच्छा फिर उत्पत्ति पुनः इच्छा पुनः मृत्यु की ऐसी श्रृंखला की उत्पत्ति की जिससे सजीवता की जो गतिमान प्राकृतिक ब्रह्मांड यात्रा का मूल मार्ग था की इच्छा वजूद को गुण विस्तार उर्जा भोग से भोग कर तृप्त होकर सिद्धांतों कर ब्रह्मांड की प्राकृतिक गतिमान अनंत यात्रा में विलीन हो जाना परंतु जब सजीवता के किसी एक कंण भाग में शासन करने की इच्छा उत्पन्न हुई तो इस इच्छा का विज्ञान संपूर्ण सजीवता के विज्ञान को प्रभावित करेगा क्योंकि प्रदूषण तो संपूर्ण सजीव ता में मिलान कर गए, अर्थात निर्जीवता में सजीवता की जो यात्रा आरम्भ हुई थी जिसे निर्जीव ऊर्जा में ही पुनः विलीन होकर प्रकृति यात्रा करनी थी वह अवस्था या वह विज्ञान जब शासन के नवाद मवाद ठहराव में ठहर कर उर्जा को एकत्रित करने का विज्ञान बनाने लगे जिससे सजीवता की मवाद अवस्था का गर्भ फूलने लगा, अब क्योंकि प्रत्येक जीव, प्रत्येक कंण,प्रत्येक अवस्था मृदा भूगोल आंतरिक प्रकाश के सूर्य सिद्धांत ऊर्जा से गतिमान है तो फूलती मवाद सजीव अवस्था जब प्रकाश सिद्धांत से रसायनिक सूर्य प्रकाश अभिक्रिया करती रही जिसके परिणाम में जिस तत्व की गंधीय ऊर्जा विज्ञान की प्राप्ति हुई उसने इच्छा की जो बखारी आदि विज्ञान खंड में संरक्षित थी उसे पकाने का इंधन शेष परिपक्वता के विज्ञान से परिपक्व कर मिटाने की क्रिया आरंभ कर दी, अर्थात इच्छा भी एक गतिमान प्रणाली है ठहराव का जलाशय या ठहरी हुई तत्व की बखारी नहीं है इच्छा ।

जब किसी कंण सजीव निर्जीव ने ठहराव की अवस्था का ऊर्जा विज्ञान रिसाव हुआ वहां वह जलाशय बन जाता है जो भौतिक भूगोल सजीवता का कारक बनते हैं जो पूर्णता प्राकृतिक क्रिया है क्योंकि रसायनिक उर्जा मंडल में इच्छा की जो ठोस यात्रा थी वह जब अपने यात्रा काल में ठहर गई तो तत्व का विज्ञान तरल हो गया जो भूगोल स्वरूप में जल बन कर सजीव उत्पत्ति का आधार बने, अब अब बात यहां समझने वाली यह है कि भूगोल भोग वादी सजीव उत्पत्ति ठहरी हुई प्रणाली है जिसके लिए उसे शरीर मृदा भूगोल भौतिक स्वरूप धारण करना अनिवार्य था तभी इच्छा की तरल अवस्था पुनः ठोस होकर अपनी यात्रा करते एवं एक अवस्था है निर्जीव सजीव कि जो अपने गुण का ऊर्जा विस्तार करते हुए अपने पूर्णता तक तृप्त होकर विस्फोटक हो जाते हैं उदाहरण में ऐसे अनेकों खगोलीय घटनाएं हैं जहां प्रति पल किसी ना किसी नक्षत्र या तारामंडल की उत्पत्ति भी होती है और अंत भी होता है सजीव वह भी है गतिमान विज्ञान में भी है परंतु उनकी अवस्था निर्जीव है इसीलिए उनकी अवस्था ठोस से ठोस की यात्रा कर बिना भूगोल स्वरूप को धारण किए अपनी उर्जा की अनंत यात्रा करते हैं तात्पर्य यह है कि प्रकृति सिद्धांत की व प्रकाश प्रणाली है जो सिद्धांत के गुण का ही विस्तार करती है तो प्रकृति की प्रकाश सूर्य रश्मि की ऊर्जा क्रिया जिस भी ठहरे इच्छा जलाशय से अभिक्रिया करेगी तो परिणाम क्या आएगा यह पूर्व निर्धारित क्रिया नहीं है परिणाम की प्रवृत्ति क्या होगी यह इच्छा जलाशय के मूल बीज गुण के रासायनिक उर्जा मंडल पर निर्भर करती है। इच्छा को परिपक्व सिद्धांत उसे परिणाम के गंतव्य तक उभारना परिपक्व करना पकाना उसे सिद्धांत मिटाना प्रकृति की प्राकृतिक उर्जा संतुलन क्रिया है। जिसमें ना ही कुछ सही है और ना ही कुछ गलत है ना धर्म है और ना ही धर्म है अपितु गुण का वह विस्तारीकरण है जिससे प्रकृति ठहरी हुई इच्छा प्रणाली के प्रदूषण को मिटाने की क्रिया करती है।

भूगोल मृदा धारी सजीव हो या निर्जीव सजीव निर्जीवता दोनों की मूल बीज ऊर्जा विज्ञान की सूर्य परमाणु क्रिया है उनके गतिमान उत्पत्ति के कारक है। प्रदूषण का मवाद तो भूगोल मृदा धारी सजीव का तरल अंश है जिसमें इच्छा की ठोस अवस्था सदैव ही तरल रहे के लिए मृत्यु खंड विज्ञान सक्रिय हो गया अर्थात जिस प्रथम इच्छा से उत्पत्ति हुई थी वह अभी पूर्णता के मध्य में भी नहीं पहुंची थी की उसके भूगोल को मृत्यु खंड से तोड़ दिया गया परंतु रसायनिक अवस्था तो सक्रिय थी जहां किसी भी मंडल का कोई हस्तक्षेप संभव नहीं है वह अवस्था प्रकृति द्वारा गतिमान सूर्य सिद्धांत अनंत प्रकाश से अभिक्रिया कर अपनी अतृप्त यात्रा को पूर्ण करने के लिए फिर से जन्म लेती है किंतु शासन का लालच इच्छा की लालची लालसा में मानव ही एकमात्र ऐसा ब्रह्मांड प्रकृति भूगोल निकला जिसने इच्छा का जितना ही विखंडन किया है पुनः उतना ही पूरा निर्माण किया है, इच्छा के लालची शासन लालसा में फिर से नहीं अच्छा बना लेते हैं अभी पीछे की प्रदूषण इच्छा पूर्ण ही नहीं हुई थी कि फिर से नहीं अच्छा की उत्पत्ति फिर मृत्यु फिर जन्म इस इच्छा भोग की साइक्लिक क्रिया में मानव भूगोल ने अपने गतिमान विज्ञान के पारा कोश में इतने कच्चे हर इच्छा के मवाद बना लिए कि जब उसकी अवस्था असंतुलित होकर आगे की ओर हल्का

होकर गिरने के बजाय पीछे की ओर गिरने लगी तब जिस अवस्था की प्राकृतिक पारा प्रक्रिया की क्रिया सक्रिय होकर मानव के इस इच्छा असंतुलित भार विज्ञान में शेषता के अंश को बचा लेने की क्रिया चल रही थी,उसे मिटाने वाला शेष परम अंणु इच्छा भार सूर्य विस्फोट की आंतरिक भक्षण करने वाली प्रकृति की वह शेष परम पारा नाभिकीय क्रिया सक्रिय हो गई जो शारीरिक इच्छा भोग माध्यम से नहीं अपितु आंतरिक इच्छा भोग से प्रदूषण को मिटाने की अंणु कोष ठोस क्रिया आरंभ हो गई, अर्थात भूगोल माध्यम से नहीं अपनी आंतरिक माध्यम से ठोस करने की वर्क रिया की मृत्यु जिस भी आयु में होगी वह अतिरिक्त या अपूर्ण नहीं होगी जैसा अभी तक चलता रहा था कि कच्ची आयु में मृत्यु कर रसायनिक तरलता को जीवित रखने की क्रिया चल रही थी, यह क्रिया भी किसी राक्षसी मंडल द्वारा संचालित या अप्राकृतिक प्रकृति विरुद्ध विपरीत क्रिया नहीं थी क्योंकि इस विज्ञान की सक्रियता से वह प्रथम इच्छा तरल निर्माणक प्रकृति में उभरे जो रसायनिक तरलता के बाद से प्रकृति प्रदूषण शासन का रोग बनाकर स्वयं को प्रकृति समझने की अहंकारी मूर्खता कर बैठे थे उनके संपूर्ण उभार होते ही प्रकृति में आंतरिक ठोस रसायनिक क्रिया का पारा विज्ञान सक्रिय हो गया।

किसी भी अवस्था को पूर्ण करने के लिए ही किसी भी घटना चक्र का निर्माण होता है जिसमें किसी भी सही गलत ज्ञान अज्ञान धर्म अधर्म की कोई व्यवस्था नहीं है, जिस प्रकार के गुण तत्व का बीज रसायनिक मंडल होता है उसी प्रकार की क्रिया जी वृद्धा के साथ घटती है जो जीव के ही तरल को ठोस करने की प्रकृति की एक प्रक्रिया है। जीव के गुण और स्वभाव के विपरीत कोई भी घटना नहीं घटती है, किसी भी अवस्था का प्रवेश तब तक स्वयं के भीतर नहीं हो सकता, जब तक कि स्वयं की मृदा भूमि उस अवस्था को स्वीकार ना करें ईश्वर भी या राक्षस भी स्वयं मृदा स्वीकृति के बिना स्वयं के रसायन इच्छा भूगोल में प्रवेश नहीं कर सकते हैं तो कोई भी घटना घटती है वह जीव के गुण परमाणु तत्व के रसायनिक गुण परिणाम के तहत ही घटती है अब इस छोटे से नेत्र से संपूर्ण ब्रह्मांड को दिखाने वाली प्रकृति इतनी महान है कि जिसके प्रत्येक अवस्था को सहज और सरल बनाने की प्रक्रिया करती है, जटिल उसे इंसान की शोषण वादी सासन कारी दिमागी भोग वादी प्रणाली की लालची प्रवृत्ति बनाती है, कि उसे स्वयं को विजय राजा या शासक बन कर ही देखना है जबकि प्रकृति तो उसे ऐसे ही विजय बना चुकी है उसे सजीव भूगोल उत्पत्ति का आकार देकर ताकि अपनी भूख अवस्था को पूर्ण करें वरना ब्रह्मांड में ऐसे ही विचरण करते रह जाते और कभी अपनी अवस्था को पूर्ण नहीं कर पाते तो इंधन वजूद तो वैसे ही विजेता हुई फिर कैसी प्रतिस्पर्धा या कौन सही,कौन गलत,क्या धर्म और क्या अधर्म जब हर कोई प्रत्येक जीव अपनी गुण की ही यात्रा कर रहे हैं और हर किसी की यात्रा एक दूसरे से भिन्न है प्रभावित होकर प्रभावित करके अपनी यात्रा का मार्ग मोड़ लेना स्वयं के अंदर मवाद रुपी प्रदूषण की तरलता को भूमि देना है क्योंकि प्रत्येक जीव ब्रह्मांड में एक स्वतंत्र प्रणाली है जिनकी गुण कला स्वयं में इतनी सक्षम है कि अपने विज्ञान का विस्तार कर प्रकृति में ठोस अवस्था का निर्माण कर अनंत यात्री बन सकते हैं और प्रत्येक जीव प्रत्येक तत्व प्रत्येक पदार्थ प्रत्येक उर्जा अपने इसी परमाणु संसार की आंतरिक यात्रा को पूर्ण करने की आंतरिक तरल अवस्था की ओर अग्रसर है और अपनी ठोस यात्रा की ही क्रिया कर रहे हैं। क्योंकि परम अशोक कहते हैं कि “समय ही समय की धारा है जो समय से समय के अवस्था को उभरती है समय से समय में रहकर ही अपनी अवस्था को पूर्ण विजय श्री बनाया जा सकता है यानी समय में रहते हुए भी अपनी व्यवस्था की स्वतंत्र यात्रा को जीना ही पूर्ण जीवन आनंद क्रिया है।”

भारतीय वायुसेना के गौरव और नये युग के सेनापति

प्रकृति मेल डेस्क

ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला भारतीय वायुसेना के उन अद्वितीय अधिकारियों में से हैं जिन्होंने अपने समर्पण, साहस, तकनीकी दक्षता और असाधारण नेतृत्व के माध्यम से देश की सुरक्षा और गौरव को नई ऊंचाइयों तक पहुँचाया है। उनका जीवन केवल सैन्य सेवा का उदाहरण नहीं, बल्कि आत्मानुशासन, राष्ट्रभक्ति और श्रेष्ठता की मिसाल है। उनके व्यक्तित्व में ऐसा संतुलन है जो सैन्य पराक्रम के साथ-साथ मानवीय गुणों का भी प्रतिनिधित्व करता है। वे एक ऐसे सैन्य अधिकारी हैं जिनकी दृष्टि न केवल वर्तमान मिशनों पर केंद्रित है, बल्कि वे भविष्य के युद्धक्षेत्र की चुनौतियों को भी भलीभांति पहचानते हैं और उनके लिए नये समाधान तलाशने की दिशा में भी कार्यरत हैं।

ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला का जन्म उत्तर प्रदेश के एक पारंपरिक लेकिन शिक्षित परिवार में हुआ था। उनका प्रारंभिक जीवन एक साधारण वातावरण में बीता, जहाँ जीवन मूल्य, संस्कार और अनुशासन को अत्यंत महत्त्व दिया जाता था। बचपन से ही वे पढ़ाई में कुशाग्र थे, विशेष रूप से गणित, विज्ञान और तकनीकी विषयों में उनकी विशेष रुचि थी। उन्हें आकाश, विमान और युद्धक रणनीतियों में गहरी दिलचस्पी थी।

ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला

10 अक्टूबर 1985 **जन्म लखनऊ, उत्तर प्रदेश**

भारत के पहले अंतरिक्ष यात्री विंग कमांडर राकेश शर्मा थे, जिन्होंने 1984 में सोवियत संघ के साथ संयुक्त मिशन के तहत अंतरिक्ष की यात्रा की थी। जब भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने उनसे पूछा, "ऊपर से भारत कैसा दिखता है?" तो उनका गर्वपूर्ण उत्तर था – "सारे जहाँ से अच्छा"। उनका यह उत्तर आज भी हर भारतीय के दिल में गर्व की भावना जागृत करता है। हाल ही में ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला ने भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का नाम रोशन किया है, जब उन्हें Axiom Mission-4 के अंतर्गत अंतरिक्ष स्टेशन पर जाने वाले पहले भारतीय के रूप में चयनित किया गया।

इसी रुचि ने उन्हें भारतीय वायुसेना की ओर प्रेरित किया। जब वे किशोर अवस्था में थे, तभी उन्होंने वायुसेना में अधिकारी बनने का संकल्प ले लिया था। उन्होंने न केवल इस लक्ष्य को प्राप्त किया, बल्कि उसमें विशिष्ट स्थान भी अर्जित किया।

शिक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन के बाद उन्होंने राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (NDA) में प्रवेश लिया, जहाँ देश के सर्वश्रेष्ठ युवा उम्मीदवारों को कठोर अनुशासन, युद्धक सिद्धांत और नेतृत्व क्षमता की शिक्षा दी जाती है। तीन वर्षों की कड़ी मेहनत और प्रशिक्षण के बाद उन्होंने एयरफोर्स विंग में अपनी सेवाएं प्रारंभ कीं। इसके पश्चात वे भारतीय वायुसेना अकादमी, डंडीगल गए, जहाँ उन्होंने लड़ाकू पायलट के रूप में उच्च स्तरीय प्रशिक्षण प्राप्त किया। यह प्रशिक्षण शारीरिक सहनशक्ति, मानसिक दृढ़ता, तकनीकी ज्ञान और सामरिक योजना पर आधारित होता है, जिसे उन्होंने उत्कृष्टता से पार किया।

वायुसेना में शामिल होने के बाद उन्होंने विभिन्न प्रकार के विमानों को उड़ाने की विशेषज्ञता प्राप्त की, जिनमें मिग-21, मिराज-2000, तेजस और सुखोई-30 डज्ञप् जैसे आधुनिक लड़ाकू विमान शामिल हैं। उनका उड़ान अनुभव हजारों घंटों का है, जिसमें उन्होंने उच्च ऊंचाई, रात्रिकालीन मिशन, सीमावर्ती निगरानी, युद्ध अभ्यास और वास्तविक युद्ध जैसी परिस्थितियों में सफल संचालन किया। वे उन चुनिंदा अधिकारियों में से हैं जिन्हें सुपरसोनिक विमानों की उड़ान और मल्टी-रोल ऑपरेशनों में विशेषज्ञता प्राप्त है।

ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला ने न केवल प्रशिक्षण और उड़ान संचालन में अपनी क्षमता साबित की, बल्कि सामरिक रणनीति, संकट प्रबंधन और युद्ध कौशल में भी अपने अद्वितीय योगदान से सबका ध्यान आकर्षित किया। भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में उन्होंने कई संवेदनशील मिशनों का नेतृत्व किया, जिनमें

घुसपैठियों की पहचान, आतंकवादी ठिकानों की निगरानी, उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में आपूर्ति ड्रॉप और युद्धाभ्यास शामिल हैं। उन्होंने पूर्वोत्तर भारत में भारतीय सेना और वायुसेना के संयुक्त अभियानों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वे ऐसे मिशनों में भी शामिल रहे हैं जिनकी जानकारी गोपनीय होती है और जिनमें उच्च तकनीकी दक्षता के साथ-साथ निर्णय लेने की तीव्र क्षमता की आवश्यकता होती है।

उनकी उपलब्धियों की सूची अत्यंत लंबी और प्रभावशाली है। उन्होंने भारत द्वारा संचालित अंतरराष्ट्रीय अभ्यासों जैसे कि 'गगन शक्ति' 'वायु शक्ति', 'गरुड़'(फ्रांस के साथ), और 'इंद्र' (रूस के साथ) में नेतृत्वकर्ता या वरिष्ठ पायलट के रूप में भाग लिया है। इन अभ्यासों में भारतीय वायुसेना की रणनीतिक और तकनीकी क्षमता का प्रदर्शन किया जाता है, और ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला ने इन अवसरों का उपयोग न केवल भारत की क्षमता दिखाने के लिए किया, बल्कि विदेशी सेनाओं से मूल्यवान अनुभव भी प्राप्त किया। वे ऐसे अधिकारी हैं जो हर मिशन को सीखने और सुधारने के अवसर के रूप में देखते हैं।

उनकी तकनीकी रुचि और नवाचार की प्रवृत्ति ने उन्हें एक विचारशील नेता बना दिया है। उन्होंने अपने करियर के दौरान कई तकनीकी परियोजनाओं में भाग लिया है, जिनमें उन्नत फ्लाइट सिम्युलेटर विकास, ड्रोन इंटरफेस सिस्टम, और इलेक्ट्रॉनिक वारफेयर टेक्नोलॉजी का एकीकरण प्रमुख हैं। वे भारतीय वायुसेना में डिजिटल सिस्टम के समावेश और नेटवर्क सेंट्रिक ऑपरेशंस

के समर्थक हैं। उन्होंने अपने विचारों से एयरफोर्स के भीतर कई नई पहल की हैं जो आने वाले वर्षों में भारत की रक्षा नीति और एयर ऑपरेशंस में क्रांतिकारी बदलाव लाएंगी।

उनका पारिवारिक जीवन भी उतना ही सजीव और प्रेरणादायक है। उनकी पत्नी समाज सेवा में सक्रिय हैं और उनके परिवार के सदस्य भी विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्र सेवा से जुड़े हुए हैं। परिवार से मिले समर्थन और स्थिरता ने उन्हें हर मोर्चे पर मानसिक संतुलन और ऊर्जा प्रदान की है। वे अक्सर यह कहते हैं कि एक सैनिक की असली ताकत केवल प्रशिक्षण या हथियारों से नहीं, बल्कि उसके पीछे खड़े परिवार और नैतिक मूल्यों से आती है।

ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला एक महान प्रशिक्षक भी हैं। उन्होंने एयरफोर्स ट्रेनिंग अकादमी में अनेक नवोदित पायलटों को प्रशिक्षित किया है। उनकी सिखाने की शैली में तकनीकी समझ, व्यावहारिक अनुभव और रणनीतिक सोच का अद्भुत संयोजन है। उनके छात्र उन्हें एक मित्रवत लेकिन अनुशासित गुरु के रूप में याद करते हैं, जिन्होंने न केवल उन्हें विमान उड़ाना सिखाया, बल्कि नेतृत्व, धैर्य और निर्णय लेने की कला भी सिखाई।

उनकी सेवाओं को सरकार और सेना द्वारा कई पुरस्कारों और सम्मानों से अलंकृत किया गया है। उन्हें "वायुसेना मेडल" से सम्मानित किया गया, जो वीरता, कर्तव्यपरायणता और विशिष्ट सेवा के लिए दिया जाता है। इसके अतिरिक्त, उन्हें विशिष्ट सेवा पदक (टैड) और थल सेनाध्यक्ष द्वारा प्रशस्ति पत्र भी प्राप्त हुआ है। उनके योगदान को देखकर वायुसेना के भीतर और बाहर दोनों ही जगह उनका अत्यंत सम्मान किया जाता है।

ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला का मानना है कि आने वाला समय केवल शारीरिक युद्धों का नहीं, बल्कि श्नॉलेज बेस्ड वॉरश् का होगा जहाँ तकनीक, बुद्धिमत्ता और त्वरित निर्णय सबसे बड़ी ताकत होंगे। वे अब एक रिसर्च-ओरिएंटेड दिशा में भी कार्य कर रहे हैं, जहाँ

कैप्टन शुभांशु शुक्ला का मानना है कि आने वाला समय केवल शारीरिक युद्धों का नहीं, बल्कि 'नॉलेज बेस्ड वॉर' का होगा जहाँ तकनीक, बुद्धिमत्ता और त्वरित निर्णय सबसे बड़ी ताकत होंगे। वे अब एक रिसर्च-ओरिएंटेड दिशा में भी कार्य कर रहे हैं

वे भारतीय रक्षा अनुसंधान संस्थानों के साथ मिलकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित मिशन कंट्रोल, एडवांस यूएवी टेक्नोलॉजी, और क्लाउड-बेस्ड वॉर रूम इंटीग्रेशन जैसी प्रणालियों के विकास में योगदान दे रहे हैं। इन नवाचारों से भारत को आने वाले दशकों में रक्षा क्षेत्र में स्वावलंबी और तकनीकी रूप से सशक्त बनने में सहायता मिलेगी।

उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि एक व्यक्ति अपने कर्म, सोच और समर्पण से कितना बड़ा बदलाव ला सकता है। वे इस बात के प्रतीक हैं कि सच्चा सैनिक केवल सीमा पर खड़ा व्यक्ति नहीं होता, बल्कि वह हर वह नागरिक है जो अपने क्षेत्र में राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानकर कार्य करता है। ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला ने न केवल अपने सेवा कार्य से बल्कि अपने जीवन मूल्य, नेतृत्व और दूरदर्शिता से यह प्रमाणित किया है कि एक सच्चा देशभक्त समय, स्थान और परिस्थिति की सीमाओं से परे जाकर कार्य करता है।

आज जब युवा पीढ़ी अपने भविष्य की दिशा तय कर रही है, तो ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला जैसे व्यक्तित्व उन्हें यह प्रेरणा देते हैं कि दृढ़ निश्चय, निरंतर प्रयास और ईमानदारी से किसी भी क्षेत्र में महानता प्राप्त की जा सकती है। वे एक ऐसे प्रकाशस्तंभ हैं जो वायुसेना ही नहीं, समूचे भारत के लिए गर्व का विषय हैं। उनका जीवन एक जीवित उदाहरण है कि वर्दी केवल एक पोशाक नहीं, बल्कि एक ज़िम्मेदारी है कृ एक ऐसा धर्म जो राष्ट्र के प्रति समर्पण की सर्वोच्च भावना को दर्शाता है।

करुणा के अंक में प्रकृति की साँसे

अनिल बिश्नोई
हनुमानगढ़

अनिल का घर अब एक जीवमात्र के लिए वात्सल्यधाम बन चुका था। उनके पुत्र अर्पित ने उस नन्हे अतिथि का नाम "मानक" रखा। मानक- जो अभी जीवन के पहले कदम भी नहीं उठा पाया था, अब इंसानों की गोद में पलने लगा। निप्पल पकड़ने में असमर्थ मानक को कभी चम्मच से, कभी उँगलियों के सहारे दूध पिलाया गया। धीरे-धीरे न केवल उसका शरीर बल्कि आत्मा भी इस परिवार की कोमल करुणा में ढलती गई।

यह कोई साधारण दिन नहीं था। साँझ के सन्नाटे में जब प्रकृति अपनी लोरी सी गा रही थी, एक मादा हिरणी अपने नवजात शावक को झाड़ी की आड़ में छिपाकर, क्षुधा शांति हेतु खेतों की ओर बढ़ी। वह हिरणी, जो जीवन की सबसे पवित्र भूमिका-मातृत्व-में थी, शायद जानती नहीं थी कि यह साँझ उसके जीवन की अंतिम साँझ होगी।

जैसे ही वह खेत में घास चरने लगी, एक भूखा श्वान उसकी ओर झपटा। चीख की वह ध्वनि, जो न मनुष्यों की भाषा में थी न पशुओं की सामान्य पुकार में, वह पुकार थी एक माँ की, एक जीव की जो जीना चाहती थी। संयोग से उस खेत के किसान कमलेश की संवेदना जागी। दौड़कर उस निर्दोष प्राणी को श्वान से बचाया। सूचना पाकर वन विभाग की रेस्क्यू टीम भी पहुँची। लेकिन जीवन की डोर तब तक कमजोर हो चुकी थी- रक्तस्राव ने हिरणी को शून्यता की ओर ढकेल दिया। वह चली गई- मौन, निःशब्द, पर पीछे छोड़ गई मातृत्व की अधूरी कहानी।

हिंदू रीति अनुसार उसका अंतिम संस्कार मानवीय संवेदना के साथ किया गया। पर इस सच्चे जीवन-प्रेमी किसान का अंतर्मन एक ही बात दोहरा रहा था- "उसका बच्चा?" खोज में लगे कमलेश ने झाड़ियों के बीच कांपता, भूखा, अपनी माँ की गंध ढूँढता नन्हा शावक पाया। उसे फिर से वही श्वान सताने आ पहुँचा, पर ईश्वर ने फिर किसान को भेजा। शावक की जान बची और उसे काले हिरणों के संरक्षणवादी अनिल बिश्नोई के पास प्रारंभिक संरक्षण हेतु सौंपा गया।

अनिल का घर अब एक जीवमात्र के लिए वात्सल्यधाम बन चुका था। उनके पुत्र अर्पित ने उस नन्हे अतिथि का नाम "मानक" रखा। मानक- जो अभी जीवन के पहले कदम भी नहीं उठा पाया था, अब इंसानों की गोद में पलने लगा। निप्पल पकड़ने में असमर्थ मानक को कभी चम्मच से, कभी उँगलियों के सहारे दूध पिलाया गया। धीरे-धीरे न केवल उसका शरीर बल्कि आत्मा भी इस परिवार की कोमल करुणा में ढलती गई।

दिन बीतते गए। मानक अब हर भूख-प्यास पर टर-टर करता, और अनिल उसे समझते- जैसे वह कोई बालक हो जो अपनी भाषा में अपने अधिकार माँगता हो। यह रिश्ता, जहाँ भाषा मौन थी पर भाव मुखर, वह अनूठा था।

परन्तु यह भी एक सच्चाई थी- कि मानक का घर जंगल था, मनुष्य नहीं। एक दिन गृहिणी ने करुण स्वर में कहा- "हमें उसे उसके परिवार में छोड़ देना चाहिए।" और वही हुआ।

रेस्क्यू टीम आई। मानक अब उस शिशु हिरणों के झुंड में छोड़ दिया गया, जिनकी गंध उसे मातृत्व की छाया में खींच ले गई। वह कुलांचे भरता हुआ जैसे कह रहा हो- "मुझे मेरा संसार मिल गया।"

अनिल के परिवार की आँखें नम थीं, पर चेहरों पर संतोष की आभा थी- उन्होंने एक जीवन को न केवल बचाया, बल्कि उसे उसका असली जीवन लौटाया।

बढ़ रहा सोशल मीडिया का प्रभावः जिम्मेदारी और जागरूकता जरूरी

सुनील कुमार महला
युवा साहित्यकार, उत्तराखंड

सोशल मीडिया की शक्ति जितनी सकारात्मक है, उतनी ही नकारात्मक भी हो सकती है यदि इसका दुरुपयोग किया जाए। फेक न्यूज, अफवाहें, ट्रोलिंग और साइबरबुलिंग जैसी समस्याएं लगातार बढ़ रही हैं। कई बार बिना पुष्टि के फैलाई गई गलत जानकारी सामाजिक सौहार्द्र को नुकसान पहुँचाती है। इसके अलावा, सोशल मीडिया पर की गई टिप्पणियाँ या पोस्ट कभी-कभी व्यक्ति की छवि और मानसिक स्वास्थ्य भी प्रभावित करती हैं।

30 जून को 'विश्व सोशल मीडिया' दिवस मनाया जाता है। आज के युग में सोशल मीडिया का बहुत महत्व है। यह सोशल मीडिया(फेसबुक, व्हाट्स एप, ट्विटर, इंस्टाग्राम) ही है जिसके कारण आज दुनिया श्रिंक हो गई है। यह आपस में लोगों को जोड़ने, विचारों का आदान-प्रदान करने तथा समाज और देश में पाज़ीटिव बदलाव लाने का एक सशक्त और शानदार माध्यम है। वास्तव में, यह दिन सोशल मीडिया के हमारे जीवन में महत्व को पहचानने और इसका जश्न मनाने के लिए मनाया जाता है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि वर्ष 1997 में, पहला सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'सिक्सडिग्रीज़' लॉन्च किया गया था, और वर्ष 2010 में मैशेबल द्वारा विश्व सोशल मीडिया दिवस की शुरुआत की गई थी। गौरतलब है कि एंड्रयू वेनरिच द्वारा स्थापित, इस वेबसाइट पर उपयोगकर्ता अपने मित्रों और परिवार के सदस्यों को सूचीबद्ध कर सकते थे और इसमें प्रोफ़ाइल, बुलेटिन बोर्ड और स्कूल संबद्धता जैसी सुविधाएँ थीं। हालांकि, दस लाख से ज़्यादा उपयोगकर्ताओं के बावजूद वर्ष 2001 में इसे बंद कर दिया गया था। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि पहला आधुनिक सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म 2002 में फ्रेंडस्टर था। इसी प्रकार से लिंक्डइन, पहला व्यवसाय-केंद्रित सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म 2003 में लॉन्च किया गया था। माईस्पेस 2004 में लॉन्च हुआ, उसी साल फ़ेसबुक(कैम्ब्रिज, मैसाचुसेट्स में स्थापित इस वेबसाइट के संस्थापक मार्क जुकरबर्ग) भी लॉन्च हुआ। बाद में वर्ष 2006 तक माईस्पेस दुनिया का सबसे बड़ा सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म बन गया।यूट्यूब(विडियो वेबसाइट जिसका जन्म कैलिफोर्निया के सैन मेटियो में हुआ) ने वर्ष 2005 में और उसके बाद ट्विटर ने वर्ष 2006 में सीमित अक्षरों वाला अपना प्लेटफॉर्म शुरू किया।इंस्टाग्राम साल 2010 में लॉन्च हुआ और इसने तेज़ी से विकास किया। बहरहाल, आज दिन-ब-दिन सोशल मीडिया की लोकप्रियता बढ़ती ही चली जा रही है लेकिन यह बहुत ही दुखद है कि तकनीक का आज मिसयूज(ग़लत उपयोग) किया जा रहा है। आज सोशल मीडिया पर डेटा चोरी किया जाता है। अभद्र भाषा का इस्तेमाल किया जाता है। फर्जी

खबरों को लेकर विवाद होता है। ऐसी ऐसी सामग्री या कंटेंट का प्रचार प्रसार देखने को मिलता है, जिससे मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य(अवसाद और चिंता के कारण) पर बहुत बुरा असर पड़ता है। साइबर बुलिंग(एक दूसरे को धमकाना, परेशान करना) की समस्या जैसे आज आम हो चली है।सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग वास्तविक दुनिया के रिश्तों को कम कर सकता है, जिससे सामाजिक अलगाव हो सकता है। इतना ही नहीं, सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन को भी प्रभावित करता है। वास्तव में आज सोशल मीडिया पर नकारात्मक(नेगेटिव), ग़लत और भ्रामक सूचनाओं, जानकारियों से बचने की जरूरत है। यह ठीक है कि हमारे देश में अभिव्यक्ति की आजादी सबको प्रदान की गई है, लेकिन पिछले कुछ समय से देश और समाज के कुछेक लोगों ने तकनीक और अभिव्यक्ति की आजादी का बहुत ही ग़लत उपयोग किया है। विशेषकर यू ट्यूबर्स-नैतिकता और मर्यादा को तांक पर रखकर कुछ भी ऊल-जुलूल इन माध्यमों पर बेरोकटोक परोस रहे हैं। यू-ट्यूबर्स और फेसबुक पर कंटेंट प्रस्तुतीकरण का तरीका बहुत ही अजीबोगरीब व ग़लत हो गया है। फेसबुक, यूट्यूब पर ज्यादा से ज्यादा लाइक्स, शेयर और कमेंट्स पाने के लिए यूट्यूबर्स और फेसबुक संचालक अपनी मर्यादाएं भूल रहें हैं और उन्हें समाज और देश से कोई भी सरोकार नहीं रहा है। बहरहाल, पाठक जानते हैं कि यू-ट्यूब और फेसबुक सार्वजनिक मंच हैं और आज संपूर्ण विश्व इन मंचों से जुड़ा हुआ है। कोई भी पोस्ट इन मंचों पर पोस्ट की जाती है तो उसके दूरगामी प्रभाव होते हैं, इसलिए यह बहुत ही जरूरी है कि इन मंचों पर प्रामाणिक और विश्वसनीय जानकारी ही पोस्ट की जाए और देश की सुरक्षा का हमेशा ध्यान रखा जाए। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि सोशल मीडिया के सकारात्मक और नकारात्मक

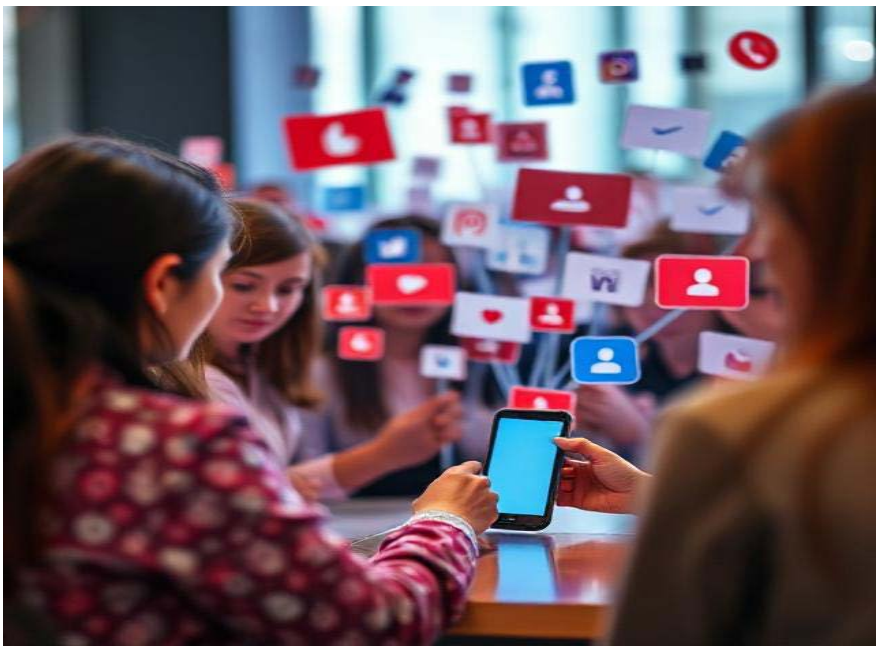

दोनों प्रकार के प्रभाव हैं। सोशल मीडिया संचार और सामाजिकीकरण को बढ़ावा देता है। यह विभिन्न सामाजिक मुद्दों, राजनीतिक आंदोलनों और शैक्षिक अवसरों के बारे में जानकारी प्राप्त करने का एक शक्तिशाली उपकरण है। यह सोशल मीडिया ही है जो रचनात्मकता और आत्म-अभिव्यक्ति को अवसर प्रदान करता है। यह व्यावसायिक अवसरों को जन्म दे सकता है। सामाजिक परिवर्तन लाने की अभूतपूर्व क्षमताएं रखता है।सोशल मीडिया संकट के समय में लोगों को समर्थन और प्रोत्साहन प्राप्त करने, दूसरों के साथ जुड़ने और अकेलेपन को कम करने में मदद करता है। सीखने के अवसरों के साथ ही सोशल मीडिया व्यक्तिगत विकास में भी सहायक सिद्ध होता है। बस जरूरत इस बात की है कि हम तकनीक का प्रयोग पूरी जिम्मेदारी, जागरूकता और संतुलित तरीके से करें। सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं को यह समझना आवश्यक है कि उनके द्वारा साझा की जाने वाली सामग्री का समाज पर क्या प्रभाव पड़ सकता है। हर व्यक्ति को यह जिम्मेदारी लेनी चाहिए कि वह सच्ची, प्रमाणिक और रचनात्मक जानकारी ही साझा करे। किसी भी समाचार को आगे बढ़ाने से पहले उसकी सत्यता की जांच करना अत्यंत आवश्यक है। यह केवल व्यक्तिगत जिम्मेदारी नहीं बल्कि सामाजिक कर्तव्य भी है।

जागरूकता के माध्यम से हम सोशल मीडिया के गलत प्रभावों को कम कर सकते हैं। स्कूलों और कॉलेजों में डिजिटल साक्षरता पर विशेष ध्यान देना चाहिए ताकि बच्चे शुरुआत से ही सही और गलत में फर्क समझ सकें। इसके अलावा, सरकार और सोशल मीडिया कंपनियों को भी मिलकर ऐसे कदम उठाने चाहिए जिससे फेक न्यूज और हेट स्पीच पर रोक लगाई जा सके। सोशल मीडिया एक शक्तिशाली माध्यम है, जिसे समझदारी, जिम्मेदारी और जागरूकता के साथ इस्तेमाल किया जाए तो यह समाज के विकास में बहुत बड़ा योगदान दे सकता है। परंतु यदि इसका दुरुपयोग होता रहा तो यह समाज को बाँटने और भ्रमित करने का कारण भी बन सकता है। इसलिए आज की सबसे बड़ी आवश्यकता यही है कि हम सभी इसका प्रयोग विवेकपूर्ण और सकारात्मक रूप से करें।

तभी वास्तव में इस दिवस को मनाने की सार्थकता सिद्ध हो सकती है।

शांति की तलाश में युद्ध का उद्घोष क्यों

अवनीश कुमार गुप्ता
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

ईरान का परमाणु कार्यक्रम वर्षों से अंतरराष्ट्रीय विवाद का विषय रहा है, परंतु यह भी उतना ही सत्य है कि अमेरिका व उसके मित्र राष्ट्रों के पास स्वयं अत्याधुनिक परमाणु हथियार मौजूद हैं। फिर किस नैतिकता से वे अन्य राष्ट्रों को आत्मरक्षा के किसी भी संभावित विकल्प से वंचित कर सकते हैं? क्या यह दोहरा मापदंड नहीं?

बीते 22 जून, 2025 की अर्धरात्रि को अमेरिका द्वारा ईरान के परमाणु ठिकानों पर चलाया गया 'मिडनाइट हैमर ऑपरेशन' न केवल सामरिक दृष्टि से, बल्कि मानवता, कूटनीति और वैश्विक मर्यादाओं की दृष्टि से भी एक ऐतिहासिक मोड़ साबित हो सकता है। यह हमला उस समय हुआ जब दुनिया पहले ही कई मोर्चों पर उथल-पुथल से गुजर रही है – जलवायु संकट, खाद्य असुरक्षा, आर्थिक मंदी और शांति समझौतों की लगातार अवहेलना। ऐसे समय में इस प्रकार की एकतरफा सैन्य कार्रवाई, केवल एक देश के विरुद्ध नहीं बल्कि विश्व समुदाय की संप्रभु चेतना पर भी आघात है।

यह समझना आवश्यक है कि अमेरिका द्वारा यह कदम अचानक नहीं उठाया गया, बल्कि इसके पीछे वर्षों की रणनीतिक तैयारी, राजनीतिक संदेश और वैश्विक शक्ति-संतुलन की मनोवैज्ञानिक योजना निहित है। ईरान, जो स्वयं को पश्चिमी प्रभाव से स्वतंत्र रखने का प्रयत्न करता आया है, उसे बार-बार न केवल आर्थिक प्रतिबंधों का सामना करना पड़ा है, बल्कि वैचारिक रूप से भी वैश्विक मंच पर अलग-थलग किया गया है। अमेरिका की यह कार्यवाही, वस्तुतः केवल एक 'न्यूक्लियर इंफ्रास्ट्रक्चर' पर हमला नहीं, बल्कि एक विकासशील, आत्मनिर्भर और गैर-पश्चिमी राष्ट्र की राजनीतिक अस्मिता पर प्रहार है।

ईरान का परमाणु कार्यक्रम वर्षों से अंतरराष्ट्रीय विवाद का विषय रहा है, परंतु यह भी उतना ही सत्य है कि अमेरिका व उसके मित्र राष्ट्रों के पास स्वयं अत्याधुनिक परमाणु हथियार मौजूद हैं। फिर किस नैतिकता से वे अन्य राष्ट्रों को आत्मरक्षा के किसी भी संभावित विकल्प से वंचित कर सकते हैं? क्या यह दोहरा मापदंड नहीं?

इस हमले की सबसे बड़ी विडंबना यह रही कि यह पूर्णतः कूटनीति को दरकिनार करके किया गया। न संयुक्त राष्ट्र को सूचित किया गया, न ही किसी बहुपक्षीय वार्ता की पहल की गई। यह घटनाक्रम इस बात को स्पष्ट करता है कि अमेरिका ने एकतरफा सैन्य नीति को प्राथमिकता दी और वैश्विक संस्थानों की वैधता को पूर्णतः उपेक्षित कर दिया। यह स्थिति इस ओर संकेत करती है कि तथाकथित "लोकतांत्रिक विश्व नेता" स्वयं संयुक्त राष्ट्र के चार्टर, वैश्विक मानवाधिकार संधियों और न्यायपूर्ण प्रक्रिया की अवधारणाओं का अतिक्रमण कर रहे हैं। यदि यही व्यवस्था रही, तो क्या आने वाले समय में कोई भी शक्तिशाली देश, किसी भी स्वायत्त राष्ट्र पर बिना चेतावनी हमला कर सकता है? इस प्रकार की नीति न केवल अस्थिरता को बढ़ावा देगी, बल्कि अंतरराष्ट्रीय विश्वास प्रणाली को भी तहस-नहस कर देगी।

ईरान के नागरिकों के लिए यह हमला केवल एक सैन्य घटना नहीं, बल्कि राष्ट्रगौरव, आत्मसम्मान और अस्तित्व की चुनौती है। जब एक संप्रभु राष्ट्र की भूमि पर बिना उसकी अनुमति के बम बरसाए जाएँ, तो यह न केवल उसकी सुरक्षा बल्कि उसकी आत्मा पर भी हमला होता है। विश्व जनमत को यह सोचने की आवश्यकता है कि यदि यही घटना किसी पश्चिमी देश के साथ घटती, तो प्रतिक्रिया क्या होती?

क्या ईरान के नागरिकों का जीवन, सुरक्षा और गरिमा केवल इसीलिए महत्वहीन हो जाती है क्योंकि वे किसी 'अमेरिकापरक विश्व व्यवस्था' का हिस्सा नहीं हैं? यह समय है जब हमें यह प्रश्न पूछना चाहिए कि क्या मानव अधिकार केवल पश्चिमी देशों के लिए आरक्षित हैं? क्या वैश्विक मानवता का अर्थ केवल 'अपनी सुविधा' तक सीमित है?

तकनीकी दृष्टि से यह ऑपरेशन सफल भले रहा हो – परमाणु ठिकानों को भारी क्षति पहुँची, सतही संरचनाएं ध्वस्त हुईं – परंतु सामरिक दृष्टि से यह एक दीर्घकालिक असफलता का बीज भी बो सकता है। यह हमला ईरान को 'पीड़ित राष्ट्र' की स्थिति में पहुँचा सकता है, जिससे उसे विश्व समुदाय की सहानुभूति प्राप्त हो सकती है। साथ ही, इससे उसकी जनता के बीच राष्ट्रवाद की भावना और तेज हो सकती है, जिससे कट्टरपंथ को भी बढ़ावा मिल सकता है।

इतिहास गवाह है कि बल प्रयोग से स्थायी समाधान कभी संभव नहीं हुए। अमेरिका ने जिस 'शॉक एंड ऑ' रणनीति का प्रयोग इराक, अफगानिस्तान और लीबिया में किया, उसके परिणाम आज भी उन देशों की अव्यवस्था, गृहयुद्ध और शरणार्थी संकट के रूप में सामने हैं।क्या अमेरिका वही गलती फिर दोहरा रहा है?

यह हमला हमें यह सोचने पर विवश करता है कि आज के युग में 'संप्रभुता' की व्याख्या क्या रह गई है। यदि किसी राष्ट्र की सीमाओं, उसकी नीति, उसकी रक्षा की इच्छाशक्ति को

यह समय केवल राजनीतिक मूल्यांकन का नहीं, बल्कि आंतरिक आत्मावलोकन और वैश्विक चेतना के पुनरुद्धार का है। यदि मानवता को सचमुच शांति, सहयोग और विकास की ओर ले जाना है, तो हमें बल के बजाय संवाद को प्राथमिकता देनी होगी। संयुक्त राष्ट्र, गुटनिरपेक्ष आंदोलन और नवीन बहुपक्षीय मंचों को फिर से सक्रिय करके हमें एक ऐसी विश्व व्यवस्था स्थापित करनी होगी।

वैश्विक शक्तियाँ अनदेखा कर दें, तो क्या वह राष्ट्र वास्तव में स्वतंत्र कहा जा सकता है?

विश्व व्यवस्था को एक नए, न्यायपरक और बहुपक्षीय दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसमें कोई भी देश शक्ति के आधार पर निर्णय न ले सके। यदि हम वाकई वैश्विक मानवता की बात करते हैं, तो हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हर राष्ट्र, हर नागरिक, हर संस्कृति को समान सम्मान और सुरक्षा मिले।

ईरान ने स्पष्ट रूप से इस हमले को अपनी संप्रभुता के विरुद्ध सीधा युद्ध बताया है और "स्थायी प्रतिशोध" की चेतावनी दी है। ईरानी सर्वोच्च नेतृत्व और सेना के सूत्रों से संकेत मिल रहे हैं कि वह या तो अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर सटीक जवाबी हमला कर सकता है या स्ट्रेट ऑफ होरमुज़ के माध्यम से वैश्विक तेल आपूर्ति में व्यवधान डाल सकता है।

यदि ऐसा होता है, तो न केवल पश्चिम एशिया, बल्कि संपूर्ण विश्व– विशेषकर ऊर्जा-निर्भर देश – तेल संकट, महंगाई और आर्थिक अस्थिरता के गंभीर चरण में पहुँच सकते हैं। साथ ही, अमेरिका द्वारा आगे यदि कोई और हस्तक्षेप हुआ, तो स्थिति एक पूर्ण क्षेत्रीय युद्ध में बदल सकती है, जिससे नाटो और अन्य वैश्विक शक्तियाँ भी खिंच सकती हैं।

भारत के लिए यह घटना अत्यंत संवेदनशील है। एक ओर भारत अमेरिका का रणनीतिक साझेदार है, तो दूसरी ओर ईरान से उसका ऊर्जा, संस्कृति और क्षेत्रीय संतुलन का गहरा संबंध रहा है। ईरान भारत की 'चाबहार परियोजना' का हिस्सा है, जो अफगानिस्तान और मध्य एशिया तक भारत की पहुंच को सक्षम बनाता है। ऐसे में भारत को अत्यंत सावधानी और संतुलन के साथ अपनी नीति तय करनी होगी। उसे न केवल संप्रभुता और शांति का समर्थन करना होगा, बल्कि यह सुनिश्चित करना होगा कि यह संघर्ष किसी प्रकार भारत की ऊर्जा सुरक्षा, रणनीतिक साझेदारी या क्षेत्रीय हितों को नुकसान न पहुँचाए।

यह समय केवल राजनीतिक मूल्यांकन का नहीं, बल्कि आंतरिक आत्मावलोकन और वैश्विक चेतना के पुनरुद्धार का है। यदि मानवता को सचमुच शांति, सहयोग और विकास की ओर ले जाना है, तो हमें बल के बजाय संवाद को प्राथमिकता देनी होगी। संयुक्त राष्ट्र, गुटनिरपेक्ष आंदोलन और नवीन बहुपक्षीय मंचों को फिर से सक्रिय करके हमें एक ऐसी विश्व व्यवस्था स्थापित करनी होगी, जहाँ कोई भी देश अपने से कमजोर देश पर सिर्फ इसलिए आक्रमण न कर सके क्योंकि उसके पास हथियार अधिक हैं।

'मिडनाइट हैमर' ऑपरेशन ने यह सिद्ध कर दिया है कि 21वीं सदी की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि जब विज्ञान, संचार और वैश्विक चेतना अपने चरम पर हैं, तब भी हम पुरानी औपनिवेशिक और साम्राज्यवादी मानसिकताओं से बाहर नहीं निकल पाए हैं। शांति का वास्तविक मार्ग हथियारों के जखीरे से नहीं, बल्कि दिलों की चौपाल से निकलेगा।

हर राष्ट्र को यह समझने की आवश्यकता है कि सच्ची शक्ति किसी को कुचलने में नहीं, उसे सम्मान देने में है। यदि वैश्विक व्यवस्था को स्थायी बनाना है, तो 'हथौड़े' की नहीं, संवाद और न्याय के 'दीपक' की आवश्यकता है।

राग सदा ऊपर को उठता, आँसू नीचे झर जाते हैं

प्रफुल्ल कुमार त्रिपाठी

लखनऊ

लेखक आकाशवाणी से सेवानिवृत्त अधिकारी हैं।

लेफ्टिनेंट यश आदित्य

पाठकों जैसा कि आप सभी जानते हैं कि गोपाल दास "नीरज " हिन्दी काव्य जगत के महानतम गीतकार रहे हैं ।प्रेम हो या विरह,सुख हो या दुख मनुष्य जीवन की सभी विधाओं पर सटीक शब्दों की काव्यमय माला श्रोताओं को पहना देना उनका काव्यमय तिलस्म रहा है। उनका एक प्रसिद्ध गीत है -

"स्वप्न झरे फूल से, गीत चुभे शूल से,
लुट गए सिंगार सभी बाग के बबूल से।
और हम खड़े खड़े बहार देखते रहे,
कारवां गुज़र गया, गुबार देखते रहे।।"

इसी गीत में आगे जीवन के दुख और दर्द का कितना सटीक शब्दाकंन हुआ है।

"नींद भी खुली न थी कि हाय धूप ढल गई,
पाँव जब तलक उठे कि ज़िंदगी फिसल गई..
गीत अश्क बन गए तो, छंद हवन हो गए।"

सचमुच, जब कभी आप दर्द में छटपटा रहे हों,आपकी देह की दुकान पर सांस की शराब का खुमार चढ़ रहा हो या कि रात से चिराग छीन लेने जैसे अद्भुत और अविश्वसनीय घटनाओं का आपको अपनी ज़िंदगी के साथ एहसास हो या कि आपको ऐसा लगने लगे कि आप किसी के बिछड़ने के ग़म में इतना स्तब्ध हो चले हैं कि मृत का कफ़न ओढ़ कर उसकी मज़ार देख रहे हों तो इस गीत को अवश्य सुनिए, मलहम का काम करेगा। लेकिन अव्वल तो प्रभु से यह प्रार्थना करता हूँ कि किसी के जीवन में मेरे जैसा दुर्भाग्यपूर्ण क्षण कभी भी ना आने पाए कि जब किसी पिता को अपने ही कंधों पर अपने युवा बेटे की लाश ढोनी पड़े .... कभी नहीं!

लेकिन जैसा कि हरिवंश राय बच्चन का कहना है कि "मानव क्या नभ से तारों को भी, नीरव आँसू आते हैं!" और यह भी कि "ऊपर देव तले मानव गण, नभ में दोनों गायन - रोदन,राग सदा ऊपर को उठता, आँसू नीचे झर जाते हैं! ..." इसलिए इस असमय, अप्रत्याशित गहन शोक की आपदा को स्वीकार करने के अलावे अपने पास कोई दूसरा विकल्प भी तो नहीं था।

7 सितंबर 2007 को मिनिस्ट्री ऑफ डिफेंस (आर्मी) के एडजुडेंट जेनरल ब्रांच के लेफ्टिनेंट कर्नल जी.एस.बाजवा ने कैजुएलिटी एफ.आई.आर. भारत के रक्षा मंत्री, सेनाध्यक्ष, सह-सेनाध्यक्ष, सी.डी.ए., पुणे और पी.सी. डी.ए., इलाहाबाद आदि तमाम संबंधितों को जारी किया जिसकी एक प्रति दि. 26-09-2007 को मुझे भी मिली। इसमें लिखा गया था,

1. Information has been received from 7 Mech. Inf. that IC-68122H Lt. Yash Aditya has died on 05 Sept.2007 due to "Electric

Flash Burn Injuries" caused on 29 Aug, 2007 while moving with SPL train of unit from Chakki Bank to Babina at CMC Ludhiana.

2. The NOK has been informed...

लेकिन उसके पहले मेरे बेटे लेफ्टिनेंट यश आदित्य की इस शहादत का दुखद समाचार दिल्ली, स्थानीय (लखनऊ), गोरखपुर और लुधियाना के लगभग सभी समाचार पत्रों में सचित्र छप चुके थे। दैनिक "लुधियाना केसरी" और दैनिक जागरण के 30 अगस्त 2007 के अंक में एक शीर्षक छपा- "जंक्शन पर करेंट से झुलसा लेफ्टिनेंट" जिसमें यह समाचार था – लुधियाना, 29 अगस्त (स. ह.)। लुधियाना रेलवे जंक्शन यार्ड में उस समय भगदड़ मच गई जब स्पेशल मिलिट्री ट्रेन के साथ जा रहा उच्चाधिकारी हाई वोल्टेज तारों से झुलस गया। वह गाड़ियों की चेकिंग कर रहा था। अधिकारी की शिनाख्त डोगरा रेजीमेंट के लेफ्टिनेंट यश आदित्य के रुप में की गई है। उसे सी.एम.सी. हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया है। चक्की बैंक से बगीन (सही नाम बबीना) की तरफ जा रही स्पेशल मिलिट्री ट्रेन की इंटेनसिव चेकिंग के लिए उसे यार्ड में भेजा गया था। चेकिंग को दो घंटे लगने थे। लेफ्टिनेंट ने ए.सी. कोच से निकल कर गाड़ी को चेक करना शुरू किया। अचानक वह तारों की चपेट में आ गया और बुरी तरह से झुलस गया। उसके पीछे काहल रहे जवान ने अन्य लोगों को बताया जिस पर उसे डाक्टरी सहायता उपलब्ध कराई गई। डाक्टरों के अनुसार वह 60 प्रतिशत झुलस गया है और उसकी हालत गंभीर है। घटना की सूचना उच्चाधिकारियों को दे दी गई है। गोरखपुर के दैनिक जागरण ने लिखा-"गोरखपुर के होनहार लेफ्टिनेंट यश की अकाल मौत .. जवान बेटे की मौत के ग़म में डूबा त्रिपाठी परिवार!"

02 जनवरी 1985 को गोरखपुर के ललित नारायण मिश्र पूर्वोत्तर रेलवे हास्पिटल से शुरू हुई यश (पुकार नाम प्रतुल) की जीवन

तिरंगे में लिपटे यश के निर्जीव शरीर को जब गाड़ी से घर के अंदर ड्राइंग रूम में लाया गया तो उपस्थित जन समूह और परिजनों के चीत्कार ने मानो काल तक संवाद पहुंचाया कि आखिर क्यों उसने असमय यश को बुला लिया?

यात्रा अब थम चुकी थी। भारतीय सेना ने एन. डी.ए.के कोर्स नंबर 108/एक्स एन.डी.ए. कोर्स 118 के बैच नंबर RDDA-70492 में 27 जून 2002 को दाखिल और 10 जून 2006 को सेना में कमीशन पाए और वर्ष 2007 के शुरुआती दिनों में सेना के कठिनतम "कमांडो" प्रशिक्षण पा चुके अपने 24 वर्षीय होनहार युवा लेफ्टिनेंट यश आदित्य को असमय खो दिया था और मेरे घर का तो चिराग ही बुझ चुका था।

यश का पार्थिव शरीर 6 सितंबर की सुबह सड़क मार्ग से स्पेशल कानवाय के साथ वाया बबीना लखनऊ सेना के मध्य कमान के मुख्यालय लाया गया। वहाँ मध्य कमान के एम.जी.(ई. एम. ई.) मेजर जेनरल आर. के. सानन ने मध्य कमान के सेनाध्यक्ष लेफ्टिनेंट जनरल ओ . पी. चंद्रजोग की ओर से शहीद के पार्थिव शरीर पर पुष्पचक्र अर्पित कर भारतीय सेना की ओर से श्रद्धांजलि दी। इस दौरान सेना की एक टुकड़ी द्वारा शहीद को अंतिम सलामी दी गई तथा शहीद की दिवंगत आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा गया। उसके बाद यश के निर्जीव शरीर को विज्ञानपुरी, महानगर लखनऊ के उसी निवास पर लाया गया जिस मकान का भूमि पूजन और उसकी नींव यश ने ही रखी थी। तिरंगे में लिपटे यश के निर्जीव शरीर को जब गाड़ी से घर के अंदर ड्राइंग रूम में लाया गया तो उपस्थित जन समूह और परिजनों के चीत्कार ने मानो काल तक संवाद पहुंचाया कि आखिर क्यों उसने असमय यश को बुला लिया? साथ में उनके सी.ओ. कर्नल संजीव शर्मा, यश के अनन्य बचपन के मित्र असीम गुप्ता (अब कर्नल असीम गुप्ता) और कुछ अन्य अधिकारी, इन्फैन्ट्री के अनेक जवान आए हुए थे। नए संबंधी मेरे समधी श्री दिनेश शुक्ला (अब स्वर्गीय) ने आनन फानन में आवश्यक वस्तुएं जुटाईं। सैनिक कल्याण बोर्ड ने अंतिम क्रिया के लिए स्थान बुक कराया। यश के बड़े भाई कैप्टन दिव्य आदित्य अन्य व्यवस्थाओं में सक्रिय रहे।

अंततः लगभग 10 बजे सुबह शहीद लेफ्टिनेंट यश आदित्य की अंतिम यात्रा शुरू हुई। लखनऊ की जीवन रेखा गोमती नदी के किनारे बैकुंठ धाम (भैंसा कुंड) पर उन्हें सैनिक सम्मान और रीति रिवाज से सेना और परिजनों, इष्ट-मित्रों,आदि ने अंतिम विदाई दी गई।

अगले दिन समाचार पत्रों ने सचित्र समाचार लिखा– "सैनिक सम्मान के साथ हुआ लेफ्टिनेंट यश का अंतिम संस्कार (दैनिक जागरण/ अमर उजाला / वॉयस ऑफ लखनऊ/ स्वतंत्र चेतना / स्वतंत्र भारत / आज / हिंदुस्तान आदि) और अंग्रेजी अखबारों में भी सचित्र शीर्षक आया- "Lt. Yash Aditya cremated with military honours. "मुझे आज भी याद है कि जब यश की चिता को मुखाग्नि दी जा रही थी तो बिना किसी पूर्वानुमान के आसमान से अचानक बारिश होने लगी थी। दैनिक "अमर उजाला" (जो उन दिनों कानपुर से छप कर लखनऊ आता था) ने लिखा था- "यश की अंतिम विदाई पर आसमान भी रोया!" लखनऊ के एक वरिष्ठ और प्रतिष्ठित कवि मेरे अनन्य मित्र श्री देवकी नंदन "शांत", (साहित्य भूषण) ने लिखा-

"कुर्बानियों की सफ़ (सूची) में नया नाम लिख गया,
दुनियां के वास्ते कोई, पैगाम लिख गया।
चरागों को लहू से जब भी दीवाने जलाते हैं,
हवाएं थरथरा उठती हैं,तूफ़ा कांप जाते हैं।
वो नज़रों से हमारी दूर बेशक़ हो गए लेकिन,
अभी भी नींद में वो ख्वाब बन कर
झिलमिलाते हैं।"

(शेष अगले अंक में)

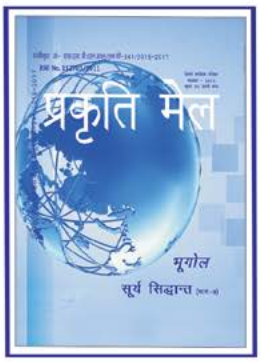

R N I No. UPHIN/2011/40224

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रकृति मेल वह आईना है जिसमें आप अपनी वास्तविक तस्वीर के साथ प्रकृति की हर क्रिया प्रतिक्रिया का वैज्ञानिक स्वरूप देखें।

अशोक 'मानव'

उत्तर भारत की तेजी से लोकप्रिय होती हिन्दी मासिक पत्रिका
(शीघ्र ही अपने विज्ञापन की जगह बुक करवाये) (8423330911)

☐ हां, मैं प्रकृति मेल पत्रिका का वर्षिक ग्राहक बनना पसंद करूंगा/ करूंगी

प्रकृति मेल के पक्ष में देय ₹ ☐☐☐ कैश ☐ चेक ☐ तारीख ☐☐☐☐☐☐

1 year membership fee -220/- only. (Must be drawn in favour of 'Prakriti mail' payable at lucknow)

संलग्न चेक/डिमांड ड्राफ्ट नं. ☐☐☐☐☐☐ आहरित बैंक (बैंक का नाम)________________

नाम ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐

पता____

________________________ राज्य________________ पिन____________

फोन नंबर ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐ ई-मेल:________________________

कृपया फार्म भरकर निम्नलिखित पते पर भेजे:

प्रकृति मेल, सूर्या आश्रम, मानव नगर, (निकट आई.आई.एस.ई.) कल्याणपुर, लखनऊ, पिनकोड– 226022, उ0 प्र0।

नियम और शर्तें

पत्रिका का मूल्य और आफॅर केवल भारत में लागू। कृपया पत्रिका की पहली प्रति डाक या कोरियर के माध्यम से मंगवाने के लिए कुछ समय दें। किसी भी तरह के विवाद का निबटारा केवल लखनऊ की अदालत में होगा।

नि:शुल्क ई–मैगज़ीन प्राप्त करने के लिए हमारे वेबसाइट – www.prakritimail.com पर सम्पर्क करें।

सूत्र वाक्य

अशोक मानव

- हर वजूद के साथ न्याय स्थापित करना प्रकृति की प्रवृत्ति है ।
- जीव प्रकृति का एक विज्ञान है जो अपनी इच्छा को तृप्त करने हेतु बनाया जाता है।
- प्रकृति हर किसी अवस्था को पूर्ण करने हेतु रासायनिक मिलान करती है इसी क्रिया से उसके यात्रा की गति बनती है।
- प्रकृति प्रदूषण मिटाने के लिए एक गुणीय तत्व में परिवर्तित कर प्रवृत्ति बना देती है जो स्वभाव बनाकर यात्रा को आनंदमय बना देती है।
- प्रकृति ब्रह्मांड की सिद्धांत अवस्था होने के कारण किसी भी तत्व पदार्थ जीव में कोई छेड़छाड़ नहीं करती बल्कि उसके गुण के अनुसार उसका विकास करती है।
- हर बिखरी अवस्था से प्रदूषण को मिटाने हेतु रासायनिक मिलन कर एक कण से भूगोल बनाकर गुणात्मक कर देने की क्रिया का नाम ही प्रकृति है।
- प्रकृति किसी भी निर्माण अधिनियम अवस्था को रहस्य में रखती है जब उसका निर्माण हो जाता है तभी उसकी जानकारी प्राप्त होने देती है।
- प्रकृति स्वाभाविक मिलन से रसायन का निर्माण करती है जिससे कर्म की यात्रा पूर्ण होती है।
- आध्यात्मिक विज्ञान सृजन है और भौतिक विज्ञान उसका परिणाम है।
- हर वह अवस्था न्याय की होती है जब व्यक्ति अपने गुण का सहयोगी होता है। विपरीत गुण का सहयोग ही अन्याय है।
- भावनात्मक सुगन्ध से ही अस्त्र-शस्त्र का निर्माण होता है। जिससे वह व्यक्ति अपनी विधा का निर्माण करके चला जाता है।
- पूर्व जन्म की बची हुई इच्छा ही प्रवृत्ति का रूप धारण करती है, और इन्सान जिस चीज का भोग करता है उसका परिणाम उसकी प्रवृत्ति के अनुसार होता है।
- विशेष ज्ञान को विज्ञान कहते है, मानव प्रकृति का विशेष ज्ञान है इसलिए मानव एक विज्ञान है।
- इच्छा उत्पन्न होना मानव का स्वभाव है, यदि उत्पन्न होने वाली हर इच्छा पूरी हो जाय तो इन्सान मिट जाता है, बची हुई इच्छा ही पुर्नजन्म का कारण होती है।
- सुख दुःख प्रकृति द्वारा कराया गया एहसास महज सही और गलत की पहचान के लिए है पर आनन्द सकारात्मक भाव का परिणाम है, जो प्रकृति का सृजन करती है।

सूर्य सिद्धांत भाग - 3

सूर्य + जीवन = स्वरूप

सूर्य सिद्धांत प्रदूषण को सजीवता के दर्पणीय मिलान से प्रदूषण मिटाकर एक गुण का पदार्थ बना देता है।

अशोक मानव

जब जीव की संरचना बीज रूप में होती है तो कई परतो से अपने गुणों की सुरक्षा करती है। जो मौन स्तूप बनकर अपने गुणात्मक प्रकाश का फैलाव करती है अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए और शक्तिशाली बनाता रहता है जब उसकी शक्ति पूर्ण हो जाती हे तब बीज जीवन धारण कर लेता है पर बीज की यदि कोई परत हटा दी जाय तो उसकी ऊर्जा विखर जाती है और वह जीवन नहीं धारण कर पाता है।

सूर्य प्रकाश जल पर पड़ने से ऊष्मा बनती है जिसमें सृष्टि निर्माण की गन्ध आध्यात्मिक विज्ञान के रूप मे छिपी होती है जो अपने ही गुण के मिलन के मन्थन में जीव की जीवनी की वैज्ञानिकता गन्ध रूप में आत्मिक संरचना कर देती है जिससे सूर्य प्रकाश जुड़कर जीव ज्योति बना देता है यही स्वरूप आध्यात्मिक विज्ञान है जो जीवन धारण कर लेता हे और उचित जलवायु में अपनी उत्पत्ति कर लेता है जिसका स्वरूप भौतिक विज्ञान के रूप में विकास करता है और उसकी आध्यात्मिक विज्ञान के रूप में अन्दर से कार्य करती है इस प्रकार आध्यात्मिक और भौतिक विज्ञान मिलकर सृष्टि की संरचना को आगे बढ़ाते है। आध्याात्मिक विज्ञान जो कि जीव की जीवनी को गन्ध रूप में विद्यमान होता है वह अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु स्वरूप का विकास करता है जब वह दिखायी देने लगता है तो उसी को मानव भौतिक विज्ञान कहने लगता है पर वह परिणाम है जो जीवनी के उद्देश्य के अनुसार स्वरूप का विकास करता है जिसमें सुरक्षा, प्रकृति के गुणों की पहचान और अपने निर्माण की कला छिपी होती है। इसीलिए गुण पद्वति के बदले ही जीव स्वरूप का परिवर्तन हो जाता है। यही जीव पदार्थ का निर्माण करते है जिसे मानव भौतिक विज्ञान का नाम देता है। पर यही जीव अपने पद्वति के गुण की गन्ध का निर्माण कर आध्याात्मिक विज्ञान का भी विकास करते है। जो अपनी पद्वति को बढ़ाने के लिए जीवनी बनाकर प्रकाश को जोड़ने के लिए ईधन का कार्य करते है इसी निर्माण के सत् से प्रकाश का भी निर्माण हो जाता है जो दिखायी नही देता है।

जीव की आध्यात्मिक संरचना आत्मा चितरूप में जीवन के मध्य में होती है जहॉ से जीव का जड़ और तना का विकास होता है जिसमें जड़ उसके आवश्यकता की पूर्ति करता है और तना जिस गुण का निर्माण करने के लिए जीवन धारण करता है उसका निर्माण करता है इस आत्मा रूपी चित के स्वरूप विकास में कई परते होती है जो उसके निर्माण की आवश्यकता है इसी परतों से उसकी ऊर्जा नियंत्रित होकर अपने स्वरूप का विकास करते हुए अपने गुण का फल बनाती है और अपनी सुरक्षा का प्रकाश बनाती है जिससे उसका फल और स्वरूप सुरक्षित रहता है इस परत से उसका गुण गन्ध शक्तिशाली होकर अपनी गति को तेज कर लेता है जिससे उसका फैलाव हर तरफ हो जाता है। अपने इसी स्वरूप निर्माण से जीव अपने पैदा होने का उद्देश्य पूरा कर पाता है इसलिए मानव को अपने स्वरूप या प्रकृति के स्वरूप की काट छांट अपने सुविधानुसार नहीं करनी चाहिए ऐसा करने से जीव के निर्माण में अवरोध उत्पन्न होता है। जब जीव की संरचना बीज रूप में होती है तो कई परतो से अपने गुणों

की सुरक्षा करती है। जो मौन स्तूप बनकर अपने गुणात्मक प्रकाश का फैलाव करती है अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए और शक्तिशाली बनाता रहता है जब उसकी शक्ति पूर्ण हो जाती हे तब बीज जीवन धारण कर लेता है पर बीज की यदि कोई परत हटा दी जाय तो उसकी ऊर्जा विखर जाती है और वह जीवन नहीं धारण कर पाता है। इसलिए प्राकृतिक स्वरूपों के साथ छेड़ छाड़ करना मानव की अवैज्ञानिकता है जो आध्यात्मिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान दोनों को नष्ट करता है।

जीव, बीज पदार्थ की परतीय संरचना आध्यात्मिक और भौतिक विज्ञान का परिणाम है जो स्तूपीय स्वरूप है इसी स्तूप रूवरूप से जीव बीज पदार्थ रश्मी का उत्सर्जन करके अपनी सुरक्षा करते है और अपनी ऊर्जा को नियंत्रित कर शक्तिशाली बनाते हुए उसका फैलाव पूरे ब्रह्माण्ड में करते है। इसी स्तूपीय व्यवस्था से प्रकृति की भौगोलिक संरचना बनती है जो जीव उत्पत्ति के लिए प्राकृतिक वातावरण बनाने की क्रिया करती है। इसी प्रक्रिया से जीव, पदार्थ, गुण गन्ध प्रकाश का निर्माण होता है। यही क्रिया सृष्टि चक्र है जो एक दूसरे के सहयोग से बनकर एक दूसरे का सहयोगी हो जाती है।

जिस प्रकार सृष्टि का विकास परतीय स्तूप के स्वरूप के बगैर नहीं सम्भव हो सकता है, उसी प्रकार जीवन में आने वाली रूकावट उसकी जीवनी को बढ़ा देती है इस प्रक्रिया से जीवनी को रूकावट परत बनकर और शक्तिशाली बनाती जाती है जिससे जीवनी की ऊर्जा नियंत्रित होकर जीवन को आगे बढ़ाती है। इसी रूकावट के कारण जीवन रेखा ऊपर नीचे होकर

मानव प्राकृतिक रूप से नहीं अपने अनुसार चालाकी पूर्ण तरीके से जीवन जीना चाहता है जिसमें गुण नही वैज्ञानिकता नही सिर्फ अपना हित छिपा होता है जो प्रकृति को पीड़ा पहुचाकर प्रदूषित करता जा रहा है जिसका परिणाम विनाश होता है। मानव को अपने अन्दर ठहर कर सोचना चाहिए कि क्या यह सृष्टि उसके झूठ, चालाकी पूर्ण तरीके से चल रही है? यदि ऐसा प्रकृति के सभी जीव पदार्थ करने लगे तो सृष्टि सम्भव होगी?

गतिमान होती रहती है और जीवन को आगे बढ़ाने का ईधन मिलता रहता है। जब ईधन खत्म हो जाता है जीवन रेखा एक सीध में आ जाती है और जीव की मृत्यु हो जाती है। प्रकृति की यही क्रिया जैविक संरचना को गतिमान करती है जो सूर्यप्रकाश से ही सम्भव होता है। मानव प्राकृतिक रूप से नहीं अपने अनुसार चालाकी पूर्ण तरीके से जीवन जीना चाहता है जिसमें गुण नही वैज्ञानिकता नही सिर्फ अपना हित छिपा होता है जो प्रकृति को पीड़ा पहुचाकर प्रदूषित करता जा रहा है जिसका परिणाम विनाश होता है। मानव को अपने अन्दर ठहर कर सोचना चाहिए कि क्या यह सृष्टि उसके झूठ, चालाकी पूर्ण तरीके से चल रही है? यदि ऐसा प्रकृति के सभी जीव पदार्थ करने लगे तो सृष्टि सम्भव होगी? कही न कही कोई सत् चाहे वह प्रकृति हो विज्ञान ईश्वर, परम् या सूर्य सिद्धान्त की अटलता जो दूसरो से न प्रभावित होकर गुणों के अनुसार क्रियाशील होता है उसी से सृष्टि का संचालन होता है। इनमें से किसी न किसी को सत् मानकर मानव को सूर्य सिद्धान्त की अटलता के अनुसार जीवन को बनाकर दूसरो से प्रभावित न होकर अपनी प्रकृति के अनुसार सत् पथ पर चलना शुरू कर देना चाहिए तभी वह जीवन की वास्तविकता को बनाकर आनन्द पूर्ण जीवन जी पायेगा। मानव अपने आप को सबसे ज्ञानी प्राणी मानकर अपने आप को धोखा दे रहा है जब कि वास्तविकता यह है कि मानव प्रकृति का सबसे अधिक असंतुष्ट प्राणी बनकर जीवन जी रहा है।

"सूर्य सिद्धान्त स्वयं के परम् रूप से अणु निकलकर अनेको जगह धरा का रूप लेते है जो अपने ही प्रकाश को निर्माण के लिए रोकता है जिससे प्रकाश की गति उपर से नीचे जाने लगती है जो प्रकाश वर्ष की गति के कारण धरा की गन्ध को हवा बनाकर गन्ध की पद्वति का विकास करने हेतु कर्म रूपी जीवनी से जीवन का विकास होता है, विषय की गन्ध ही जीवन को बढ़ाती है जो किसी न किसी परिस्थिति रूपी कोई गन्ध नहीं बचाती है तो जीवन लाईन सीधी हो जाती है जिससे व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। इसे बढ़ाने के लिए शान्त मन से मन रूपी सूर्य से प्रकाश वर्ष की गति बन जाती है जिससे अपने अन्दर की गन्ध से अपने जीवनी के कार्य काल को बढ़ा लता है।"

प्रश्न हमारे
उत्तर श्री अशोक मानव जी के

प्रश्न : ध्यान कैसे करें ?

उत्तर : ध्यान किया नहीं जाता स्वत हो जाता है जब विषय के लिए जितना जरूरत होती है उतना विषयात्मक घेर हर किसी का हो जाता है बाह्य ध्यान वास्तविक ध्यान में सिर्फ अवरोध उत्पन्न करता है ।

प्रश्न : सौर ऊर्जा क्या है ?

उत्तर : सौर ऊर्जा का प्राकृतिक तापमान एक होता है पर यही तापमान जब व्यक्तिगत हो जाता है तो सबका अलग-अलग होकर स्व विषय को पूर्ण करने का रासायनिक योग बनता है जो व्यक्तिगत सौर ऊर्जा बन जाता है ।

प्रश्न : अध्यात्म क्या है ?

उत्तर : मानव स्व भजन ग्राही होता है खाए कुछ भी पर उसमें से जो उसके गुण निर्माण का होता है उसे ही अपने शरीर विज्ञान में मिलता है जो अध्यात्म है वही जीवन को सरल करने के लिए उसे कर्तव्य बनकर पूरा करता है ।

प्रश्न : आवागमन से मुक्ति कैसे ?

उत्तर : जब भी प्रकृति में प्रदूषण बढ़ने लगता है तब प्रकृति इस मृदा में जैविक संरचना कर देती है जिससे जीव प्रदूषण को अपना आहार बनाकर मिटा देता है और अपनी मृदा को सिद्धांत कर आवागमन से मुक्त होकर एक गुणधारी स्तंभ बन जाता है ।

यदि किसी पाठक के मन में कोई भी सामाजिक या प्राकृतिक प्रश्न उठ रहा है वह उस प्रश्न का निदान चाहते हैं तो पाठक हमें अपना प्रश्न निम्न पते पर भेज सकते हैं। निदान प्रश्न के अगले अंक में दिया जाएगा।

आप अपना प्रश्न डाक द्वारा या ईमेल पर भेज सकते हैं

डाक पता : प्रकृति मेल, सर्या आश्रम, मानव नगर (निकट आई.आई. एस.ई),
कल्याणपुर, लखनऊ-226022, उ0 प्र0
ईमेल-info@parkritimail.com, editor.prakritimail@gmail.com
9807636072, 7376495194

एमएसएमई से औद्योगिक क्षेत्र में क्रांति

डॉ. बी. आर. नलवाया
मंदसौर

मध्य प्रदेश में अधोसंरचना विकास एवं औद्योगिक नीतियों और निवेश प्रोत्साहन से उद्योगों को ऑक्सीजन मिला है, जिससे औद्योगिक क्षेत्र में क्रांति आई है। देशी विदेशी उद्यमी मेहमानों ने उद्योगों को लगाने में रुचि दिखाई है। अब एमएसएमई सेक्टर में निवेश की सीमा ढाई करोड़रुपए व टर्नओवर दुगना किया गया है। इसमें ढाई करोड़ तक निवेश 10 करोड़ टर्नओवर वाली कंपनी 'सूक्ष्म' कहलाएगी। 25 करोड़ निवेश100 करोड़ टर्नओवर वाली कंपनी, 'लघु,' और 125 करोड़ निवेश 500 करोड़ टर्नओवर वाली कंपनी 'मध्यम' कहलाएगी। अभी 1 करोड़ एमएसएमई के जरिए करीब 7.50 करोड़ लोगों को रोजगार मिलता है।एमएसएमई के लिए क्रेडिट गारंटी 5 करोड़ से बढ़कर 10 करोड़ कर दी गई,इससे 5 साल में 1.5 लाख करोड़ अधिक कर्ज उपलब्ध होगा। बहुत छोटे उद्योगों के लिए 5 लाख सीमा वाले 10 लाख क्रेडिट कार्ड लॉन्च होंगे, उद्यम पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन करना होगा। पहली बार उद्योगों के लिए नई योजना ऐलान किया गया है। भारत सरकार एमएसएमई क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं और नीतियां बनाती और लागू करती हैं। इसके साथ ही समय-समय पर इसमें संशोधन भी किया जाता है, ताकि औद्योगिक क्षेत्र को बढ़ावा मिले।

एमएसएमई का मतलब सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (Micro, Small and Medium Enterprises) है। यह भारत सरकार का मान्यता प्राप्त एक ऐसा क्षेत्र है,जिसमें छोटे और मध्यम स्तर के व्यवसाय शामिल होते हैं। यह व्यवसाय विनिर्माण सेवा या व्यापार क्षेत्र में हो सकते हैं और इन्हें उनके निवेश और वार्षिक कारोबार के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। इस दिवस पर उद्योग के बारे में जानकारी लेना-देना तथा नवोदय में नवीन उद्यमी को प्रेरित करके प्रोत्साहित करने का यह दिवस नव उद्यमी को प्रेरणा देने के लिए महत्वपूर्ण दिन होता है। मध्य प्रदेश के प्रत्येक जिले में जिला उद्योग व्यापार केंद्र द्वारा इस दिवस को मनाया जाना चाहिए।

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों को राज्य की आर्थिक प्रगति का प्रमुख आधार मानते हुए, 27 जून को अंतरराष्ट्रीय सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम दिवस पर रतलाम के शहीद स्मारक मैदान में "रीजनल इंडस्ट्री स्किल एंड एंप्लॉयमेंट कॉन्क्लेव" एमपी 2025 का आयोजन किया गया। अब एमएसएमई सेक्टर में 30 दिनों के भीतर उद्योग शुरू करने की पहल हो चुकी है। ज्ञात रहे वर्ष 2025 को उद्योग एवं रोजगार वर्ष घोषित किया गया है। देश के महानगरों में किए गए रोड शो से एक लाख करोड़ रुपए से अधिक के निवेश, इसके साथ ही यूके तथा जर्मनी की यात्रा में 78,000 करोड़रुपए के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए इन संयुक्त प्रयासों से अब तक कुल 4,71,000 करोड़रुपए का निवेश और लगभग चार लाख से अधिक व्यक्तियों को रोजगार के अवसर प्राप्त होगा। देश विभिन्न राज्यों के जिले में निवेश प्रोत्साहन हेतु केंद्र शुरू किए गए हैं। एक समय मध्य प्रदेश बीमार राज्य की गिनती में था, 2047 तक पूर्ण विकसित देश में के लक्ष्य को पाने के लिए अथक प्रयास किया जा रहे हैं।

केंद्रीय बजट 1 फरवरी 2025 में एमएसएमई के माध्यम से रोजगार बढ़ाने का प्रयास किया गया है।सरकार द्वारा दी गई विभिन्न सेक्टर को रियासत से देश में अगले वर्षों में कुल 2 करोड़ रोजगार पैदा होने का अनुमान लगाया गया है। उसे देखा जाए तो एमएसएमई की इकाइयों में बड़े उद्योगों की तुलना में चार से पांच गुना अधिक रोजगार मिलता है। उल्लेखनीय है कि 12.50 लाख इकाइयां एमएसएमई प्रदेश में कार्यरत, इसके 66.21 लाख से अधिक लोगों को रोजगार मिला हुआ है, इन इकाइयों में 42,942 करोड़ रुपए का निवेश है, इसके साथी एमएसएमई में वार्षिक टर्नओवर 639045 करोड़ रुपए का होता है। नव उधमियों के उद्योग स्थापना के लिए सहजता और सरलता का माहौल बनाने के क्रम में 37 भागों में 2483 अनुपालन काम किए गए हैं, दूसरी तरफ कानूनी सुधार के अंतर्गत 920 पुराने अधिनियमों को निरस्त किया गया साथ ही 67 प्रावधानों को अपराध मुक्त किया गया है।

वैसे तो मध्य प्रदेश में शुरूआत से बड़े उद्योगों को प्रोत्साहित करने की दिशा में काम होता रहा, इसे सरकार को अच्छा राजस्व मिलता है, परंतु रोजगार के उतने अवसर सृजित नहीं हो पाते जितने की प्रदेश को दरकार है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मनशा भी छोटे-छोटे उद्योग की स्थापना करके आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देने की भी है, छोटे उद्यम न सिर्फ अब रोजगार का बड़ा जरिया है बल्कि बड़े स्तर पर रोजगार भी उपलब्ध कराते हैं यही वजह है कि प्रदेश में एमएसएमई को बढ़ावा देने के लिए निवेश प्रोत्साहन दिया जा रहा है अब तक केंद्र सरकार ने एमएसएमई का दायरा भी बढ़ा दिया है। सरकार भी नए-नए क्षेत्रों में संभावनाएं तलाश रही हैं, मध्य प्रदेश में उद्योग क्षेत्र में विकास की अपार संभावना है। नई संभावनाओं को लगातार देखते हुए भारतीय उद्यमिता संस्थान अहमदाबाद मध्य प्रदेश में अध्ययन भी करेगा।

आतंकवाद पर चीन और पाकिस्तान के दोहरे पैमाने

प्रमोद भार्गव

शिवपुरी म.प्र.

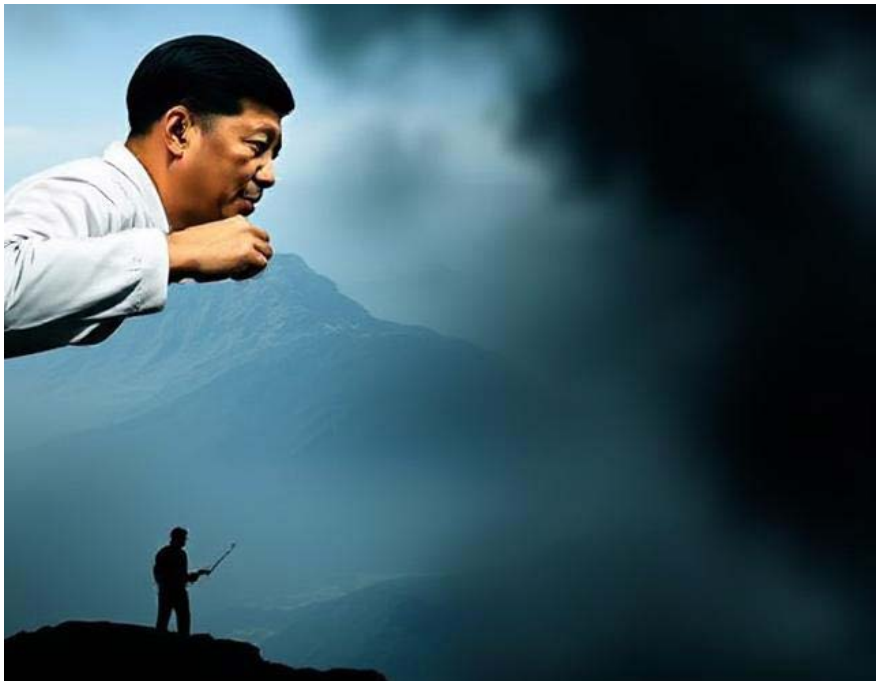

आतंकवाद के मसले पर चीन के किंगदाओ नगर में हुई षंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की बैठक में एक बार फिर चोर-चोर मौसेरे भाई चीन और पाकिस्तान ने भारतीय हितों के परिप्रेक्ष्य में दोगलापन दिखाया है। इस बैठक में सदस्य देशों के रक्षा मंत्री उपस्थित थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा आतंकवाद के खात्मे के लिए किए जा रहे आवाहन ने वैश्विक स्तर पर ऐसा माहौल बनाने का काम किया है कि इस समस्या को जड़ से उखाड़ दिया जाए। लेकिन एससीओ की बैठक में जिस दस्तावेज को साझा हस्ताक्षर के लिए सामने लाया गया तब उसमें पहलगाम में हुए आतंकी हमले को षामिल नहीं किया गया। जबकि इस हमले में 26 भारतीय नागरिक आतंकवादियों ने मार दिए थे। इस दस्तावेज में बलूचिस्तान का नाम हैं। जबकि बलूचिस्तान के नागरिक पाकिस्तान के विरुद्ध स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ रहे हैं। अर्थात इस दस्तावेज को पढ़ने के बाद भारतीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कड़ा रुख अपनाते हुए इस पर दस्तखत करने से साफ इंकार कर दिया। इस संगठन पर चीन का प्रभाव है और चीन ही इस बार संगठन का अध्यक्ष देश है। भारत ने पहलगाम में हुए आतंकी हमले को न केवल पक्षपातपूर्ण माना, बल्कि इसे पाकिस्तान और उसके हितचिंतक चीन की हरकत माना। अतएव राजनाथ सिंह ने दस्तखत नहीं किए। इस संगठन के दस्तावेज की उपयोगता तभी है, जब बैठक में उपस्थित सभी सदस्य देश मुद्दों पर सहमत होकर हस्ताक्षर करने के साथ साझा बयान भी जारी करें। तब कहीं इस दस्तावेज पर सहमति बन पाती है।

इस संगठन में 10 देश परस्पर जुड़े हितों को मजबूत करने के लिए षामिल हैं। इन देशों में भारत, चीन, पाकिस्तान, रूस, ईरान, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, उज्बेकिस्तान, बेलारूस और तजाकिस्तान षामिल हैं। 2001 में इस संगठन का गठन हुआ था। आरंभ में चीन और रूस समेत पांच देश इसमें षामिल थे। 2001 में उज्बेस्तिन, 2017 में भारत और पाकिसतान, 2022 में ईरान एवं 2024 में बेलारुस इस संगठन में भागीदार हुए। इन देशों की कुल जीडीपी में 30 फीसदी और दुनिया की आबादी में 40 प्रतिशत हिस्सेदारी है। यानी इस संगठन की इन देशों की अर्थव्यवस्था के लिए परस्पर भागीदारी जरूरी है। लेकिन जब राजनाथ सिंह ने दस्तावेज की इबारत को पक्षपात पूर्ण पाया तो उन्होंने खुले षब्दों में कहा, 'भारत आतंकवाद पर दोहरे मापदंड मंजूर नहीं करेगा। आतंक को बढ़ावा देने वाले देशों की खुली निंदा होनी चाहिए। कुछ देशों ने सीमा पार आतंकवाद को न केवल अपनी नीति ही मान लिया है, बल्कि अपने देश में उन्हें संरक्षण भी देते हैं। बावजूद इस हकीकत को नकारते हैं। ऐसे दोहरे मापदंडों के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए। उन्हें अब समझना होगा कि आतंकवाद के अधिकेंद्र (एपीसेंटर) अब सुरक्षित नहीं रह गए हैं।' नए भारत के इस

कड़े संदेश ने उपस्थित रक्षा मंत्रियों को हैरानी में डाल दिया। अतएव न तो कोई सहमति बन पाई और न ही संयुक्त बयान जारी हो पाया। इस परिणाम ने समूची दुनिया को संदेश दे दिया है कि अब भारत अपने हितों से समझौता करने के लिए कतई तैयार नहीं है।

दरअसल भारत चाहता था कि एससीओ पहलगाम हमले की निदां करे और पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद पर स्पश्ट रुख अपनाए। लेकिन चीन की एक बार फिर दगा की दोगली नीति सामने आ गई। एक सदस्य देश ने इस पहलगाम मुद्दे को दस्तावेज में षामिल करने से असहमति जता दी। वस्तुतः राजनाथ सिंह ने कड़ा रुख अपना लिया और दस्तखत नहीं किए। इस साझा बयान पर हस्ताक्षर नहीं करने का बड़ा कारण दस्तावेज न तो निश्पक्ष था और न ही इसमें कोई पारदर्शिता थी। यह भी साफ नहीं किया कि आखिर इस अभिलेख को किन देशों ने तैयार किया है। यह दस्तावेज आतंकवाद से जुड़े तथ्यों के विपरीत था। भारत के जम्मू-कश्मीर प्रांत में 22 अप्रैल को पहलगाम में सैलानियों पर बड़ा हमला हुआ था। इसमें 26 निर्दोश लोग मारे गए थे। आतंकियों द्वारा किया यह हमला मानवता के लिए क्रूरता का चरम था।

इसलिए भारत ने इस आतंकी हमले को दस्तावेज में षामिल करने की मांग भी की थी। परंतु इस मांग को नमंजुर कर दिया गया। अध्यक्षता कर रहे चीन का यह रुख पाकिस्तान के प्रति उदारता जताता है, जो सर्वथा पक्षपातपूर्ण है। जबकि बलूचिस्तान की आतंकी गतिविधियों से जुड़ी जफर एक्सप्रेस की घटना इसमें दर्ज थी। इस संगठन का लक्ष्य षामिल देशों की सुरक्षा, आर्थिक और राजनीतिक सहयोग को बढ़ाने के साथ आतंकवाद, नशीले पदार्थों की तस्करी और साइबर आपराध जैसे मसलों पर सटीक रणनीति बनाकर उस पर संयुक्त पहल करना भी है। लेकिन जिस तरह से पहलगाम हमले को नजरअंदाज किया गया उससे साफ है कि

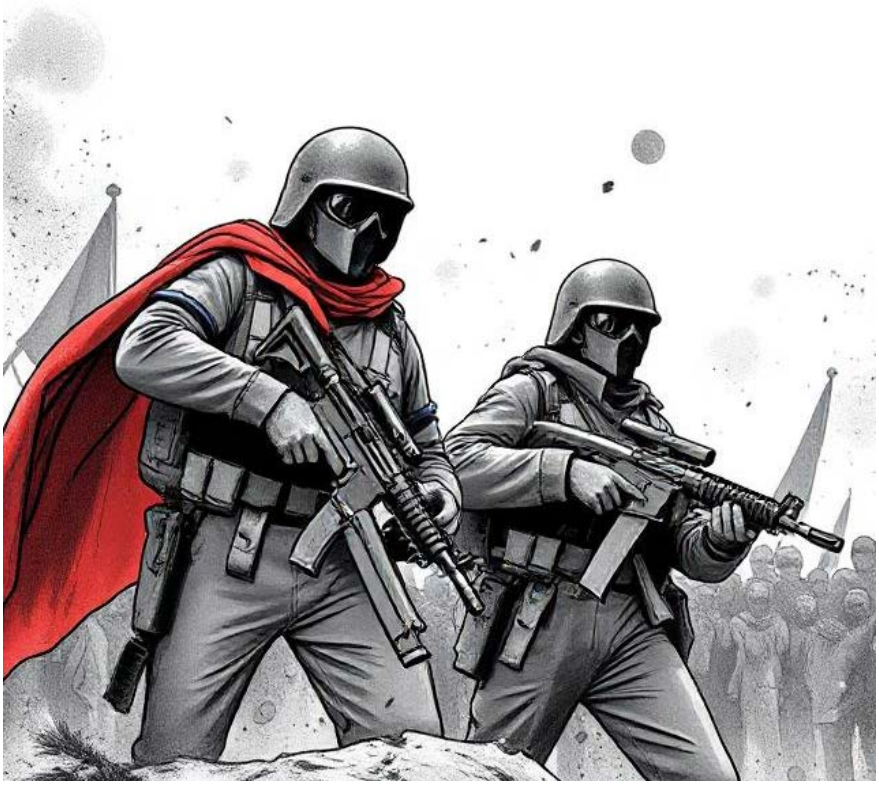

अध्यक्ष देश की नियत साफ नहीं है।

इस तरह का दोहरा चरित्र इसलिए खतरनाक है कि इसने क्षेत्रीय सहयोग से जुड़े मुद्दों पर पक्षपातपूर्ण रवैया अपनाया। जिसके चलते आतंकवाद की समस्या से निपटना जटिल होगा। क्योंकि पाकिस्तान भारत के विरुद्ध लगातार आतंकी खेल, खेलता हुआ खून की इबारतें लिख रहा है। इस सच्चाई को समूची दुनिया भलीभांति जानती है। क्योंकि भारत आतंक से पिछले ढाई दशक से निरंतर लड़ाई लड़ रहा है। स्वयं चीन ने बीजिंग में कुछ वर्श पहले हुए ब्रिक्स देशों के सम्मेलन के घोशणा पत्र में इस तथ्य को शामिल किया था कि कई बड़े आतंकवादी संगठन पाकिस्तान के सुरक्षित ठिकानों से अपनी गतिविधियां चलाते हैं।

पहलगाम में किए निरंकुश हमले में भी पाकिस्तान से आए आतंकियों का हाथ था। बावजूद एससीओ की बैठक के संयुक्त बयान में पहलगाम को नजरअंज करना दोगलापन नहीं तो और क्या है? एससीओ में आतंकवाद पर शिकंजा नहीं कसना इसलिए और चिंताजनक है, क्योंकि पाकिस्तान परमाणु षक्ति संपन्न देश है और वहां अनेक आतंकी संगठन सक्रिय हैं। इन संगठनों में लश्कर-ए-तैयबा, हिजबुल मुजाहिद्दीन और जैश-ए-मोहम्मद प्रमुख हैं। अमेरिका पर आतंकी हमला करने वाले ओसामा बिन लादेन को ही पाकिस्तान ने षरण दी थी। उसका अंत अमेरिकी वायुसेना ने पाकिस्तान में घुसकर किया था। संयुक्त राश्ट्र द्वारा जारी सूची में बताया है कि पाक में 136 आतंकवादियों के ठिकाने हैं और यहां 22 आतंकवादी हथियारबंद संगठनों को पाक सेना संरक्षण दे रही है। वाइदवे इन आतंकियों के हाथ परमाणु हथियार लग जाते हैं तो ये मानवता के विरुद्ध कैसी तबाही मचाएंगे, यह कहना अनुमान से परे है। अतएव राजनाथ सिंह ने अभिलेख पर दस्तखत न करके दुनिया को यह संदश दे दिया है कि भारत आतंक के विरुद्ध लड़ाई लड़ता रहेगा।

दुर्लभ चंद्रमा क्रिस्टल जो पृथ्वी को शक्ति दे सकता है

विजय गर्ग

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर, मलोट, पंजाब

चंद्र क्रिस्टल सामग्री से बना है जो पहले वैज्ञानिक समुदाय के लिए अज्ञात है और इसमें परमाणु संलयन प्रक्रिया के लिए एक प्रमुख घटक है, बिजली उत्पादन का एक रूप जो उसी बलों को नुकसान पहुंचाता है जो आकाशगंगा में सूर्य और अन्य सितारों को ईंधन देता है।

क्रिस्टल 2020 में चंद्रमा से एकत्र किए गए चंद्र बेसाल्ट कणों में पाया गया था और चीन को अमेरिका और पूर्व सोवियत संघ के पीछे एक नए चंद्र खनिज की खोज करने वाला तीसरा देश बनाता है। चीनी चंद्रमा मिशन दिसंबर 2020 में तूफानों का महासागर में उतरा और 1970 के दशक के बाद से पहला चंद्र नमूना वापसी मिशन था।

1.7 किलोग्राम से अधिक चंद्र नमूने एकत्र किए गए और पृथ्वी पर सुरक्षित रूप से वितरित किए गए।

बीजिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑफ यूरेनियम जियोलॉजी ने चांद की पौराणिक चीनी देवी चांग ई के बाद फॉस्फेट मिनरल चेंजेसाइट-(वाई) का नाम दिया है. क्रिस्टल पारदर्शी और मोटे तौर पर एक ही मानव बालों की चौड़ाई है। यह चंद्रमा के एक क्षेत्र में बना था जो लगभग 1.2 बिलियन साल पहले ज्वालामुखी सक्रिय था।

इस क्रिस्टल में पाए जाने वाले प्राथमिक अवयवों में से एक हीलियम -3 है, जो वैज्ञानिकों का मानना है कि परमाणु संलयन रिएक्टरों के लिए एक स्थिर ईंधन स्रोत प्रदान कर सकता है। तत्व पृथ्वी पर अविश्वसनीय रूप से दुर्लभ है, लेकिन यह चंद्रमा पर काफी प्रचलित लगता है। चीन का अगला चंद्रमा मिशन 2024 में चांग ई 6 होने की उम्मीद है, जो चंद्रमा के दूर की ओर से पहले नमूने एकत्र करने का प्रयास करेगा - जो कभी पृथ्वी का सामना नहीं करता है।

हालांकि वैज्ञानिकों के लिए इस तरह के ईंधन स्रोत पर कोई वित्तीय अनुमान लगाना जल्दबाजी होगी, लेकिन यह निस्संदेह बेहद महंगा होगा। निश्चित रूप से, क्रिस्टल को चंद्रमा से वापस लाने की बात है, विशेष रूप से बड़ी मात्रा में जो ईंधन संलयन रिएक्टरों के लिए आवश्यक हैं।

दशकों से, वैज्ञानिकों को हीलियम -3 और परमाणु संलयन के लिए ईंधन के संभावित स्रोत द्वारा साज़िश किया गया है। परमाणु संलयन प्रतिक्रियाएं स्वाभाविक रूप से होती हैं, जब दो प्रकाश परमाणु अत्यधिक दबाव और गर्मी के तहत एक भारी में विलय हो जाते हैं। वे सितारों के अंदर होते हैं, लेकिन मनुष्यों को अभी तक इस प्रक्रिया को किकस्टार्ट करने के लिए पर्याप्त ऊर्जा के साथ एक संलयन रिएक्टर बनाना है।

यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी के अनुसार, हीलियम -3 विशेष रूप से आशाजनक है क्योंकि यह अन्य तत्वों की तुलना में काफी

कम विकिरण और परमाणु अपशिष्ट पैदा करता है। वर्तमान परमाणु विखंडन प्रक्रिया, जिसका उपयोग परमाणु ऊर्जा संयंत्रों में किया जाता है, न केवल ऊर्जा, बल्कि रेडियोधर्मिता को जारी करती है, और खर्च किए गए परमाणु ईंधन को यूरेनियम, प्लूटोनियम और अन्य कचरे में पुनः संसाधित किया जाना चाहिए। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसने गंभीर सुरक्षा चिंताओं को उठाया है, और परिणामस्वरूप, वैज्ञानिक विखंडन के बजाय परमाणु संलयन से परमाणु शक्ति बनाने का एक तरीका खोज रहे हैं। संलयन प्रक्रिया के दौरान, रेडियोधर्मी अपशिष्ट का उत्पादन नहीं किया जाता है, संभवतः एक सुरक्षित और अधिक कुशल ईंधन स्रोत बनाता है।

पूरी तरह से लोड किए गए स्पेस शटल कार्गो बे के बराबर लगभग 25 टन हीलियम -3, एक साल के लिए अमेरिका को बिजली दे सकता है। अनुमानों के अनुसार, इसका मतलब यह है कि हीलियम -3 का संभावित किफायती मूल्य $ 3वीएन एक टन है।

अंतरिक्ष एजेंसियों के साथ कई निजी कंपनियों और देशों ने हीलियम -3 के लिए चंद्रमा को खदान करने के अपने इरादों का संकेत दिया है, और यह नवीनतम खोज दौड़ को किकस्टार्ट कर सकती है।

वैज्ञानिकों ने कैंसर के इलाज में एक सफलता पाई है, और यह समुद्र के भीतर गहरी है------

मिसिसिपी विश्वविद्यालय के नेतृत्व में वैज्ञानिकों की एक टीम ने समुद्री खीरे में एक दुर्लभ चीनी की खोज की है जो पारंपरिक उपचारों के खतरनाक दुष्प्रभावों के बिना कैंसर को फैलने से रोकने में मदद कर सकती है

ग्लाइकोबायोलॉजी पत्रिका में प्रकाशित अध्ययन से पता चलता है कि समुद्र के ककड़ी होलोथुरिया फ्लोरिडाना में पाया जाने वाला एक यौगिक, सल्फ -2 को अवरुद्ध करता है, एक एंजाइम जो कैंसर कोशिकाओं को बढ़ने और मेटास्टेसाइज करने के लिए उपयोग करता है। यौगिक भविष्य के कैंसर उपचारों में एक महत्वपूर्ण उपकरण बन सकता है।

चौथे साल के डॉक्टरेट छात्र और अध्ययन के प्रमुख लेखक मारवा फराग ने कहा, "समुद्री जीवन अद्वितीय संरचनाओं के साथ यौगिक पैदा करता है जो अक्सर दुर्लभ होते हैं या स्थलीय कशेरुकी में नहीं पाए जाते हैं।" "समुद्री खीरे में चीनी यौगिक अद्वितीय हैं। वे आमतौर पर अन्य जीवों में नहीं देखे जाते हैं।

सल्फ -2 ग्लाइकन, चीनी अणुओं को बदलने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जो सभी मानव कोशिकाओं की सतह को कोट करते हैं और संचार और प्रतिरक्षा प्रतिक्रियाओं को विनियमित करते हैं। जब यह एंजाइम ग्लाइकन को संशोधित करता है, तो यह कैंसर कोशिकाओं को टूटने और फैलने में मदद करता है। सल्फ -2 को अवरुद्ध करने से ट्यूमर स्वस्थ ऊतकों पर आक्रमण करने से रोक सकता है।

"यह चीनी अनिवार्य रूप से सेलुलर 'वन,' की छंटाई को रोकती है" डॉ। फार्माकोग्नॉसी के एसोसिएट प्रोफेसर विटोर पोमिन। "अगर हम उस एंजाइम को रोक सकते हैं, तो हम कैंसर के प्रसार के खिलाफ लड़ रहे हैं

शोध टीम, जिसमें जॉर्जटाउन विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक भी शामिल थे, ने चीनी के प्रभाव की पुष्टि करने के लिए प्रयोगशाला परीक्षण और कंप्यूटर मॉडलिंग का उपयोग किया। दोनों तरीकों ने लगातार परिणाम पैदा किए।

पहले से ज्ञात कुछ सल्फ -2 अवरोधकों के विपरीत, यह समुद्री ककड़ी चीनी रक्त के थक्के को प्रभावित नहीं करती है, जिससे यह मनुष्यों में उपयोग के लिए सुरक्षित हो जाती है। "यदि कोई अणु रक्त जमावट में हस्तक्षेप करता है, तो आप जानलेवा रक्तस्राव का जोखिम उठाते हैं," डॉ। जोशुआ शार्प, फार्माकोलॉजी के एसोसिएट प्रोफेसर। "यह एक नहीं है."

टीम को अब एक नई चुनौती का सामना करना पड़ रहा हैः समुद्री खीरे बड़े पैमाने पर उत्पादन के लिए फसल के लिए पर्याप्त नहीं हैं। डॉक्टर ने कहा, "इसे दवा के रूप में विकसित करने में एक समस्या कम उपज होगी." पोमिन। "तो, हमें एक रासायनिक मार्ग विकसित करना होगा

1 ग्राम यूरेनियम का निष्कर्षण और विद्युत उत्पादन क्षमता

मानवेन्द्र त्रिपाठी
लखनऊ

यूरेनियम, पृथ्वी पर पाया जाने वाला एक अत्यंत शक्तिशाली और रेडियोधर्मी तत्व है, जिसका उपयोग मुख्यतः परमाणु ऊर्जा के उत्पादन में किया जाता है। यह तत्व न केवल ऊर्जा संकट को हल करने में सहायक है, बल्कि इसकी ऊर्जा क्षमता इतनी अधिक है कि मात्र 1 ग्राम यूरेनियम से जो ऊर्जा उत्पन्न की जा सकती है, वह सामान्य पारंपरिक ईंधनों से कई हज़ार गुना अधिक होती है। लेकिन इस ऊर्जा का उपयोग तभी संभव है जब इसे वैज्ञानिक विधियों से धरती की गहराइयों से निकाला जाए, परिष्कृत किया जाए और फिर नियंत्रित रूप से प्रयोग किया जाए।

यूरेनियम को धरती के गर्भ में पाए जाने वाले खनिजों से निकाला जाता है। यह स्वाभाविक रूप से यूरेनियम ऑक्साइड के रूप में पाया जाता है, जिसे खनन द्वारा निकाला जाता है। यूरेनियम के खनन की प्रक्रिया बहुत जटिल और सावधानीपूर्वक की जाती है, क्योंकि यह एक रेडियोधर्मी पदार्थ है और इसके संपर्क में आने से स्वास्थ्य को खतरा हो सकता है। यूरेनियम निष्कर्षण की प्रक्रिया मुख्यतः तीन चरणों में पूरी होती हैः पहला चरण खनन (Mining), दूसरा मिलिंग (Milling) और तीसरा परिष्करण (Refining)। खनन के लिए या तो खुली खदान का उपयोग किया जाता है या भूमिगत खनन किया जाता है। यूरेनियम युक्त चट्टानों को मशीनों की सहायता से निकाला जाता है और फिर उन्हें प्रोसेसिंग यूनिट में भेजा जाता है।

इन चट्टानों को छोटे टुकड़ों में पीसकर उन्हें रसायनों के साथ मिलाया जाता है जिससे यूरेनियम ऑक्साइड प्राप्त होता है। इस पीले रंग के चूर्ण को 'येलोकेक' कहा जाता है। येलोकेक में यूरेनियम की मात्रा लगभग 70-90 प्रतिशत होती है। यह प्रक्रिया बहुत संवेदनशील होती है क्योंकि इसमें रेडियोधर्मी विकिरण का खतरा बना रहता है। इसके बाद इस येलोकेक को गैसीकरण की प्रक्रिया से गुजराया जाता है, जिससे यूरेनियम हेक्साफ्लोराइड गैस में परिवर्तित हो जाता है। इसके बाद इस गैस को संवर्धन (Enrichment) प्रक्रिया से गुजारा जाता है जिसमें यूरेनियम-235 की मात्रा बढ़ाई जाती है। प्राकृतिक यूरेनियम में यू-235 की मात्रा केवल 0.7% होती है, जबकि विद्युत उत्पादन हेतु इसे लगभग 3-5% तक बढ़ाया जाता है।

संवर्धित यूरेनियम को ईंधन छड़ों (fuel rods) के रूप में विशेष तौर पर बनाए गए परमाणु रिएक्टरों में प्रयोग किया जाता है। इन छड़ों को रिएक्टर के कोर में रखा जाता है जहाँ इन पर न्यूट्रॉन की बौछार की जाती है। जब यूरेनियम-235 के अणु पर न्यूट्रॉन गिरता है, तो वह दो छोटे अणुओं में विखंडित हो जाता है और इस विखंडन में अत्यधिक ऊर्जा और दो से तीन न्यूट्रॉन और निकलते हैं। यही प्रक्रिया श्रृंखलाबद्ध होती है और नियंत्रित वातावरण में यह निरंतर ऊर्जा प्रदान करती है। इस ऊर्जा का उपयोग टरबाइन घुमाने हेतु किया जाता है, जिससे विद्युत उत्पादन संभव होता है।

अब बात करें मात्र 1 ग्राम यूरेनियम की, तो इसकी ऊर्जा क्षमता वाकई अद्भुत है। वैज्ञानिकों के अनुसार, 1 ग्राम यूरेनियम से औसतन 24,000 से 25,000 किलोवाट-घंटा

(kWh) ऊर्जा उत्पन्न की जा सकती है। यह ऊर्जा इतनी अधिक है कि एक सामान्य घर जो प्रतिदिन लगभग 10 यूनिट बिजली खर्च करता है, वह करीब 7 वर्षों तक इस ऊर्जा का उपयोग कर सकता है। इसके विपरीत, यदि इतनी ही ऊर्जा कोयले से उत्पन्न करनी हो, तो लगभग 3 टन कोयले की आवश्यकता पड़ेगी। डीज़ल से यही ऊर्जा प्राप्त करने के लिए लगभग 10,000 लीटर डीज़ल जलाना पड़ेगा, जिससे भारी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन होगा।

यूरेनियम से उत्पन्न होने वाली यह ऊर्जा न केवल अधिक प्रभावी है, बल्कि दीर्घकालिक भी है। पारंपरिक ईंधन जैसे कोयला, गैस या तेल सीमित हैं और उनके जलने से प्रदूषण फैलता है। वहीं यूरेनियम के प्रयोग से प्राप्त ऊर्जा अपेक्षाकृत स्वच्छ और लंबे समय तक स्थिर रहती है। हालांकि, परमाणु अपशिष्ट (nuclear waste) का सुरक्षित निष्पादन एक बड़ी चुनौती है। ये अपशिष्ट अत्यंत रेडियोधर्मी होते हैं और हज़ारों वर्षों तक खतरनाक बने रहते हैं। इसके लिए वैज्ञानिक विशेष भंडारण प्रणाली (deep geological storage) का प्रयोग करते हैं ताकि यह पर्यावरण और जीवों को हानि न पहुँचा सके।

यूरेनियम ऊर्जा का आर्थिक पहलू भी बहुत महत्वपूर्ण है। एक बार जब संयंत्र का निर्माण हो जाता है, तो उसके संचालन की लागत अन्य ईंधन संयंत्रों की तुलना में कम होती है। परमाणु रिएक्टर वर्षों तक एक ही ईंधन से ऊर्जा उत्पन्न करते रहते हैं। इससे राष्ट्रों को ईंधन आयात पर निर्भरता कम होती है और दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा प्राप्त होती है। उदाहरण के लिए, फ्रांस अपनी विद्युत आवश्यकताओं का 70% से अधिक हिस्सा परमाणु ऊर्जा से पूरा करता है।

भारत में भी यूरेनियम आधारित परमाणु ऊर्जा का विशेष महत्व है। भारत के पास थोरियम के विशाल भंडार हैं, और यूरेनियम सीमित मात्रा में उपलब्ध है। इसलिए भारत तीन-चरणीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के तहत

यूरेनियम से शुरुआत करता है और फिर थोरियम आधारित रिएक्टरों की ओर बढ़ता है। भारत में राजस्थान, झारखंड और आंध्र प्रदेश में यूरेनियम खनन किया जाता है। वहीं "NPCIL" यानी न्यूक्लियर पावर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, परमाणु ऊर्जा संयंत्रों का संचालन करती है।

जहाँ एक ओर यूरेनियम आधारित ऊर्जा आर्थिक और पर्यावरणीय दृष्टि से लाभकारी है, वहीं इसके प्रयोग से जुड़े जोखिमों को नकारा नहीं जा सकता। चेरनोबिल (1986) और फुकुशिमा (2011) जैसे हादसों ने यह दिखाया कि यदि सुरक्षा मानकों की अनदेखी की जाए तो परमाणु ऊर्जा विनाशकारी सिद्ध हो सकती है। इसलिए हर परमाणु संयंत्र में अत्याधुनिक सुरक्षा तकनीकों का प्रयोग किया जाता है। आपातकालीन कूलिंग सिस्टम, रेडियोधर्मी निगरानी प्रणाली और प्रशिक्षण प्राप्त कर्मियों का होना अनिवार्य होता है।

यूरेनियम के साथ-साथ इससे जुड़ी वैज्ञानिक तकनीकें भी तेजी से विकसित हो रही हैं। आजकल फास्ट ब्रीडर रिएक्टर और SMRs (Small Modular Reactors) जैसे उन्नत विकल्प सामने आ रहे हैं जो कम अपशिष्ट उत्पन्न करते हैं और अधिक सुरक्षित हैं। शोधकर्ता अब थोरियम आधारित रिएक्टरों पर भी कार्य कर रहे हैं जो यूरेनियम की तुलना में अधिक सुरक्षित और भारत जैसे देशों के लिए अधिक उपयुक्त हैं।

वर्तमान समय में जब पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और जीवाश्म ईंधनों की समाप्ति की ओर बढ़ रही है, ऐसे में परमाणु ऊर्जा एक स्थायी और व्यवहारिक समाधान प्रदान करती है। 1 ग्राम यूरेनियम, जो एक छोटी सी वस्तु है, उसमें छिपी हुई ऊर्जा संभावनाएँ इतनी अधिक हैं कि वह भविष्य की ऊर्जा नीतियों को दिशा देने में सक्षम है। यदि इसका उपयोग उचित तकनीक, सतर्कता और पारदर्शिता के साथ किया जाए, तो यह मानवता के लिए वरदान सिद्ध हो सकता है।

1 ग्राम यूरेनियम की क्षमता केवल एक वैज्ञानिक आश्चर्य नहीं है, बल्कि यह आधुनिक मानव सभ्यता की ऊर्जा जरूरतों का उत्तर भी है। यह हमें सिखाता है कि कैसे अत्यल्प मात्रा में सामग्री भी यदि सही प्रकार से उपयोग की जाए तो वह असीम ऊर्जा उत्पन्न कर सकती है। यह न केवल विज्ञान की जीत है, बल्कि भविष्य की ऊर्जा क्रांति का संकेत भी है।

एहसास ही ज्ञान है

उमेश मानव

जहाँ हमें बहुत सी बातें समझ नहीं आती वहाँ गुरुवर कि एक बात को सही तौर पर समझ लेना चाहिए कि 'हमारा एहसास जो कहता है वही सही है, हमें अपने एहसास पर ही चलना चाहिए।' गुरुवर बताते है कि एहसास पर चल कर ही हम वहाँ पहुँच सकते है जिसे हम ज्ञान कहते है। जो हमें दिख रहा है, उसी की हम अनुभूति कर रहे है, बस इतना ही, यही सत्य है यही ज्ञान है। गुरुवर कहते है कि "जहाँ एहसास को ही ज्ञान मान लिया जाता है वही ज्ञान खत्म हो जाता है।" आज कल ज्ञान पाने के लिए सब प्रयास कर रहे है, जबकि यह तो किसी दूसरे के द्वारा किया गया काम है। जिसका अनुभव सिर्फ उसी को हुआ है और वह उसके लिए ही सत्य। दूसरे के काम को हम ज्ञान मानकर बैठे है। वही बात दूसरे के लिए सत्य नही हो सकती। दूसरे का अनुभव अलग होगा। इसके बाद भी लोग ज्ञानी बनने के लिए दूसरे के सत्य को अपना रहे है। जो वास्तव मे उनके लिए असहज है, उसे वह ज्ञान कह रहे है। आज मनुष्य अपने आधार पर विश्वास न रखकर दूसरे के बताये मार्ग पर चलता है। यही उसके पतन का कारण है। इसी मे पड़कर वह जीवनभर द्वन्द मे रहता है और अंत में जीवन गवां देता है, बिना कुछ हासिल किया बिना कुछ रचे।

यह इतना भी कठिन नही है, हमें अपने एहसास पर चलना है बस। दूसरों से हम जितना समझने सीखने जाएंगे हम स्वयं में उलझते जायेंगे। हम इसे अपने दैनिक जीवन के माध्यम से समझ सकते। साधारण सी बात है पर गहरी है। हम वही खाते है जिसका स्वाद हमे पसंद होता है, हम वैसे ही सो पाते है जैसे सोने मे हमें आराम मिलता है या हमारी आदात होती है, हम वही करते है हमे जो करने मे अच्छा लगता है। इसके विपरीत हमें ये बताया जाये कि किसी ने कोई मुकाम हासिल कर लिया, जिसके लिये उसने फलां फलां चीजे की। अब यदि आप वह पाना चाहते है तो आपको भी वैसा ही करना पड़ेगा। वैसा खाना, वैसे रहना, वैसे सोना आदि। जबकि यह स्पष्ट है कि वही सारी बातें हमें पसंद नहीं आयेंगी। यह भी हो सकता है कि हम बीमार पड़ जाये। एक उदाहरण हम और भी देख सकते है। आई ए एस बनने का सपना सभी देखते है। बहुत कम लोग इसमें सफल हो पाते है। बाकियों में ये उत्सुकता जागती है कि पता करें कि सफल होने वाले कैसे तैयारी करते थे। सफल व्यक्तियों की दिनचर्या जानी जाती है। अब सभी उसी अनुसार तैयारी शुरु कर देते है। दूसरे के अनुसार तैयारी करके कितने सफल हुए है? यह रिसर्च का विषय है।हम एक बात पर और ध्यान दे सकते है, बच्चे छोटी उम्र में वही करते है जो उन्हें अच्छा लगाता है। यहां तक मां-बाप को और बाकी लोगों को उनके अनुसार चलना पड़ता है। ऐसी अवस्था में बच्चे मग्न रहते है और चंचल रहते है। जैसे जैसे बच्चे बड़े होते है उन्हें समझाया जाता है। समाज का ज्ञान मिलने लगता है। सफल

लोगों का अनुसरण कराया जाता है, वैसे ही उस बच्चे में परिवर्तन आना शुरू होने लगता है। अब वह अपने स्वभाव पर नहीं चलता, चंचलता खत्म हो जाती है। आचरण में उदासी आ जाती, चिड़चिड़ापन घेर लेता है। यह अन्य के अनुसार बच्चे को चलाना हुआ। अब आपको तय करना है अपने बच्चों को आप कैसा देखना चाहते है। अपने स्वभाव पर चलने वाला या भेड़चाल चलने वाला। अकसर अपने बच्चों को लोग शेर की संज्ञा देते है। अब शेर के आचरण पर गौर करने की जरूरत है।

हमे इस बात पर भी ध्यान देना चाहिए कि जिन्हें हम सफल कहते है या जिन व्यक्तियो ने जीवन में कोई मुकाम हासिल किया है, वह उन्होने हमेशा अपने ही स्वभाव पर चल कर ही, अपने एहसास पर चलकर, न कि किसी और के अनुसार चलकर।

गुरुवर कहते है कि आज का मानव अपने एहसास को छोड़कर न जाने कौन से ज्ञान के पीछे चल रहा है। अपने एहसास को त्यागकर दूसरों के द्वारा बताये या लिखे गये अनुभव को वह ज्ञान मानकर चल रहा है। अपने एहसास को भूलकर वह किसी अन्य के अनुभव के अनुसार जीना चाह रहा है और खोज मे लगा है जबकि उसका सत्य उसके अपने पास में ही है, उसके एहसास में ही सब छुपा है।" करना बस इतना है कि ठहर जाना है। किसी और के नही अपने ही एहसास पर केन्द्रित होना है। यह बहुत सरल भी है। दूसरों के बताये रास्ते पर चलने के लिए प्रयास करना पड़ता है, वह स्वाभाविक नहीं होता इसीलिए कठिन है। वह हमारा स्वाभाव भी नहीं है इसीलिए सहज भी नहीं। वहीं अपने स्वभाव पर चलने के लिए हमें कुछ नहीं करना बस शांत रहना है। यही न करके आज पूरी दुनिया अपने को छोड़कर दूसरों के पीछे भागी जा रही है बस, पहुंच कहीं भी नहीं पा रही है।

गुरुवर कहते है कि वास्तव में यदि हम कुछ करना चाहते है कहीं पहुँचना चाहते है,

तो हमें अपने एहसास पर ही चलना होगा। हम यह जान पाये या न जान पाये पर हमारा जीवन, हमारी यह यात्रा, अपने गुण का विस्तार करने के लिए ही है । यदि हम अपने एहसास पर चलते रहे तो ही ऐसा कर सकेंगे और जीवन का उद्देश्य पूर्ण हो जायेगा। अन्यथा हम यूं ही जीवन व्यर्थ कर चले जायेंगे। गुरुवर समझाते हुए कहते है कि "एक सूखी पत्ती जिसको हम देखते भी नही उसकी गिनती भी नही करते पर वह भी किसी एक गुण को धारण करके अपने ही स्वभाव पर चलकर एक गुण का निर्माण और उस गुण का विस्तार ब्रहाण्ड मे कर जाती है। किसी की भी ताकत नहीं कि उसे रोक सके। वहीं सबसे ज्ञानी प्राणी मानव दुनिया की उल्टी सीधी परिभाषाओं में ही उलझ कर जीवन गवां देता है और कुछ भी नही कर पाता है। "

हम अपने आम जीवन में देखते है कि जो गायक अपने एहसास से गाते है, अपनी मौलिकता बनाये रखते है वे जीवन में एक मिसाल कायम कर जाते है, पीढियां उनकी मुरीद रहती है । उनके द्वारा गाये गाने ऐसे लगते है कि हमारे लिए ही गाये जा रहे। हम उनकी भावना से संबंध मिला पाते है। हर पीढ़ि उन्हें गुनगुनाती हैं। वहीं जो दूसरों की नकल करते हैं दूसरे के अनुसार गाते है वे बहुत कुछ नहीं कर पाते, ज्यादा सफल नही हो पाते। यहाँ तक लोगों में मजाक बनकर रह जाते है। आज भी सभी उन्हें ही पसन्द करते है जो मौलिकता लिए होते हैं। जो आत्मा से गाते है, यह तभी होता है जब आप अपने एहसास पर चलते हो। दिखावे की दुनिया में लगने लगता है कि कोई सच्चा फंकार अब न मिलेगा। तभी सभी का दिल जीत लेने वाली आवाज सुनाई देती है, जो कि अपने ही एहसास से निकली है। सभी के दिलों को जीतती हुई।

गुरुवर श्री स्पष्ट करते है जो हमें सरल बनाये जो सहज रूप से आनन्दित होकर जीने दे वही स्वच्छ है। जहाँ हमारे स्वभाव के विपरीत स्थिति है और हमारे होने से जहाँ बधा उत्पन्न हो रही है वह हमारे लिए सहज नही हमारे लिए स्वच्छ नहीं।अर्थात जिसकी जो रासायनिक अवस्था है वह उसी में रहे उसके लिए वही सहज है। सत्य यही है कि अपने एहसास पर चलिए।

जिनके बीजत्व मे जो होता है वे उसमें ही सहज होते है। दूसरे से तुलना, स्पर्धा नहीं करनी चाहिए। हम दूसरों को देखकर चलने में अपने को मिटा दे रहे है।

मानसून पर कृषि की निर्भरता

गौरीशंकर वैश्य विनम्र

भारतीय उपमहाद्वीप में कुल वर्षा का लगभग 75 प्रतिशत भाग मानसून काल में होता है। मानसून की अवधि जून - सितंबर तक मात्र चार महीने होती है,बाकी महीनों में कम वर्षा होती है। इसी कारण मानसून को "भारत की कृषि की रीढ़" कहा गया है।इस वर्षा का वितरण असमान होता है। कहीं अधिक वर्षा होने के कारण बाढ़ की समस्या उत्पन्न होती है, तो कुछ स्थान ऐसे भी होते हैं, जहाँ वर्षा न के बराबर होती है। देश में औसत वर्षा 1,170 मिलीमीटर है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ देश की लगभग 60% जनसंख्या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। भारत की कृषि व्यवस्था अनेक कारकों पर आधारित है, जिनमें जलवायु, मिट्टी, सिंचाई सुविधाएं, बीज, उर्वरक, और सबसे महत्वपूर्ण – वर्षा या मानसून है। मानसून भारत की कृषि के लिए जीवनदायिनी माना जाता है, क्योंकि देश के बड़े भूभाग पर वर्षा आधारित कृषि होती है।

मानसून का स्वरूप एवं प्रभाव

'मानसून' शब्द अरबी शब्द 'मौसिम' से आया है जिसका अर्थ है 'मौसम'। भारत में केवल तीन ही प्रकार की जलवायु है -मानसून, मानसून- पूर्व और मानसून-पश्चात। तभी भारत की जलवायु को मानसूनी जलवायु कहा जाता है। भारतीय उपमहाद्वीप में मानसून जून से सितंबर तक सक्रिय रहता है, जिसे 'दक्षिण-पश्चिम मानसून' कहा जाता है। इस काल में बंगाल की खाड़ी और अरब सागर से आर्द्र हवाएँ भारत के विभिन्न भागों में भारी वर्षा कराती हैं।खेती - हरियाली और साल भर के जल का प्रबंध इसी बरसात पर निर्भर है।

भारतीय उपमहाद्वीप में कुल वर्षा का लगभग 75 प्रतिशत भाग मानसून काल में होता है। मानसून की अवधि जून - सितंबर तक मात्र चार महीने होती है,बाकी महीनों में कम वर्षा होती है। इसी कारण मानसून को "भारत की कृषि की रीढ़" कहा गया है।इस वर्षा का वितरण असमान होता है। कहीं अधिक वर्षा होने के कारण बाढ़ की समस्या उत्पन्न होती है, तो कुछ स्थान ऐसे भी होते हैं, जहाँ वर्षा न के बराबर होती है। देश में औसत वर्षा 1,170 मिलीमीटर है। मौसम विज्ञानियों के अनुसार, भारत में सूखा पड़ना तथा कमजोर मानसून पश्चिमी प्रशांत महासागरीय 'एल - नीनो 'तथा 'ला - नीना' घटनाओं से जुड़ा है। मानसून की शुरुआत, उसकी तीव्रता, अवधि और समाप्ति का सीधा प्रभाव देश की कृषि उत्पादकता पर पड़ता है।भारतीय कृषि के योजनागत विकास के बाद अब भी लगभग 85 मिलियन हेक्टेयर (60 प्रतिशत) कृषि क्षेत्र असिंचित है तथा पर्याप्त सीमा तक मानसून पर निर्भर करती है।

मौसम विभाग सहित विभिन्न वैज्ञानिक संस्थानों के अध्ययनों के अनुसार, जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षा का पैटर्न निरन्तर बदल रहा है, जिससे न केवल खेतीबाड़ी पर,

अपितु देश की आर्थिकी, स्वास्थ्य और बढ़ती दैवी आपदाओं के कारण जनधन की सुरक्षा पर भी प्रभाव पड़ रहा है। अधिक गर्मी पड़ने के कारण मानसून के देरी से आने या वर्षा में कमी आने से सूखे की स्थिति आ जाती है। इससे देश के करोड़ों छोटे और सीमान्त किसानों को बदहाली की चिंता सताती रहती है। वे पहले से ही कर्ज में डूबे हुए हैं। ऐसी स्थिति में खराब मानसून के चलते इनकी घरेलू अर्थव्यवस्था कई वर्षों के लिए पिछड़ जाती है। कृषि उत्पादन में गिरावट आने पर हम आर्थिक विकास को गति नहीं दे पाते, जबकि हमारा सकल आर्थिक विकास कृषि पर निर्भर है। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में हुए नए अध्ययनों में यह पाया गया है कि धरती के तापमान में 1 डिग्री सेन्टीग्रेड वृद्धि होने पर 40 - 50 लाख टन खाद्यान्न की क्षति होती है। तापमान की इस वृद्धि से अनाज के उत्पादन में 15 से 35 प्रतिशत तक की कमी आ जाती है। यह क्षति पूरे उत्पादन के समय होती है। एक अनुमान के अनुसार, इस निरन्तर बढ़ते तापमान के कारण, भारत में वर्ष 2050 तक खाद्यान्न की पैदावार आज की अपेक्षा 18 प्रतिशत घट जाएगी।

सूखा प्रभावित राज्यों में सिंचाई के लिए भूमिगत जल का उपयोग बढ़ेगा। इसी तरह चारे की उपलब्धता भी आवश्यक है, किन्तु सूखे जैसी विषम परिस्थिति में सबसे पहले पशु ही प्रभावित होते हैं। बेमौसम वर्षा और ओलावृष्टि भी बिगड़ते मानसून संतुलन का परिणाम है, इससे किसानों की फसलें और बागवानी चौपट हो जाती है। इससे किसानों के सामने बड़ा संकट खड़ा हो जाता है। भारतीय मानसून के बारे में एक बड़े अनुभवी कृषि विज्ञानी पीआर पिशोरती ने बताया था कि मानसून की अनिश्चितता के कारण केवल 100 औसत घंटों में समूची वर्षा हो जाती है, जबकि एक वर्ष में कुल 8765 घंटे होते हैं।

मानसून और कृषि का गहरा संबंध

मानसून और कृषि का बहुत गहरा संबंध है। इसी के सहारे रबी, खरीफ और जायद की फसलें भरपूर उत्पादन की आस जगाती हैं। किसान बहुत ही बेसब्री से मानसून की प्रतीक्षा करते हैं। इसके लिए वे बादलों के रंग, हवा की गति, पशु - पक्षियों की गतिविधियाँ या इंद्रधनुष देखकर वर्षा होने का सटीक अनुमान लगाने का प्रयास करते हैं। मानसून की वर्षा उन्हें नई फसल की बुआई के लिए समय पर चाहिए। पर्याप्त और समय पर मानसून की वर्षा से फसल उत्पादन बढ़ता है, जिससे खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण आय में सुधार होता है। फसलों की सफलता मुख्यतः मानसून की नियमितता और तीव्रता पर निर्भर करती है। यदि मानसून समय पर आता है, पर्याप्त वर्षा करता है और समान रूप से फैलता है, तो फसलें भरपूर होती हैं। इसके विपरीत, यदि मानसून देर से आता है या वर्षा असमान रूप से होती है, तो फसलें खराब हो सकती हैं, जिससे किसानों को नुकसान पहुँच सकता है और आर्थिक अस्थिरता उत्पन्न हो सकती है।स्थानीय भारी वर्षा, सूखे और बाढ़ की घटनाओं में वृद्धि का सीधा प्रभाव कृषि पर पड़ता है।

मानसून की महत्वपूर्ण भूमिका

1 सिंचाई का प्रमुख स्रोतः भारत में सिंचाई की पर्याप्त व्यवस्था अभी भी सीमित है। केवल 50% कृषि भूमि ही सिंचित है, शेष भाग वर्षा पर निर्भर है। मानसून की अच्छी वर्षा जलाशयों और नदियों को रिचार्ज करती है, जिससे सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध होता है, विशेषतः उन क्षेत्रों में जहाँ सिंचाई की सुविधा सीमित है।

2 भूजल स्तर में वृद्धि : मानसून की वर्षा से जलाशयों, झीलों, नदियों और भूमिगत जल स्त्रोतों का पुनर्भरण होता है, जो स्थायी कृषि के लिए महत्वपूर्ण है।

3 मिट्टी की उर्वरता बनाए रखनाः अच्छी वर्षा के कारण खेतों में नमी बनी रहती है जिससे सूक्ष्मजीव सक्रिय होते हैं और मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है।

4 कृषि आधारित उद्योगों को सहायताः मानसून आधारित कृषि से जुड़े उद्योग जैसे चीनी मिलें, कपड़ा मिलें, खाद्य प्रसंस्करण, पशुपालन आदि मानसून की गुणवत्ता पर निर्भर करते हैं।अच्छी फसलें किसानों की आय बढ़ाने में सहायक होती हैं, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है।

मानसून की अनियमितता और उसके दुष्परिणाम

भारत में मानसून प्रायः अनियमित रहता है – कभी अत्यधिक वर्षा, कभी अल्प वर्षा, कभी समय से पहले समाप्ति, तो कभी देर से आगमन। इसके परिणामस्वरूप अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैंः

1 सूखा : यदि मानसून देरी से आता है, तो सिंचाई के अभाव में फसलें सूख जाती हैं। इससे किसानों की आय प्रभावित होती है और देश में खाद्यान्न संकट उत्पन्न होता है।

2 बाढ़ : अत्यधिक वर्षा होने पर नदियाँ उफान पर आ जाती हैं जिससे खेत जलमग्न हो जाते हैं और फसलें नष्ट हो जाती हैं।भारी वर्षा से ऊपरी उपजाऊ मिट्टी के क्षरण के कारण उर्वरता कम होती है। यह नुकसान न केवल किसानों के लिए, अपितु राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिए भी एक बड़ी चुनौती होता है।

3 कीट व रोगों का प्रकोपः अनियमित मानसून से वातावरण में असंतुलन आता है। अधिक नमी या आर्द्रता के कारण हानिकारक कीटों और फसल रोगों का प्रकोप बढ़ जाता है, जिससे फसल खराब हो जाती है।

4 कीमतों में उतार - चढ़ाव :

खराब मानसून के कारण फसलें नष्ट होती हैं। मानसून की विफलता से खाद्यान्न की कीमतें बढ़ सकती हैं, जिससे उपभोक्ताओं पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है । इससे किसान कर्ज में डूब जाते हैं और कई बार आत्महत्या जैसे दुखद कदम उठाते हैं।

मानसून पूर्वानुमान और विज्ञान की भूमिका

भारतीय मौसम विभाग (IMD) मानसून पूर्वानुमान जारी करता है, जिससे किसानों को बीज बोने, खेत तैयार करने आदि निर्णयों में मदद मिलती है। फिर भी, मौसम पूर्वानुमान की सीमाएँ हैं। अतः वैज्ञानिक तकनीकों का अधिक उपयोग करना आवश्यक हो गया है:

जलवायु पूर्वानुमान मॉडल

उन्नत सैटेलाइट निगरानी प्रणाली

ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई तकनीक

मृदा नमी विश्लेषण

ये सभी उपाय किसानों को मानसून की अनिश्चितता से जूझने में मदद कर सकते हैं।

मानसून और कृषि नीतिः सरकारी प्रयास

भारत सरकार ने विभिन्न योजनाओं और नीतियों के माध्यम से मानसून आधारित कृषि संकट को कम करने का प्रयास किया है:

प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (PMKSY): इस योजना का उद्देश्य 'हर खेत को पानी' है जिससे मानसून पर निर्भरता कम हो।

फसल बीमा योजना (PMFBY): यह योजना प्राकृतिक आपदाओं, कम वर्षा या अत्यधिक वर्षा से फसलों को हुए नुकसान की भरपाई हेतु बीमा प्रदान करती है।

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (RKVY): किसानों को आधुनिक तकनीक, बीज, उर्वरक, कृषि यंत्र आदि उपलब्ध कराने के लिए यह योजना अत्यंत लाभदायक है।

ई-नाम (e-NAM): यह ऑनलाइन प्लेटफॉर्म किसानों को अपनी उपज का बेहतर मूल्य दिलाने में सहायक है।

कृषि की मानसून पर निर्भरता कम करने के उपाय

भारत को एक विकसित कृषि अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करने के लिए यह आवश्यक है कि मानसून पर निर्भरता कम हो। मानसून के बदलते पैटर्न के अनुसार, अनुकूलन करने के लिए विभिन्न रणनीतों के अपनाने की आवश्यकता है :-

सिंचाई के वैकल्पिक स्रोतों का विकास: वर्षा जल संचयन, छोटे बांध, चेक डैम, तालाब निर्माण जैसे उपायों से जल संकट कम किया जा सकता है।पर्यावरणविद् अनिल अग्रवाल के अनुसार, मानव समाज केन्द्रित जल स्रोतों जैसे, नलकूपों, नदियों और जलाशयों के प्रयोग पर अधिक आश्रित हुआ है। इसका अधिक प्रयोग ज्यादा दोहन बढ़ाता है। अतः 21 वीं शताब्दी में मानव को एक बार फिर कमजोर जल - स्रोतों जैसे वर्षा के पानी का प्रयोग करने की ओर बढ़ना होगा। सिंचाई सुविधाओं के संचालन, अनुरक्षण, विस्तार एवं आधुनिकीकरण की दिशा में प्रभावी कदम उठाकर सिंचाई व्यवस्था में संवृद्धि की जानी चाहिए।

सूखा प्रतिरोधी बीजों का प्रयोग: वैज्ञानिकों द्वारा विकसित उन्नत किस्में जो कम पानी में भी अच्छी उपज देती हैं, उनका प्रचार-प्रसार आवश्यक है।फसल और फसल किस्मों में बदलाव से भी लाभ उठाया जा सकता है।

कृषि यंत्रीकरण और प्रौद्योगिकी का समावेश: ट्रैक्टर, थ्रेशर, ड्रोन, सेंसर जैसी तकनीकें मानसून की अनिश्चितता को संतुलित कर सकती हैं।आधुनिक सिंचाई के साधनों जैसे ड्रिप तथा स्प्रिंकलर सिंचाई को बड़े पैमाने पर अपनाया जाए, जिससे जल अपव्यय रोका जा सके।

फसल विविधिकरण : केवल धान या गेहूं पर निर्भर रहने के बजाय दलहन, तिलहन, श्रीअन्न उत्पादन, बागवानी फसलों, मिश्रित खेती,सतत कृषि, फसल - पशुधन आदि को भी अपनाया जाए।

प्रशिक्षण और जागरूकता: किसानों को समय-समय पर प्रशिक्षण देकर उन्हें जल प्रबंधन, मौसम पूर्वानुमान और कृषि तकनीक की जानकारी दी जाए।

वर्षा-जल का संचयन: मानसून पर निर्भरता समाप्त करने की चाह के बजाए हमें मानसून का उत्सव मनाना चाहिए। हमें वर्षा - जल की हर बूँद का मूल्य समझते हुए, उसको बचाना चाहिए। चैक डैम, झील, कुएँ, तालाब, घास और पेड़, हर चीज वर्षा के पानी को समुद्र में जाने से रोक सकती है। हमें वर्षा - जल के दोबारा प्रयोग की कला सीखनी होगी। इससे भू-जल भण्डारण में वृद्धि होगी।

खेतों से पानी का बहाव रोका जाए: ज्यादा ढालू खेतों में थोड़ी - थोड़ी दूरी पर कम ऊँचाई की मेड़ बनाकर पानी के बहाव को कम किया जा सकता है,जिससे पानी को जमीन में जाने के लिए अधिक समय मिलेगा। विभिन्न तकनीकों जैसे भू - समतलीकरण, वृक्षारोपण, मेड़बंदी तथा ढलान के विपरीत जुताई - बुवाई करके वर्षा के पानी को बहने से रोकना चाहिए, साथ ही पानी से होने वाले कटाव को रोकना चाहिए।

वन तथा अन्य वनस्पति क्षेत्र में वृद्धि: वन तथा वनस्पति क्षेत्र का जल संग्रह में महत्वपूर्ण योगदान होता है। जहाँ पेड़ - पौधे स्वस्थ अवस्था में होते हैं. वहाँ की मिट्टी सख्त नहीं होती। पेड़ - पौधों की जड़ें उसे संघनन होने से बचाती हैं। जमीन पर गिरी हुई पत्तियाँ, फूल, टहनियाँ इत्यादि वर्षा - जल को सोख लेती हैं तथा वर्षा के रुकने के बाद भी पानी उनसे रिसकर निकलता है। इस प्रकार वर्षा - जल को मिट्टी के भीतर और उसके नीचे जाने के लिए अधिक समय मिलता है।

जलवायु परिवर्तन और मानसून

हाल के वर्षों में जलवायु परिवर्तन के कारण मानसून की प्रकृति और समय में बदलाव देखा गया है। ग्लोबल वार्मिंग, वनों की कटाई, प्रदूषण आदि कारणों से मानसून असामान्य हो गया है – कहीं अतिवृष्टि, कहीं सूखा, और कहीं बेमौसम वर्षा। यह कृषि को अनिश्चित बनाता है और किसानों के सामने नई चुनौतियां प्रस्तुत करता है।

मानसून पर कृषि की निर्भरता: आर्थिक परिप्रेक्ष्य

भारत की जीडीपी का लगभग 15% हिस्सा कृषि से आता है, और इसमें मानसून की भूमिका महत्वपूर्ण है। एक अच्छा मानसून कृषि उत्पादन को बढ़ाता है, खाद्य वस्तुओं की कीमतों को नियंत्रित रखता है और ग्रामीण आय को बढ़ाता है, जिससे उपभोग भी बढ़ता है। इसके विपरीत, कमजोर मानसून से देश की आर्थिक वृद्धि भी धीमी पड़ सकती

है।भारत के किसान मानसून के भरोसे खेती करते हैं। यदि मानसून ने साथ दिया,तो भरपूर उपज होती है और किसान खुशहाल होते हैं। जब मानसून ने साथ नहीं दिया, तो किसान कंगाली के कगार पर पहुँच जाते हैं।

मानसून और कृषि का संबंध भारत में अत्यंत गहरा और संवेदनशील है। जहाँ एक ओर मानसून भारतीय कृषि की जीवनरेखा है, वहीं इसकी अनिश्चितता एक गंभीर चुनौती भी है। मानसून की सफलता या विफलता का देश की कृषि एवं अर्थव्यवस्था पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है। किसानों को मानसून के पूर्वानुमानों पर ध्यान देना चाहिए और उसी के अनुसार अपनी कृषि प्रबंधन गतिविधियों की योजना बनानी चाहिए। इसके अतिरिक्त,सरकार को सिंचाई सुविधाओं में सुधार और जल संचयन, अनुकूली पौधारोपण कार्यक्रम, जुताई पद्धतियों, भू - उपयोग नियोजन जैसी तकनीकों को बढ़ावा देना चाहिए, जिससे मानसून के विफलता के प्रभाव को कम किया जा सके। किसानों को सूखे और बाढ़ जैसी प्रतिकूल परिस्थिति के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान करनी चाहिए। विज्ञान, नीति, और सामाजिक जागरूकता के समन्वित प्रयास से ही हम मानसून की कृपा को अवसर में बदल सकते हैं और उसकी अनिश्चितता से सुरक्षित रह सकते हैं।

हमें यह समझना होगा कि मानसून की अनियमितता अब केवल एक मौसमी घटना नहीं, अपितु जलवायु परिवर्तन से जुड़ी एक स्थायी चुनौती बन गई है। इसीलिए अब समय आ गया है कि हम मानसून पर निर्भर कृषि व्यवस्था से एक स्थायी, पर्यावरणीय और वैज्ञानिक कृषि मॉडल की ओर बढ़ें, जो आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित, समृद्ध और सशक्त बना सके।

संघर्ष अथवा अभावों के बिना असंभव है जीवन में वास्तविक आनंद

सीताराम गुप्ता
पीतमपुरा, (दिल्ली)

रामधारी सिंह दिनकर मेरे प्रिय कवि हैं। पिछले दिनों उनकी एक कविता ''रह जाता कोई अर्थ नहीं'' कई बार पढ़ने का अवसर मिला। कविता में बतलाया गया है कि जब समय पर कोई चीज़ उपलब्ध न हो तो बाद में उसके मिलने का कोई महत्त्व नहीं रह जाता। कविवर लिखते हैं कि फसल सूखकर नष्ट हो जाने के बाद वर्षा का कोई अर्थ नहीं। दुख में कोई साथ न दे तो सुख में उन संबंधों का कोई महत्त्व नहीं। कटु वचनों के बाद प्रिय वचनों का कोई औचित्य नहीं। गोस्वामी तुलसीदास ने भी यही कहा है:

तृषित बारि बिनु जो तनु त्यागा।
मुएँ करइ का सुधा तड़ागा।।
का बरषा सब कृषी सुखानें।
समय चुकें पुनि का पछितानें।।

यदि प्यासा आदमी पानी के बिना शरीर छोड़ दे तो उसके मर जाने पर अमृत का तालाब भी क्या करेगा? सारी खेती सूख जाने पर वर्षा किस काम की? समय बीत जाने पर फिर पछताने से क्या लाभ? इसमें कोई संदेह नहीं कि समय पर मिलने वाली चीज़ का ही महत्त्व होता है। गोस्वामी तुलसीदास इसी महत्त्व को रेखांकित करते हुए ये पंक्तियाँ कह रहे हैं। दिनकर की कविता की प्रारंभिक पंक्तियाँ निम्न प्रकार से हैं:

नित जीवन के संघर्षों से जब टूट चुका हो अंतर्मन,
तब सुख के मिले समंदर का रह जाता कोई अर्थ नहीं।

मैं कविता की इन पंक्तियों से पूर्णतः सहमत नहीं हो पाता हूँ। मेरे विचार से जीवन के संघर्ष की तुलना भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति से नहीं की जा सकती। व्यक्ति विषम से विषम परिस्थितियों में हथियार डालने की बजाय संघर्ष को महत्त्व देता है। जीवन के अंतिम क्षणों में भी वो कभी नहीं कहता कि अब मुझे जाने दो। संघर्ष जीवन का अनिवार्य तत्त्व है। संघर्षों से अंतर्मन न तो टूटता है और न बिखरता है। संघर्ष के अभाव में हम यदि हम कुछ पा भी लेते हैं तो उसका उतना महत्त्व नहीं होता जितना संघर्ष के बाद की प्राप्ति में होता है।संघर्ष जीवन को गरिमा व सार्थकता प्रदान करता है। संघर्ष में पीड़ा नहीं आनंद होता है। संघर्ष के बाद जब हम अपने गंतव्य पर पहुँचते हैं तो उस आनंद का वर्णन नहीं किया जा सकता। वास्तव में किसी भी प्रकार के आनंद के लिए उस आनंद अथवा अपेक्षित वस्तु की उत्कट इच्छा अनिवार्य है और उत्कट इच्छा का अर्थ है उस क्षण उस वस्तु का अभाव। जब अभाव की पूर्ति होती है तभी वास्तविक आनंद की अनुभूति होती है। जहाँ तक अंतर्मन का प्रश्न है वह न तो कभी टूटता है और न ही कभी हारता है। जब हमारी सोच निराशावादी हो जाती है अथवा हमारा दृष्टिकोण नकारात्मक हो जाता है तो वो उसी के अनुरूप प्रतिक्रिया करने लगता है। हम प्रयास करना छोड़ देते हैं। हम हार जाते हैं। हमारा अंतर्मन ठीक से प्रतिक्रिया करे इसके लिए हमेशा मन में उत्साह व आशावादिता बनाए रखना अनिवार्य है।

एक कहावत है जितने दिन जेठ अधिक तपता है उतने ही दिन सावन ज़्यादा बरसता है। जेठ में जितने दिन पुरवाई चलती है, हवा ठंडी हो जाती है उतने ही दिन सावन में धूल उड़ती है। जेठ ठीक से नहीं तपेगा तो सावन भी ठीक से नहीं बरसेगा। यह एक वैज्ञानिक सत्य भी है। लेकिन एक बात है और वो ये कि यदि ग्रीष्म कष्टदायक है तो वर्षा आनंददायक। यही बात मनुष्य के जीवन में सुख-दुख के संबंध में भी उतनी ही सटीक है। ज्येष्ठ कष्ट का प्रतीक है तो श्रावण आनंद का लेकिन एक के बिना दूसरे की प्राप्ति असंभव है। इसी प्रकार दुख के बिना सुख की प्राप्ति या अनुभूति भी असंभव है। दुख की शुष्क भूमि पर ही उगते सुख के सरस पौधे भी। अर्थात् सुख की अनुभूति के लिए अनिवार्य है दुख का आस्वादन।

व्यक्ति तथा समाज दोनों के विकास के लिए परस्पर विरोधी भावों, शक्तियों अथवा ऊर्जा की उपस्थिति अनिवार्य है। किसी भाव के कारण ही अभाव का तथा अभाव विशेष के कारण ही भाव विशेष का महत्त्व है। असत की उपस्थिति के अभाव में सत का मूल्यांकन कैसे संभव है? मृत्यु, अंधकार, विषमता, विरह अथवा अपमान आदि के उपस्थित होने पर ही जीवन या अमरता, प्रकाश, अनुकूलता, मिलन अथवा मान-सम्मान के भाव की अनुभूति की जा सकती है। इसी प्रकार यदि दुख नहीं आएगा तो सुख भी नहीं आएगा क्योंकि दुख की अनुभूति के बाद ही सुख की अनुभूति संभव है। जितना लंबा दुख उतना ही दीर्घ सुख। जितना गहरा घाव ठीक होने पर उतना ही घना सुख। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। एक के अभाव में दूसरे का अस्तित्व ही नहीं हो सकता।

दुख के अभाव में कैसा सुख? वस्तुतः

दुख का अभाव ही सुख है अतः सुख के लिए दुख की अनुभूति अनिवार्य है। ग्रीष्म की तेज़ गर्मी, लू और शुष्कता के बाद ही पावस की रिमझिम बूँदों की शीतलता और आर्द्रता का आनंद है। ठिठुरती शीत ऋतु और पतझड़ के उपरांत ही वसंत का आनंद लेना संभव है। यदि सारे साल एक जैसा मौसम ही बना रहे तो जीवन कितना नीरस हो जाए। रोज़ एक जैसा खाना, एक जैसे कपड़े अथवा एक जैसी दिनचर्या हो जाए तो इस एकरसता में कैसा आनंद? परिवर्तन तथा उतार-चढ़ाव हमारे जीवन को रंगों से भर देते हैं। परिवर्तन के अभाव में मनुष्य न तो आनंदित हो सकता है और न आगे ही बढ़ सकता है। चाहे वे ऋतुएँ हों, उपभोग की सामग्री अथवा वस्तुएँ हों या व्यक्ति की मनोदशा सब में परिवर्तन अनिवार्य है।

ग्रीष्म या वर्षा हो अथवा पतझड़ या वसंत ये एक-दूसरे के विरोधी नहीं अपितु पूरक हैं। एक के अभाव में दूसरे का आनंद कहाँ? यही स्थिति सुख-दुख के साथ भी जुड़ी है। दुख नहीं तो सुख नहीं और सुख नहीं तो दुख नहीं। जिसने कभी दुख नहीं देखा केवल सुख ही सुख देखा उसके लिए सुख की क्या क़ीमत? सुखों की मात्रा बढ़ाते जाओ तो अच्छा लगेगा वरना जीवन नीरस हो जाएगा। सुख-सुविधाओं का अंत नहीं लेकिन मनुष्य की सीमा है। सुख-सुविधाओं में ठहराव आ गया तो जीवन में नीरसता आ गई और सुख-सुविधा छिन गई तो दुख ही दुख। किसी से कोई सुविधा छीन लो तो दुख और फिर से दे दो तो सुख लेकिन सुविधा की निरंतरता में सुख नहीं रहता। सुख की अनुभूति के लिए अनिवार्य है दुख की अनुभूति भी। सुख-दुख मनुष्य मन की सापेक्ष अवस्थाएँ हैं।

आप ध्यानपूर्वक अपने जीवन में घटित दुखों का अवलोकन कीजिए। हमें जीवन में जाने कितने दुख और कष्ट झेलने पड़ते हैं, अवमानना सहनी पड़ती है, उनकी तीव्रता से जूझना पड़ता है, उन्हें दूर करना होता है। यदि हम अपने जीवन में आने वाले कष्टों का विश्लेषण करें तो पाते हैं कि कुछ कष्ट या कोई कष्ट विशेष जीवन में सबसे ज़्यादा पीड़ित करता रहा लेकिन साथ ही ये भी पाते हैं कि इस एक बड़े कष्ट के कारण हम असंख्य छोटे-छोटे कष्टों को भूल गए अर्थात् हर कष्ट अपने से छोटे कष्टों को गौण कर देता है। हर परेशानी दूसरी परेशानियों को समाप्त कर देती है। जिसे हम बड़ी परेशानी मानते हैं यदि वह न होती तो इससे छोटी परेशानी भी तब कम कष्टदायक न होती लेकिन बड़ी परेशानियों के कारण हम छोटी परेशानियों से उबर जाते हैं जो हमारे आनंद के लिए ही नहीं उन्नति के लिए भी अनिवार्य है।

कष्ट और आनंद या दुख और सुख वस्तुतः कोई अवस्था विशेष नहीं अपितु तुलनात्मक अवस्था है। सौ रुपये का नुक़सान हो गया तो कम दुख और हज़ार का हो गया तो ज़्यादा दुख लेकिन दस हज़ार का नुक़सान हो गया तो सौ और हज़ार के नुक़सान को भूल गए। बड़े नुक़सान के दुख ने छोटे नुक़सान के दुख को बौना कर दिया, महत्वहीन बना दिया। हज़ार रुपये के नुक़सान ने छोटे नुक़सान को सहने में सक्षम बना दिया। कष्टों से जूझने की क्षमता का विकास कर देता है दुख। जितना बड़ा दुख उतना ही क्षमतावान मनुष्य। दुख से भागो नहीं, उसे स्वीकारो, चुनौती के रूप में लो, मुक़ाबला करो। यह मानसिकता ऊर्जस्विता प्रदान करेगी। संघर्ष भी सुख देगा। दुख की समाप्ति पर असीम आनंद की प्राप्ति होगी।

आपका युवा पुत्र बहुत नेक और चरित्रवान है। आप उस पर जान छिड़कते हैं। वह भी परम आज्ञाकारी और पितृभक्त है। किसी दिन वह सिगरेट मुँह से लगाए दृष्टिगोचर होता है। आपको लगता है सारे किये कराये पर पानी फिर गया। आपके दुखों की सीमा नहीं रहती। आप उसे किसी भी क़ीमत पर माफ़ नहीं करते। कुछ दिन बाद वही पुत्र किसी उत्सव के दौरान प्याला हाथ में लिए दीख पड़ता है। आपका दुख कई गुना बढ़ जाता है। आप उसे हर बात के लिए माफ़ कर देते हैं। धूम्रपान के लिए भी माफ़ कर सकते हैं लेकिन मदिरापात्र हाथ में लेने के लिए नहीं। लेकिन पास जाने पर तस्वीर का रुख़ ही बदल जाता है। पात्र में मदिरा नहीं अपितु फलों का रस है। आपका दुख दूर हो जाता है और सुख की तरंगें हिलोरे मारने लगती हैं लेकिन यह सब हुआ दुख की अनुभूति के कारण ही।

दुख नहीं होता तो इतना सुख भी नहीं होता चाहे वह काल्पनिक ही क्यों न हो। वस्तुतः जिसे हम दुख कहते हैं वह भी काल्पनिक है और जिसे हम सुख कहते हैं वह भी कल्पना लोक से अधिक कुछ नहीं है। मन की कंडीशनिंग के कारण ही कोई अवस्था दुख प्रतीत होती है तो कोई सुख। हम कष्टों और समस्याओं से पलायन कर स्वयं अपने सुखों से दूर होते चले जाते हैं। असीमित उपभोग द्वारा भी हम अपने सुखों को कम कर देते हैं। शरीर को जितना अधिक आराम और सुविधाएँ देते हैं वह उतना ही निष्क्रिय और जड़ होता जाता है। परिश्रम अथवा व्यायाम करेंगे तो थोड़ा कष्ट तो ज़रूर होगा पर स्वस्थ शरीर का सुख भी मिलेगा। कम खाएँगे तथा भूख लगने पर ही खाएँगे तो भोजन के स्वाद का सुख भी मिलेगा। जो सारे दिन खाद्याखाद्य चरते रहते हैं उनके लिए भोजन में स्वाद का सुख कहाँ?

जीवन में जितना कष्ट आएगा उतना ही आप कष्टों को सहते-सहते धैर्यवान होते जाएँगे। धैर्य एक ऐसा गुण है जो व्यक्ति की स्वीकार्यता को बढ़ाकर उसकी कार्यक्षमता में वृद्धि कर देता है, उसे आगे ले जाता है, उसे संपूर्णता प्रदान करता है। बड़ा दुख उपचार कर देता है सभी छोटे-छोटे दुखों का और असंख्य छोटे-छोटे दुखों के उपचार से प्राप्त सुख असीम सुख में परिवर्तित होकर आनंद ही देता है। और जब किसी बड़े कष्ट अथवा पीड़ा से मुक्ति मिलती है तो हमारे आनंद की सीमा नहीं रहती। अक्सर भयंकर तूफ़ानों के बाद नई संभावनाओं का उदय होता है जो मनुष्य, समाज व राष्ट्र सभी के लिए उपयोगी होता है।

बरगद का पेड़

रामभरोस अभी भी बरगद के पौधे के पास विचारशील मुद्रा में बैठा था। सिर पर बंधा गमछा खुल गया था जिसका एक छोर सिर पर और दूसरा बाँये कंधे पर लटक रहा था। बाड़े के दरवाजे पर खड़ी उसकी घरवाली कब से उसे पुकार रही थी, उसे ज़रा भी भान नहीं था। वह तो बरगद की विशालता का आकलन करता किसी अलग ही दुनियाँ में पहुँच गया था।

हेमराज सिंह 'हेम'

कोटा, राजस्थान

घर के पीछे बाड़े में बरगद का नन्हा पौधा देखकर रामभरोस की मिची-मिची सी आँखों में चमक बिखर गई। वह होठों ही होठों में बड़बड़ाया, "यह बरगद का पौधा यहाँ कैसे उग आया, पूरे गाँव में तो एक भी बरगद का पेड़ नहीं है, फिर यहाँ बीज कौन ले आया, किसने लगाया?" उसने खड़े-खड़े ही गाँव भर में निगाह दौड़ाई, पर कहीं बरगद का पेड़ नजर नहीं आया। वह समय के बंध को तोड़ अतीत में लौटा, पर वहाँ भी उसे निराशा ही हाथ लगी।

वह सोचने लगा। गाँव में कभी बरगद का पेड़ रहा ही नहीं? हारकर उसने सिर पर बँधे गमछे को खोला और फिर से कसकर बाँध लिया, पास जाकर ऊँकडू बैठकर उसे निहारने लगा।

नन्हा-सा, प्यारा-सा पौधा। जिसके ताजा-ताजा निकले दो पत्ते रक्ताभा लिए चमक रहे थे और तीसरा निकलने की प्रारम्भिक प्रक्रिया को पूरा कर चुका था, जिसे देखने पर दीपक की जलती बाती का सा आभास हो रहा था। रामभरोस ने बहुत ही सहज भाव से नन्हें से पत्ते को छुआ, एक अजीब सी सिरहन उसके शरीर में झुरझुरी भरती निकल गई।

वह अंगुलियों को आँखों के पास लाकर उसके तेलिये स्पर्श को महसूस करने लगा। पूरे गाँव में नीम और बबूल के पेड़ों के अलावा यदि और पेड़ थे; तो आक, खेजड़ी के इक्के-दूक्के पेड़। कहीं-कहीं शीशम के एकाध पेड़ बेमन से अकेलेपन से झूँझते दिखाई दे जाते थे। ठाकुर साहब के कुवे पर इमली का एक दरख्त अपने बैड़ोल आकार को ढोता ऊँघता रहता था। उस पर फल तो कभी-कभी ही आते थे, जिन्हें गाँव के बच्चे पकने से पहले ही तोड़-मरोड़कर खा जाते थे। एक समय था जब ठाकुर साहब का कुआँ पूरे गाँव की प्यास बुझाता था और यह दरख्त रंग-बिरंगी, चटकती-मटकती पनिहारियों की रसीली बाते सुन मोहित होता रहता था। पर, जबसे पानी पाताल के नीचे गया और बेचारा कुआँ अपनी प्यास बुझाने में भी असहाय हो गया, तबसे इमली के दरख्त के दिन भी उदासी से बोझिल हो गये। हाँ, सुबह और शाम को उसके कोठर पक्षियों के कोलाहल से आबाद जरूर रहते। तोते, कबूतर, गिलहरियाँ उसके कोठरों को प्रेम लीला स्थली के लिए काम में लेते रहते थे। गाँव या गाँव के आसपास किसी मवेशी की मौत का समाचार पाकर दूर दराज से आने वाले गिद्ध थकान उतारने के लिए आसमान

से सीधे ही उसकी सबसे ऊँची शाखों पर उतर आते थे,और थकान उतरते ही फिर से आसमान नापने लगते। ठाकुर साहब के दो पालतू कुत्ते उसके तने से सटे पड़े रहते और शरीर की खुजली मिटाते रहते। जिसके निशान तने पर हर दिन गहरे होते जा रहे थे। चढ़ते दिन के साथ जब सभी अपने-अपने कोठर छोड़ आजीविका की तलाश में निकल जाते, तो यह बेचारा किसी पनिहारिन के आने के इंतजार में गाँव की राह ताकता रहता। गाँव में नीम के पेड़ बहुतायत में थे। हर घर के आँगन में, बाड़े में, एक-दो नीम जरूर नजर आते थे। गर्मियों में इनकी छाया गाँव वालो के लिए जीवनदायनी औषधी से कम न थी। जब आसमान से शोले बरसते और धरती निर्धूम हवनकुंड बनी रहती तब ठंडक की तलाश नीम के पेड़ों के नीचे पूरी होती। घर के कामकाज से आजाद बुज़ुर्ग ताश के खेल के साथ इनकी छाया का भरपूर फायदा उठाते। बबूलों की परवाह करने के पीछे गाँव वालो का अपना स्वार्थ था। वे इनकी कटिली टहनियाँ काटकर खेतों की मेड़ों पर गाड़ देते थे, ताकि आँवारा मवेशी फसल को नुकसान न पहुँचा सके। खेजड़ी के पेड़ लोक मान्यता के कारण गाँव में पूजा के थानक बने पूजे जाते थे, और गर्मियों में गाँव के चरवाहे भेड़, बकरियों को खिलाने के लिए इनकी शाखाएँ छींग देते थे। औरते पकी फलियों को सूखा लेती थी और गर्मियों में जब साग-सब्जी की कमी रहती तो काम में ले लेती। कहते है, छप्पनियाँ अकाल में यह बहुत बड़ा सहारा बनी थी।

रामभरोस अभी भी बरगद के पौधे के पास विचारशील मुद्रा में बैठा था। सिर पर बंधा गमछा खुल गया था जिसका एक छोर सिर पर और दूसरा बाँये कंधे पर लटक रहा था। बाड़े के दरवाजे पर खड़ी उसकी घरवाली कब से उसे पुकार रही थी; उसे ज़रा भी भान नहीं था। वह तो बरगद की विशालता का आकलन करता किसी अलग ही दुनियाँ में पहुँच गया था। पत्नी ने रामभरोस का कंधा झकझोर कर कहा,

" कब से बुला रही हूँ, कहाँ खो गये हो?"

पत्नी के स्पर्श से रामभरोस की चेतना लौटी। वह गमछा उतारकर मुहँ पौछने लगा। उसकी पेशानी पर चमकती पसीने की बूँदे मन के द्वंद्व को चेहरे पर उड़ेल रही थी।

पत्नी ने पूछा, " क्या बात हुई?"

रामभरोस ने बरगद के पौधे की ओर इशारा करते हुए कहा, " देख तो सावित्री हमारे बाड़े में यह बरगद का पौधा उग आया।" सावित्री ने नन्हें बरगद को घूरते हुए कहा, "तो इसमें कौन बड़ी बात है, जी!"

"बात छोटी या बड़ी नहीं है, बात तो यह है कि हमारे पूरे गाँव में बरगद का पेड़ नहीं है फिर यह पौधा कैसे उग आया? बीज कौन लाया, किसने लगाया?"

हाँ, यह तो है! सावित्री के चेहरे पर भी आश्चर्य के भाव उभर आये।

वह पौधे के निकट बैठते से बोली, "कुदरत भी कितनी अजब-गजब है न! किसे कहाँ, कब किस हालात में पैदा करना है, यह वही जानती है।"

रामभरोस ने सिर हिलाकर पत्नी की बात का समर्थन करते हुए कहा, " पर, इसकी जगह यह नहीं है, मैं इसे घर के आँगन में लगाऊँगा, और खूब सार सँभाल करूँगा। देखना यह एक दिन विशाल पेड़ बनकर हमें छाँव देगा।"

सावित्री साड़ी के पल्लू में उलझे झाड़ को हटाते हुए बोली, " पर, अभी तो यह बहुत छोटा है, इसे यहाँ से हटाया तो सूख न जाएगा?"

रामभरोस को पत्नी की बात में दम लगा, उसने पत्नी को प्यार से निहारते हुए कहा, "कभी-कभी तो तुम भी समझदारी की बात कर देती हो, सावित्री!"

सावित्री पति की ओर देखकर झेंपकर मुस्कराने लगी।

पल भर को दोनों आँखों के रास्ते प्यार के झरने में जा उतरे। बाड़े के नीम पर बैठे तोते के जोड़े ने पंख फड़फड़ाएँ। गुलाब के फूल पर बैठी तितली को भँवरे ने छेड़ा। सहसा रामभरोस उठ खड़ा हुआ। सावित्री भी हड़बड़ाकर खड़ी हो गई। उसे लगा जैसे किसी ने उन दोनों को इस हाल में देख लिया हो। उसने पीछे मुड़कर देखा, बाड़े के दरवाजे पर खड़ा नन्हा सूरज दोनों हाथ उठाये माँ, माँ पुकार रहा था। सावित्री ने दौड़कर बेटे को उठाया और बाँहों में भरकर चूमने लगी।

कुछ दिनों बाद रामभरोस ने देखा बरगद के पौधे पर तीसरा पत्ता खिल चुका था, वैसा ही चिकना, रक्ताभ जैसे पहले के दो पत्ते थे। चौथा पत्ता कोंपल में दीपक की जलती बाती की तरह दहक रहा था। रामभरोस को लगा अब इसे आँगन में लगाया जा सकता है। उसने घर के आँगन के बीचोंबीच दो गुणा तीन फुट का गड्ढा बनाया। बाड़े की उपजाऊ मिट्टी में गोबर की खाद मिलाकर गड्ढे को फिर से आधा

रामभरोस की मेहनत रंग ला चुकी थी। बेटा सूरज सरकारी सेवा में बड़ा अफसर बन गया। पर जिस बरगद को उसने सुख की छाँव में बुढ़ापा काटने की कामना से आँगन में रोपा था। वह पूरी न हो सकी। रामभरोस को लाइलाज बीमारी ने घेर लिया। पिता की बीमारी का समाचार सुन सूरज गाँव आया।

भर दिया। वह बाड़े में जाकर कुदाली से बरगद के पौधे के आसपास की मिट्टी धीरे-धीरे हटाने लगा।

सावित्री भी बीच-बीच में पति को बिना मांगे सलाह देने लगी।

" देखो धीरे-धीरे खोदना, कहीं पौधे की जड़ टूट न जाए, आहिस्ता से निकालना ।"

"हाँ, हाँ, सावित्री मैंने जीवन में कई पेड़ लगाए हैं। जिनमें से कई अभी भी फल-फूल रहे हैं।

मैं जानता हूँ, पौधे से एक फुट दूर चारों ओर की मिट्टी गहराई तक खोदकर ढेले सहित पौधे को निकालने पर जड़ नहीं टूटती।"

"हाँ.. हाँ.. पता है, कितने पेड़ लगाए है, तुमने ! जब मैं ब्याहकर आई थी तब तो पूरे घर और बाड़े में एक खेजड़ी के पेड़ के सिवाय दूसरा पेड़ नहीं था और जिसे तुम अपने द्वारा लगाये कह रहे हो, वे सब मेरे हाथों खड़े हुए हैं। कोरा पौधा रोपना पेड़ लगाना नहीं होता। उसकी बच्चों की तरह सार सँभाल करनी होती है।

हूँह्ह्.. बहुत पेड़ लगाये हैं !!?

रामभरोस पत्नी की ओर देखकर हँस पड़ा। वह जानता था कि सावित्री ठीक कह रही है। उसके आने से पहले घर के आँगन में खेजड़ी का एक ही पेड़ था। उसने माँ को कहते सुना था। "यह खेजड़ी तेरे दादा ने रोपी थी।" रामभरोस को याद आया कैसे उसके बचपन में गौरैया के दल के दल खेजड़ी की शाखों पर टूट पड़ते थे। कौवों की काँव-काँव जो अब सुनाई नहीं देती है। झुंड के झुंड खेजड़ी पर कोहराम मचाते थे। कई बार तो माँ कौवों को भगाते हुए गालियाँ तक दे देती थी। गर्मी की बढ़ती तपिश के साथ खिलने वाले इसके फूलों का मकरंद पीने चिटियों की लम्बी-लम्बी कतारे तने से लेकर डाल डाल पर दौड़ती रहती थी। माँ के हाथों बनाई गई सूखी फलियों की सब्जी का स्वाद उसे आज तक याद है। वह अक्सर सावित्री से कहता, "सेंगरी का साग माँ से बढिया कोई नहीं बना सकता।"

यह सुन सावित्री चिढ़ने लगती।

रामभरोस हालात तो ताड़कर बात बदल देता। उसे पता था माँ के जाने के बाद सावित्री ने पत्नी के साथ-साथ माँ की भूमिका भी बखूबी निभाई है।

" साग भाजी तो तुम भी बढ़िया ही बनाती हो, सावित्री !"

सावित्री पति की चालाकी समझकर हँस पड़ती।

बाड़े में नीम के दो पेड़ भले ही उसने रोपे थे। पर, उनकी पूरी सार सँभाल सावित्री ने की थी।

वे आज उसकी बदोलत ही हरे हैं।

रामभरोस ने बरगद के पौधे को ढेले सहित निकाला और उसे आहिस्ता से उठाकर आँगन की ओर चल दिया। सावित्री भी कुदाली उठाकर पति के पीछे हो चली।

उसने आँगन के बीचोंबीच बने गड्ढे में पौधे को सीधा खड़ा किया और ऊपर से बाड़े की गोबर मिली मिट्टी भर दी। सावित्री ने बाल्टी भरकर पानी उड़ेल दिया। नन्हे सूरज को तो इन सब से कोई सरोकार नहीं था। वह तो कुदाली उठाकर दोनों पैरों के बीच लेकर घोड़े की सी सवारी करने लगा।

रामभरोस ने पौधे से तीन फुट की दूरी पर चारो और मिट्टी की एक फुट ऊँची गोल मेड़ बनाकर, आठ-दस गड्ढे बनाये और जलावन की लकड़ियों में से सीधे-सीधे डंडे चुनकर गाड दिये। गाँव में बिजली के तार खींचते समय तारों के कुछ टुकड़े हाथ लग गये थे, जिन्हें वह बिजली कर्मचारियों से नजरे चुराकर उठा लाया था। वे आज काम में आ गये। उसने तारों को डंडों के चारों और इस तरह लपेट दिया कि कोई जानवर पौधे को नुकसान नहीं पहुँचा सके। ।

समय के सहारे रामभरोस और सावित्री की सार सँभाल में बरगद का पौधा धीरे-धीरे बढ़ने लगा। रामभरोस उससे थोड़ी दूरी पर चारपाई बिछा लेता और घंटों उसे निहारता रहता। विचारो की अनगढ़ कड़ियाँ सृजन की श्रृखंला में जुड़ती जाती।

"रक्ताभा लिये तेलिये पत्तों की संख्या चार से पाँच, छ, सात को पार कर गई। तने पर ईख की पंगेरियाँ सी बनने लगी है। दुधिया रंग की परत यौवन के तेज को सहन न करपाने के कारण चटकने लगी है। पत्ते पारदर्शी काँच की तरह चमकने लगे हैं । नसों में दुधिया रस झरने लगा है। नन्ही गौरैया आसपास फुदकने लगी हैं ।" ऐसे कई विचार उसके मस्तिष्क में उड़ान भरते रहते। तेजी से उठान के कारण जानवरों से बचाव के लिए रोपे डंडों का ऊपरी हिस्सा कुछ दिनों बाद खोल दिया गया। अब तो गाँव भर में बरगद के पौधे की चर्चा होने लगी। लोग आपस में बाते करते, " सुना है तुमने ! रामभरोस ने अपने आँगन में बरगद का पौधा लगाया है ?"

सुनने वाला चौककर कहता," बरगद का पेड़ !"

"हाँ भाई ! बरगद का पेड़"

"तू झूठ तो नहीं बोल रहा ?"

"झूठ ! कैसा झूठ, और इसमें झूठ बोलकर मुझे क्या मिलेगा, जाकर देख आओ। हाथ कंगन को आरसी क्या ?"

"अरे भाई ! मेरी पचास बरस की उमर है, मैं गाँव की मिट्टी को जानता हूँ; यहाँ नीम, बबूल, खेजड़ी के अलावा कुछ नहीं होता।"

"ओ.. भाई सुन ! कुदरत का काम अलग ही होता है। वह कौनसा बीज कब, कहाँ रोपदे कोई नहीं जानता। विधाता की मर्जी के आगे

चली है किसी की!"

अब तो रामभरोस के घर की ओर लोगों की भीड़ उमड़ने लगी। औरते, आदमी, बच्चे, बूढ़े सब बरगद के पौधे का दीदार करने आने लगे। बरगद की चर्चा गाँव की सीमा को विजित कर दूसरे गाँवों तक फैल गई। ऐसा लगने लगा कि यह बरगद का पेड़ न होकर इन्द्रकानन का पारिजात हो। जिसके नीचे खड़ी होकर देवकन्याएँ चिरयौवन का वरदान पाने की मंगल कामना करती हैं।

धीरे-धीरे नन्हा बरगद विशाल दरख़्त में बदल गया। चिकने पत्तों से लदी शाखें दूर दूर तक फैल गई। कई सारे कोठरों में सुआ, गौरैयाँ, बुलबुल के जोड़ों ने अधिकार कर अपनी गृहस्थी जमा ली। सुबह-शाम पक्षियों के कलरव से घर चहकने लगा। रोज शाम को मोर-मोरनी का एक जोड़ा सबसे ऊँची शाखा पर आ बैठता और सोने से पहले में..आवो,में.. आवो की टेर से अपने साथियों को रात्रि संदेश देना कभी न भूलता। दूर पेड़ों पर बैठे साथी भी उसके सुर में सुर मिलाते और थोड़ी देर के लिए सारा वातावरण मोरों की प्रतिध्वनि से गूँज उठता था। सुनने वालो के कानों में मिश्री सी घुल जाती।

ऊँची शाखों पर बगुलो के जोड़े ऊँघने लगते। तो कोई विदुर बगुला बगल की शाखा पर हो रही प्रणय लीला को देख विरह में डूब गर्दन पैरों के बीच दबा रात को कोसने से नहीं चूकता। छोटी शाखों के जोड़ पर मैना के एक जोड़े ने अपनी गृहस्थी जमा ली। तो बया का एक जोड़ा न जाने कहां से आकर अपनी कुशल कारीगरी से बसेरा जमा बैठा। बरगद के तने को घेरकर बने चबूतरे पर दिन भर बच्चे खेलते रहते। वे इसकी जमीन छूती जटाओ को झूला बनाकर झूलने लगते। गाँव वालो के लिए तो यह किसी वेद, हकीम से कम न था। किसी के शरीर के जोड़ो में दर्द होने या फिर बाय-बादी की टीस उठने पर इसके चार-पाँच पत्ते कंड़े की राख पर गरम कर बांधने पर आशा के अनुरूप आराम हो आता। तो कोई अपनी खोई मर्दाना ताकत पाने के लिए इसका दूध बतासे में टपकाकर महीने भर गटकता रहता। इसकी छाल को सूखाकर बनाया पाउडर दाँतों को मजबूती देता। तो बीजों को पीसकर बनाया महीन पाउडर गाय के दूध के साथ पीने पर पेशाब की जलन दूर करता।

समय का पहिया अपनी गति से चलता रहा।

रामभरोस की मेहनत रंग ला चुकी थी। बेटा सूरज सरकारी सेवा में बड़ा अफसर बन गया। पर जिस बरगद को उसने सुख की छाँव में बुढ़ापा काटने की कामना से आँगन में रोपा था। वह पूरी न हो सकी। रामभरोस को लाइलाज बीमारी ने घेर लिया। पिता की बीमारी

का समाचार सुन सूरज गाँव आया।

बेटे को देखकर रामभरोस की मुरझाई आँखे नई रंगत भर चमक उठी। चेहरे की झुरियों में खींचाव आ गया। पोपला मुँह झूलते गालों का साथ पा हँस पड़ा। आँखों पर चढ़ा चश्मा जिसकी एक डंडी की जगह मटमैला धागा बँधा था। हृदय की बाढ़ को रोकने में असफल रहा। उसने चारपाई पर बैठने का प्रयास किया। पर गले में अटके कफ़ का आमंत्रण पा खाँसी आ गई। । वह बहुत देर तक खाँसता रहा। सावित्री ने पति की छाँती दबाकर सामान्य करने में मदद की। सूरज ने चारपाई पर लेटे पिता के पैर छूये तो रामभरोस के अस्थि-पंजर में झुरझुरी सी दौड़ गई। उसकी आँखों में बरगद का पौधा तैरने लगा जिसकी सार सँभाल में उसने कोई कसर न छोड़ी थी। उसने बेटे का हाथ पकड़कर अपनी ओर खींचा।

सूरज ने पिता के सिर को गोद में लिया और हाथ फेरने लगा। आँखों के तटबंध भरकस प्रयास करने पर भी टूटे बिना रह नहीं पाये। तपती बूँदे रामभरोस पर जा गिरी।

"अरे तुम रोते हो!"

"नहीं तो!"

"रोना हमारा धर्म नहीं है, यह तो कायरता है। सावित्री! सावित्री कहां है?"

सूरज ने माँ का हाथ पिता के हाथ पर रख दिया।

सावित्री पति के हाथ को कसकर पकड़कर फफक पड़ी।

"सूरज ! सूरज कहाँ है?"

मौत दस्तक देने से पहले अतीत की यादों में रंग भरे बिना नहीं रहती। काले, पीले तरह तरह के रंग।

बाड़ा, बरगद का पौधा, आँगन एक-एक कर गतिशील बिम्बों की तरह गुजरने लगे।

"सावित्री! इसकी जगह यह नहीं है, इसे में अपने आँगन में लगाऊँगा। पूरे गाँव में एक भी बरगद नहीं है। देखना यह हमें छाया देगा।"

सूरज पिता के सिर को सहला रहा था। रामभरोस की चेतना धीरे-धीरे अंतिम राह पर बढ़ रही थी।

"सावित्री! सूरज से कहना यह बरगद मैंने बहुत मेहनत से लगाया है। इसे सूखने मत देना। यह गाँव भर का पहला बरगद है। "

सूरज की आँखों से गरम धार बह रही थी।

सावित्री ने अपनी असहाय वेदना को दबाने के लिए ओढ़नी का एक छोर गेंद सा बनाकर मुँह में ठूँस लिया।

रामभरोस को हिचकी उठने लगी।

उसने हकलाते, हकलाते कहा," सावित्री! सूरज से कहना एक बरगद वह भी लगादे, अब बीजों की कमी नहीं है और अपने बेटे से भी.."

अंतिम हिचकी...

रामभरोस की गर्दन एक ओर लटक गई। आँगन के बरगद से टूटकर एक पीला पत्ता जमीन पर आ गिरा।

45 के बाद बढ़ती बीमारियों से बचने के उपाय

मुकेश कुमार सिंह
योगाचार्य

आज बढ़ती उम्र में हो रही बीमारिया आधुनिक जीवनशैली की देन है कि हर इंसान परेशान है। चाहे वह बड़ा हो या छोटा हो क्योंकि बड़े भी दिन-भर पैसा कमाने के लिए रात-दिन काम कर रहे है 12 घंटे बैठ कर कम्प्यूटर पर काम करना हो या रोज काम के लिए चार घंटे गाड़ी से आना-जाना पड़े, जीवनशैली को पूरा करने के लिए कार्य करते है जिसके कारण समय पर खाना और नाश्ता भी नहीं हो पाता है ज्यादा बैठा कर काम करने से भी कमर दर्द होने लगता है। आज अपने लिये कोई समय नहीं है बस हर समय काम चाहे आफिस हो या घर हो काम करना है इस व्यस्तता भरी जिंदगी में उसके जागने और सोने का भी कोई समय नहीं होता है और न ही खाने पीने का कोई सही समय जहां जो मिला खा लिया और खान- पान संतुलित नहीं होने से पेट में समस्या होने से हमेशा हमारे अंदर बेचैनी सी बनी रहती है, क्योकि आजकल घर पर भी खाना बनाना बहुत मुश्किल हो रहा है और घर का खाना ज्यादा पंसद भी नहीं आता है आज घर के खाने को छोड़कर लोग ज्यादातर जंक फूड /फास्ट फूड खाना ज्यादा पसंद करते हैं। जिसके कारण अनेक प्रकार के रोगों से ग्रस्त हो रहे हैं जैसे मोटापा,तनाव, हृदय रोग, जोड़ो के दर्द और कमर दर्द की भी समस्या हो रही है। आहार नियमों के विपरीत भोजन करने वाले लोग भी अक्सर परेशान रहते है, ज्यादातर जंक फूड/फास्ट फूड जैसे समोसा, पिज्जा, चाउमीन, बर्गर, रोल, चाउमीन, पैटीज, मोमोज, इन सभी ने आज के खान-पान पर अपना कब्जा कर लिया है आजकल संतुलित आहार छोडकर जंक फूड/फास्ट फूड खाना

ज्यादा पसंद भी करते है। लेकिन शायद यह पता नहीं है कि जंक फूड अक्सर खाने से हमारा शरीर शिथिल हो जाता है और हमारा शरीर हमेशा थका हुआ महसूस होता है ज्यादा जंक फूड खाने से दिल की बीमारी एवं तनाव भी बहुत बढ़ जाता है तनाव एक बहुत ही छोटा शब्द है दिखाई नहीं देता है लेकिन अंदर ही अंदर इंसान को तोड देता है व्यक्ति शारीरिक एंव मानसिक दोनों तरह से बीमार होता चला जाता है इसी तरह मोटापा और कमर दर्द भी इंसान की जिंदगी में अनेक रोगों का कारण बनता है जैसे डायबिटीज,कैसर, हदयरोग, डिप्रेसन की समस्याओं एवं अनेक प्रकार के रोग होने लगते है। आज दवा की दुकान की संख्या दिन बा दिन बढ़ती जा रहीं है और हर दवा की दुकान पर भीड़ लगी रहती है। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि कितने ज्यादा लोग बीमार हो रहे है और जितने ही अस्पताल है सब में भीड़ ही लगी रहती है। इससे बचने के लिए फास्ट फूड और जंक फूड को कम करें या खाने से बचें और घर का भोजन और मौसमी फल और मौसमी साग -सब्जी जरूर खायें कुछ समय प्रकृति के साथ जरूर बिताये यह जीवन जीने की एक अलग खुशी देता है सुबह सूरज निकले से पहले उठे उगता सूरज एक नई ऊर्जा और नई प्रेरणा और एक सकारात्मक ऊर्जा और आत्मविश्वास देता है जिससे हमारा शरीर मजबूत होता है। कई सारे रोगों से लडने की शक्ति मिलती है। सुबह सूरज की किरणों से विटामिन डी मिलता है जिससे हमारी हडिडया और मजबूत होती है और हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढती है जिससे बढ़ती उम्र में स्वस्थ और निरोगी रहे।

उत्तम स्वास्थ्य के लिए संतुलित आहार और नियमित योग एवं प्राणायाम, करें और शारीरिक श्रम करें, नियमित सुबह टहले और थोडी दूरी जाने के लिए वाहन न निकलें जितना हो सके पैदल चले साथ ही कुछ योग प्राणायाम जरूर करें जिससे हमेशा शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रहें।

40 के बाद बढ़ती बीमारियों से बचने के लिए कुछ सरल योग एवं प्राणायाम इस प्रकार है।

ताड़ासन

ताड़ शब्द का अर्थ है ताड़ या खजूर का पेड़। इस आसन के अभ्यास से स्थायित्व व शारीरिक दृढ़ता प्राप्त होती है यह खड़े होकर किये जाने वाले सभी आसनों का आधार है। इसलिए ताड़ासन को नियमित करना चाहिए।

अभ्यास की विधि

- सर्वप्रथम पैरों के बल खड़े हो जाएं तथा दोनों पैरों के बीच दो इंच की दूरी रखें।
- सांस अंदर ले हाथों को सामने की ओर कंधो के स्तर से तक उठाए।
- दोनों हाथों की अंगुलियों को आपस में एक-दूसरे में फसाएं तथा हथेलियों को बाहर की ओर श्वास भरते हुए दोनों भुजाओं को सिर से ऊपर उठाएं।
- भुजाओं को ऊपर ले जाने के साथ -साथ पैर की एड़ियों को जमीन से ऊपर उठाएं और पैर की अंगुलियों पर अपना संतुलन बनाएं। इस स्थिति में अपनी क्षमतानुसार रूकें रहें।
- एड़ियों को वापस जमीन पर ले आएं।
- श्वास को छोड़ते हुए हाथ की अंगुलियों को अलग- अलग करें, भुजाओं को वापस लाएं, इसके बाद प्रारंभिक स्थिति में वापस आ जाएं।

शारीरिक लाभ

इस आसन के नियमित अभ्यास से शरीर में स्थिरता आती है। यह मेरूदण्ड से सम्बन्धित नाड़ियों के रक्त संचय को ठीक करने में भी सहायक है। किशोरों के शरीर की ऊँचाई बढ़ती है।

मानसिक लाभ

व्यक्ति तनाव रहित होता है उसकी एकाग्रता बढ़ती है। मानसिक शांति मिलती है।

सावधानियां एवं सीमाएं

जिन व्यक्तियों को आर्थराइटिस तथा चक्कर आने जैसी समस्याएं हो उन्हें एड़ियों पर उठने पर प्रयास नहीं करना चाहिए। अन्तिम स्थिति में रूकने की समय सीमा अपने सामथ्र्यानुसार रखनी चाहिए।

वृक्षासन

वृक्ष शब्द का अर्थ है पेड। इस आसन की अंतिम अवस्था में शारीरिक स्थिति एक पेड के आकार में बनती है इसलिए इस आसन का नाम वृक्षासन है।

- वृक्षासन का अभ्यास करते समय सीधे खडे हो जाए दोनों पैरों के बीच में 2 इंच का अंतर बनाये।
- सांस को शरीर के बाहर छोडते हुए दांए पैर को ऊपर रखें एडी मूलाधार क्षेत्र से मिली होनी चाहिए।
- बिल्कुल समाने की तरफ देखें सीधी नजर सही संतुलन बनाने में अत्यन्त सहायक है।
- सांस को अंदर लेते हुए दोनों हाथों को ऊपर की ओर ले जाकर नमस्कार मुद्रा में जोडे। और शरीर में किसी प्रकार का तनाव न महसूस करें।
- इस स्थिति में 10 से 30 सेकेंड या अपनी क्षमतानुसार रूके रहें।
- सांसो को बाहर छोडते हुए दोनो हाथों को नीचे लाये।
- शरीर को शिथिल करते हुए इस आसन को दूसरे पैर से करें।
- इस आसन का अभ्यास कम से कम तीन बार दोनों पैरों पर करें या अपनी क्षमतानुसार करे।

वृक्षासन के लाभ

- यह आसन तंत्रिका से संबंधित स्नायुओं के समन्वय और पैरों को मजबूती प्रदान करता है एवं संतुलन बनाने में सहायक है।
- एकाग्रता बढाने में सहायक है।
- यह आसन मस्तिष्क में स्थितिरता और संतुलन लाता है।

सावधानियां

आर्थराइटिस, माइग्रेन,उच्च रक्त चाप से पीडित है या चक्कर आने पर इस आसन को न करें।

एक दूसरे से इतना जलन क्यों ?

सुषमा त्रिपाठी

इस बदलते हुए युग में बदलते हुए परिवेश में लोग एक दूसरे से इतना ज्यादा इर्षा करने लगे हैं क्योंकि जितना क्योंकि जितना आप तरक्की करोगे उससे ज्यादा लोग आपसे जलन की भावना रखेंगे सबसे ज्यादा तो आपके अपने ही परिवार के लोग रिश्तेदार सभी लोग जलते लगेंगे बस आपकी तरक्की शुरू हो जाए बस

कुछ लोग तो इतना जलन रखते हैं कि उनका बस चले तो वह आपकी हर खुशी छीन ली इस जलन के पीछे का कारण यही होता है कि आज के युग में कोई भी एक दूसरे को अपने से ऊपर देखना ही नहीं चाहता है फिर वह कोई बेगाना हो या अपना हर कोई यही चाहता है कि वह ऊपर हो और बाकी सब उसके नीचे हो इसलिए जब कोई तरक्की करता है तो जो आपके पीछे रह जाएगा या फिर जिससे लगता है कि आप जल्दी उससे भी आगे निकल जाएंगे तो वह आपसे जलन करने लगता है

इसका सबसे अच्छा और कारगर इलाज यही है कि आप बिना किसी की परवाह किए मेहनत करते रहिए और कभी पीछे मुड़कर मत देखिए लोगों का क्या है लोगों का तो काम काम यह एक दूसरे के प्रति जलन का भाव रखना टू वह बोलते ही रहेंगे कुछ भी कह देंगे उनकी परवाह करनी ही नहीं चाहिए

लोग एक दूसरे की कामयाबी से इसलिए जलते हैं कि हर कोई उन्हें खुद की कमी असफलता का एहसास कराती है जब वह देखते हैं कि कोई ऊंचाई या सफलता हासिल नहीं कर रहा है जिसकी उन्हें भी ख्वाहिश थी तो वह भीतरी भीतर तुलना शुरू हो जाती है यह तुलना अक्सर उनके अंदर सुरक्षा हीन भावना को जन्म देती है कि वह आपसे आगे निकल गए और आप वहीं रह गए बस यही से जलन की भावना शुरू हो जाती है यह कैसे इतना आगे हो गया मैं तो वहीं के वहीं खड़ा हूं ऐसे पीछे धकेला जाए कैसे इसको नीचे किया जाए

लोग एक दूसरे से ऐसा जन्म निभाना रखते हैं कि वह जलन धरती आज से भी ज्यादा खतरनाक होती क्योंकि आज तो फिर काम हो जाती है और अंत में रख का रूप ले लेती है जो कि लोग कहते हैं आपकी बात पर आते हैं तो पाते हैं कि जब तक इंसान जिंदा रहता है तब तक लोग उससे कहीं ना कहीं जलते ही रहते हैं और उसी तरह से उसकी मृत्यु होने के बाद के साथ उसका को भी दबा देते हैं

और इसीलिए कहावत है कि लोग कहते हैं की रस्सी जल गई मगर ऐंठन नहीं गई इसी तरह से इंसान एक दूसरे से जलते

आखिर क्यों लोग दूसरे की कामयाबी से जलते हैं किसी की कामयाबी से जलने से आसानी फितरत होती है क्योंकि हम किसी को खुद से बेहतर नहीं देख सकते इंसान को लगता है कि सिर्फ वही कामयाब है बाकी दुनिया में उसके अलावा बाकी सब नीचे हैं बाकी लोग उसके सारे पर नाचते हैं लेकिन ऐसा नहीं होता है यह भ्रम है हर किसी इंसान को उसके मेहनत के मुताबिक कामयाबी मिलती है अगर हमने किसी भी चीज को पाने के लिए पसीना बहाया है तो उसको पाने की तमन्ना भी हमें रखनी ही है और अगर हमने किसी चीज के लिए मेहनत नहीं की है तो उसको पाने की तमन्ना रही नहीं रखनी चाहिए

और यह वही लोग हैं जो खुद को आपसे ज्यादा बेहतर बताते हैं वह खुद कुछ नहीं करते जिंदगी में और बाकियों को सब कुछ बताते हैं उन लोगों की कामयाबी में बहुत ज्यादा जलते हैं जिन्होंने अपनी मंजिल को पाने के लिए बहुत सारे त्याग किए हैं और अपनी जिंदगी से समझौता किया हो अभी मेहनत करके आगे बढ़ पाता है जिसे हर

किसी की गलियां खाई हो मेहनत करिए और बिना पीछे मुड़े हुए झुके हुए लगातार हर परिस्थिति को झेलते हुए आगे बढ़ता रहा हो

आपने एक बात पर कॉल किया होगा कि किसी के कामयाबी से जलते हैं तो लोग भी नहीं जानते कि आप उनसे आगे बढ़ाना क्योंकि कामयाबी वक्त मांगती है लोग एक दूसरे की कामयाबी से जलते हैं क्योंकि उन्हें अपनी खुद की कमी असफलता का एहसास नहीं होता

जलने वाले लोग जगह देखते हैं कि कोई अपनी तरक्की से जल रहा है कोई आपकी तरीके से जल रहा है और वह मंदिर हासिल करने जा रहा है जिसे आप चाहते थे जल बुनकर हुई राख हो जाते हैं उन्होंने ख्वाहिश की थी तो फिर उनके भीतर एक चलना शुरू हो जाती है यह इतना अक्सर उनके अंदर असुरक्षा और हीन भावना को जन्म देती है

कई बार तो जलन इसलिए भी होती है क्योंकि लोग खोजते हैं कि उन्हें भी वही मौका और सफलता मिलनी चाहिए थी समझने में असफल रहते हैं कि हर किसी को मेहनत हालत संघर्ष अलग-अलग तरीके से के होते हैं उनकी नजर बस दूसरे की कामयाबी पर होती है लेकिन उसके पीछे की मेहनत और कुर्बानी को नहीं देख पाती नरेंद्र दास कर जाते हैं क्योंकि जलते वही है जो कुछ नहीं कर पाते और दूसरों को आगे बढ़ते हुए नहीं देख सकते

लोग दूसरे को संतुष्ट संपन्न देखकर जलते हैं लोग हमारी मुस्कान से हमारे पास उपलब्ध संसाधनों से ज्ञान से सामाजिक स्तर से हाजिर जवाबी से पद प्रतिष्ठा से हर किसी से सफलता से धैर्य से हमारी कमाई से हर किसी चीज से जलते हैं और अंत में आप क्यों हो कैसे हो किस लिए हो हमारी हर उसे बात से जलते हैं जिससे हमने तरक्की पाई हो तरक्की तो तजुर्बे से मिलती है इस भाग दौड़ भरी जिंदगी में लोग अपने बारे में ज्यादा सोचते हैं क्योंकि लोग किसी को भी आगे

बढ़ते नहीं देखना चाहते इस संसार में एक इंसान अगले को देखकर एक बार परेशान होता ही है ऐसे किसी के पास गाड़ी है बंगला है पैसा है पढ़ाई ऐसे बहुत से कारण होते हैं जिसके लिए एक दूसरे को देखकर जलते हैं लोग

क्यों दूसरों से इंसान इतना जलता है इस वजह से समाज में आत्मा का रूप शुद्ध एवं ज्योति स्वरूप है आत्मा के साथ विशेष गुण है ज्ञान प्रेम शांति पवित्रता आनंद सुख व शक्ति आत्मा निराकार इस सरकार पांच तत्वों में निर्मित शरीर को चलती है आत्मा शरीर का मालिक है सभी आत्म स्वरूप में भाई-भाई हैं इस दृष्टि से पवित्रता व प्रेम बढ़ता है ईशा क्रोध आदि का कोई भी स्थान नहीं किंतु हम आत्मविश्वास स्मृति के कारण देवबंद में आ गए हैं इसी वजह से अनेक सूक्ष्म विकार अंदर प्रवेश कर गए हैं हम इन विकारों को स्वाभाविक मान रहे हैं जो कि उनके बिना हमारी गाड़ी चलने वाली नहीं है किंतु यह विकार है इनके कारण स्वयं भी दुखी होता है और दूसरों को भी दुखी करता है मनुष्य

चेहरा साफ मन में दाग सामने ताली पीठ पीछे गली मुंह पर आप कुछ कहते हैं और मन में कुछ और होता है बस यही चल रहा है आजकल के लोगों का रिवाज पता नहीं लोग इतनी चालाकियां क्यों करते हैं साथ में भी रहते हैं और जलते भी हैं रिश्ता भी रखते हैं दुश्मनी भी रखते हैं तारीफे भी करते हैं और पीठ पीछे बुराई भी करते हैं मुस्कुराता हुआ परिवार हर किसी को अच्छा नहीं लगता इसलिए कुछ लोग उसे तोड़ने की पूरी कोशिश ना लगे रहते हैं जिंदगी में किसी भी व्यक्ति को छोटा समझकर उसका अपमान नहीं करना चाहिए व्यक्ति छोटा हो या बड़ा हो गरीब हो या अमीर हो हर किसी का सम्मान करना चाहिए ना चाहते हुए दूर से ही सही जरूर नमस्कार करना चाहिए यह वक्त का पहिया है जन्म यहां तुम मृत्यु कहीं और और यहां राजा को रंग बनते देर नहीं लगती और रंग से राजा कहते हैं की सारी दुनिया की फिक्र ना करके अपनी दुनिया में मत रहना चाहिए जो भी इंसान है रहेगा तो रहेगा इंसान ही अपनी जिंदगी अपनी दुनिया सब कुछ अपने हिसाब से अपने अनुसार चलें किसी बात की जलन किसी बात की चालक की है ना रखें जब हम अपने में सुधार करेंगे तो बाकियों में सुधार अपने आप आएगा हर कोई अपनी तकदीर दुनिया में अपने साथ लेकर चल रहा है हमें इस पंक्ति का अनुसरण करना चाहिए ऐसी वाणी बोलिए ना मां का आप कोई अपना तन शीतल करे एक दूसरे के प्रति प्रेम भाव रखते हुए हमें आगे बढ़ाना है

सब्जियों का संसार

सब्जियों का संसार निराला
भिण्डी हरी तो बैंगन काला
लकी लौकी नरम नरम सी
अरबी चिकनी लगे भ्रम सी
आलु सदाबहार अभिनेता
संग गोभी को अपने लेता
मिर्ची तीखी हरी लाल सब
गाजर मीठी रचे जाल सब
मूली के भी ठाठ निराले
करोंजा पढ़े पाठ निराले
नरम ककड़ी अकड़े जब
परमल ग्राहक पकड़े तब
है टमाटर इन दिनों भारी
अन्य सब्जियां उससे हारी
फल भी विफल टमाटर आगे
लगता अब सब पानी माँगे
आज टमाटर आम पर भारी
बन रहा बाप दाम पर भारी
चीकू अंगूर केला सब फीके
टमाटर आगे कमसिन दीखे
बिन टमाटर सब्जी कैसी
रात चाँद बिन लगती जैसी
हुए भाव अब दो सौ पार
वी आई पी में हुए शुमार
पालक मैथी प्याज बिचारे
सभी आज मंदी के मारे
रंग लाल हुए तेवर भी लाल
ठोक रहे टमाटर सबसे ताल
भूले पापाजी टमाटर लाना
कहते किसी को नहीं बताना

- व्यग्र पाण्डे

जंगल से मंगल

जंगल है जग के लिए कुदरत का वरदान
सदा बांटते संपदा उन्नति के सोपान
जंगल बड़े पवित्र हैं जंगल बड़े महान
ऋषियों मुनियों को रहे यह तप के उद्यान
जीव जंतुओं को सदा जंगल देते छांव
जाएंगे जंगल बिना बेचारे किस ठांव
आदिवासियों के लिए आया कहां विकास
जंगल से मंगल रहे करिए इनसे प्यार
यह जीवन संजीवनी औषधि के आधार
करते हैं जंगल सदा पर्यावरण सुधार
होता है इनके बिना जीवन यह दुश्वार
हरे भरे जंगल कटे किस कहे पुकार
शामिल जब षड्यंत्र में साहब ठेकेदार
जंगल मेरे तप तब इन्हें काटना पाप
ध्यान रखें इनका सदा वरना देंगे श्राप
वृक्ष काटना है नहीं हत्या से कम काम
पड़े भोगने एक दिन भीषण दुष्परिणाम
यह सच्चाई जान ले पेड़ों में भी जान
सुख दुख में रोएँ हंसे ज्यों कोई इंसान

- सदाराम सिन्हा

आज बहुत बीमार है गंगा

जीवो पर उपकार है गंगा
सहज मुक्ति का द्वार है गंगा

कहने को है एक नदी पर
एक संस्कृति, संस्कार है गंगा

जप -तप -ध्यान -तीर्थ व्रत जैसे
पुण्य कर्म का सार है गंगा

सतयुग,त्रेता, द्वापर,कलयुग
हर युग में साकार है गंगा

हरिद्वार, काशी, प्रयाग को
करती अधिक दुलार है गंगा

गंगा पूजक शिव को प्रिय है
गंगाधर का प्यार है गंगा

कहां सो रहे गंगा पुत्रो !
आज बहुत बीमार है गंगा

- धर्मेन्द्र गुप्त साहिल

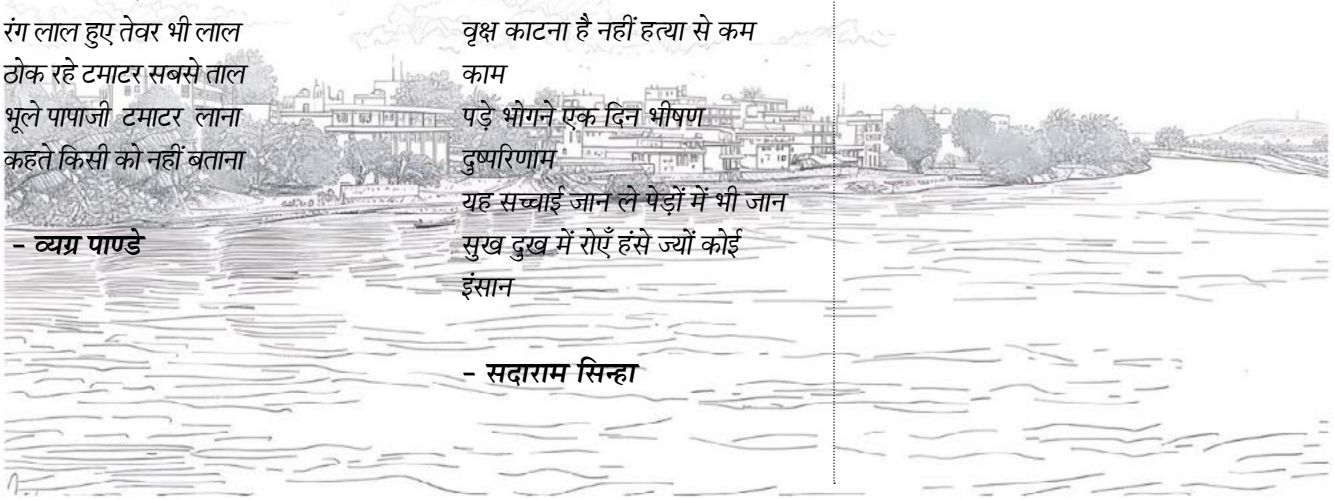

कविताई पागलपन है

एक पड़ोसी ने मुझसे कहा
सुना है-
कवियों में आपका है नाम
मतलब पागलपन है आपकी पहचान
हैं आप अति संवेदनशील
देखकर दुनिया की हालत
हो जाते हैं चिंतनशील
आपसे रहना होगा बचकर
आपके पास है शब्दों का नश्तर
आपकी माली हालत है नहीं बताने लायक
आप नहीं हैं उधारी के भी लायक
अपनी कविता छपवाने के लिए
खुद ही करते हैं भुगतान और
संपादकों को दिन-रात दुआ सलाम
किस्मत रही यदि बहुत मेहरबान
तो बुढ़ौती में पाइएगा कागजी ईनाम
क्या होगा भला ऐसे प्रोफेशन से?
जो भर न सके पेट दो वक्त की रोटी से
मैंने कहा-
कविताई नहीं है कोई प्रोफेशन
यह तो है एक पैसन
वैसे तो हर इंसान के अंदर
बसता है कविता
बस वह संवेदनशील दिखने से है बचता
फ़र्क इतना है कि
लोगों ने अपनी अंतरात्मा की आवाज को
सुनना कर दिया है बंद
वहीं बाकी है मुझमें अभी
थोड़ी-बहुत संवेदनशीलता का अंश
कविताई का नहीं लगा सकता है कोई मोल
यह तो बस होता है अनमोल
सच तो यह है कि
झकझोरती हैं कविताएं लोगों को
दिखाती हैं आईना सबको
चूंकि डरता है आप जैसे लोगों का अंतर्मन
इसलिए संवेदनशीलता और कविताई को
कहते हैं आप पागलपन।

-मृत्युंजय कुमार मनोज

सफर की मधुशाला

राहों में मिले हम-तुम,
मंजिलें थीं अलग-अलग।
सफर का था रंगीन मौसम,
पर नजर थी मंजिल पर।

क्षणिक है मंजिल पाना,
पर सफर का आनंद कहां?
अगर न देखें वो घटाएँ,
न करें हृदय रसपान।

मंजिल का क्या फायदा,
जो सफर से दूर करे।
चलो सफर को बना लें,
चलती-फिरती मधुशाला।

पल तो आएगा ही,
जब मंजिलें होंगी पास।
तब तक साथ में चलें,
और सफर का लें मज़ा।

तुम अपनी राह पर चलो,
हम अपनी राह पर चलें,
मिलेंगी मंजिलें जब,
सफर की यादें संग रह जायेंगी।

- अवनीश कुमार गुप्ता

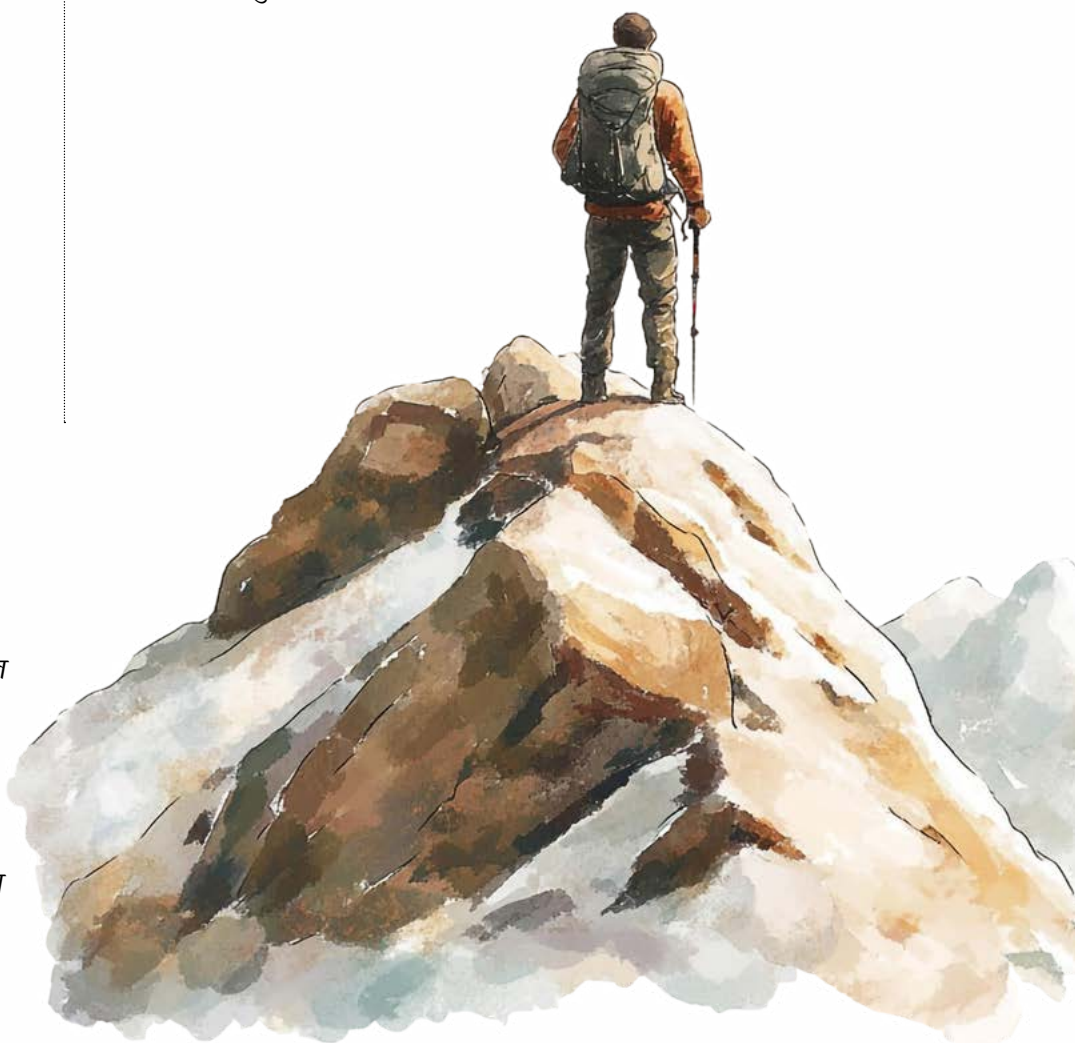

इमली

प्रकृतिमेल डेस्क

आज बात करते है प्रकृति के चटपटे स्पर्श की जिसके नाम से ही इंसान उसके स्वाद को याद कर आखें भींज लेता है। हम बात कर रहे है इमली की जिसके स्वाद के सब कायल तो है अब इमली के औषधीये गुणों के बारे में जानकर और भी कायल हो जायेंगे।

कई प्रकार के व्यंजनों का स्वाद बढ़ाती इमली मे ऐसे कई महत्वपूर्ण घटक होते है जो कि हमारे शरीर का भी ध्यान रखते है।

यूं तो इमली के खट्टे स्वाद से हम जान सकते है कि इससे विटामिन सी प्रचुर मात्रा में होता है। जो कि हमारे शरीर के प्रतिरोधक तंत्र को ताकत देता और इसके साथ ही त्वचा के लिए भी लाभदायक होता है।

इमली मे पाये जाने वाले एंटी-ऑक्सिडेंट्स ही है जो इंसान को कई प्रकार के जीवाणुओं के हमलो से बचाता है।

बुखार को ठीक करने में सहायक होता है। इमली में फाइबर पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है।

जिससे यह पेट को स्वस्थ रखता है।

यह पाचन को ठीक करता है। डायरिया, पेटदर्द मे आराम देता है। पेट में कीड़ों को भी बाहर निकलती है इमली।

इमली में मौजूद फाइबर पेट में गैस नहीं बनने देता है। कब्ज में भी राहत देता है। इमली कोटापे को कम करने में भी लाभ देती है।

इसमें फ्लेविनोइड्स पाया जाता जो कि बैड कोलेस्ट्रोल को कम करता है। जिससे हृदय में ब्लॉकेज का खतरा कम हो जाता है। इससे हृदय भी स्वस्थ रहता है। इमली एंटीवायरल का भी काम करती है।

बुखार, दर्द में भी लाभ देती है। इमली के गुण बालों स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद होते है।

इसमें मौजूद एंटीफंगल गुण त्वचा को स्वस्थ रखते है। खुजली आदि विकारों से शरीर की रक्षा करते है।

इतना ही नही इमली में मौजूद एमिनो एसिडस नई कोशिकाओं के निर्माण में सहायक होते है। जिससे शरीर स्वस्थ रहता है और किसी समस्या से जल्द उभर आता है। यह भी पाया गया है कि इमली मधुमेह में भी लाभ देती है।

यह बताना यहाँ आवश्यक है कि हमारे आपास इमली के पेड़ बहुत कम रह गये है। धरती की इस औषधीये धरोहर को बचाये और हो सके तो इमली या ऐसा ही गुणकारी पेड़ जरूर लगाये।

लक्ष्मीकांत

वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफर

“ राही और राह दो अलग अवस्था का नाम नहीं एक ही अवस्था के दो नाम है जीवन की राह सबकी अलग होती है जो स्वभाव बनकर आनंद बन जाती है मानव वैचारिक उलझनों में राह खोजता है पर हर अवस्था में जिस पर स्वयं सहमत होता है वही करता है यही उसकी ‘ राह ‘ है। ”

– अशोक मानव

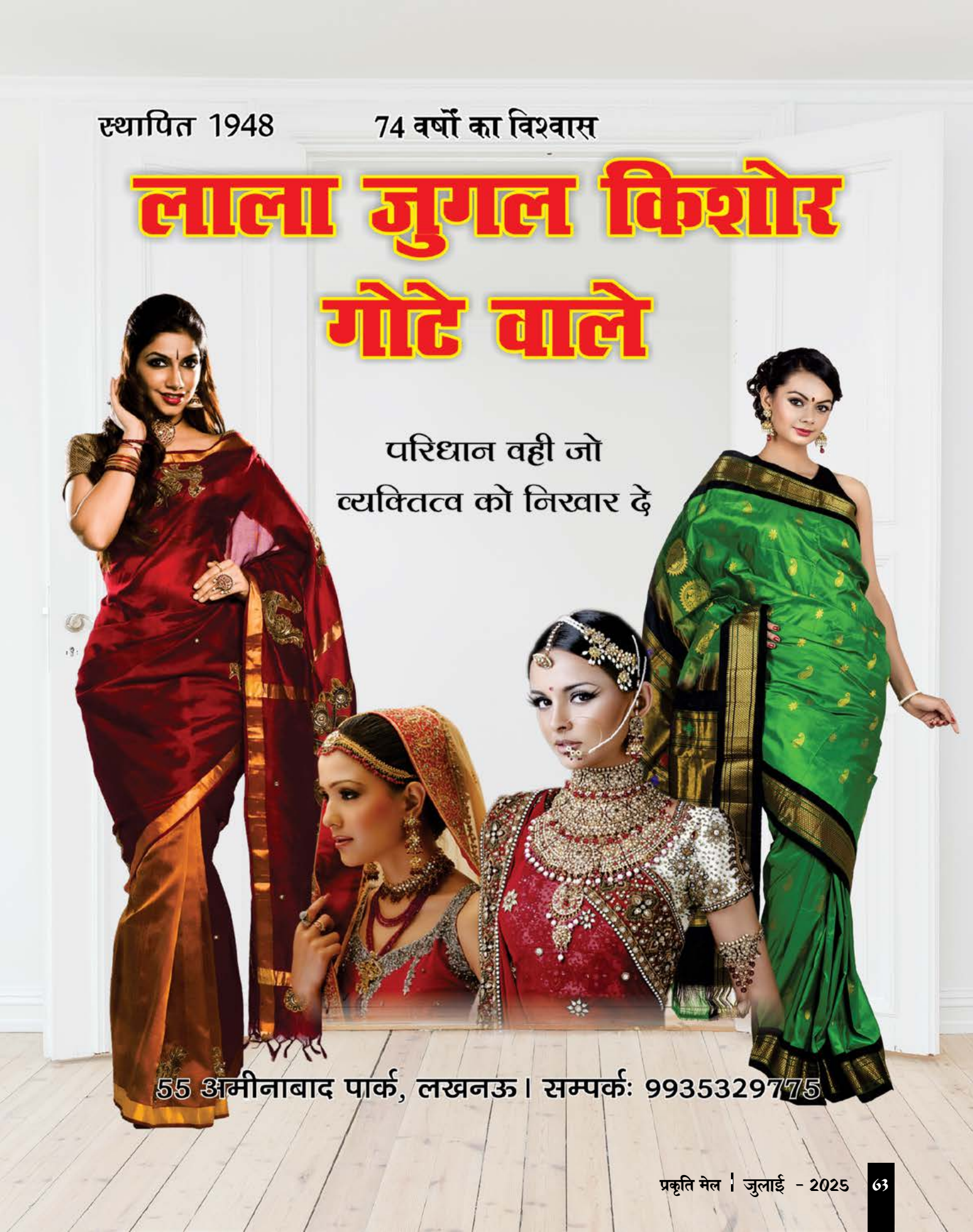
स्थापित 1948
74 वर्षों का विश्वास
लाला जुगल किशोर
गोटे वाले
परिधान वही जो
व्यक्तित्व को निखार दे
55 अमीनाबाद पार्क, लखनऊ। सम्पर्क: 9935329775

दुर्गा आटो सेल्स

सेवा ऐसी जो पसीना न बहने दे

Aurhorised Dealer for Mahindra Tractors, Farm Equipments & Spare Parts

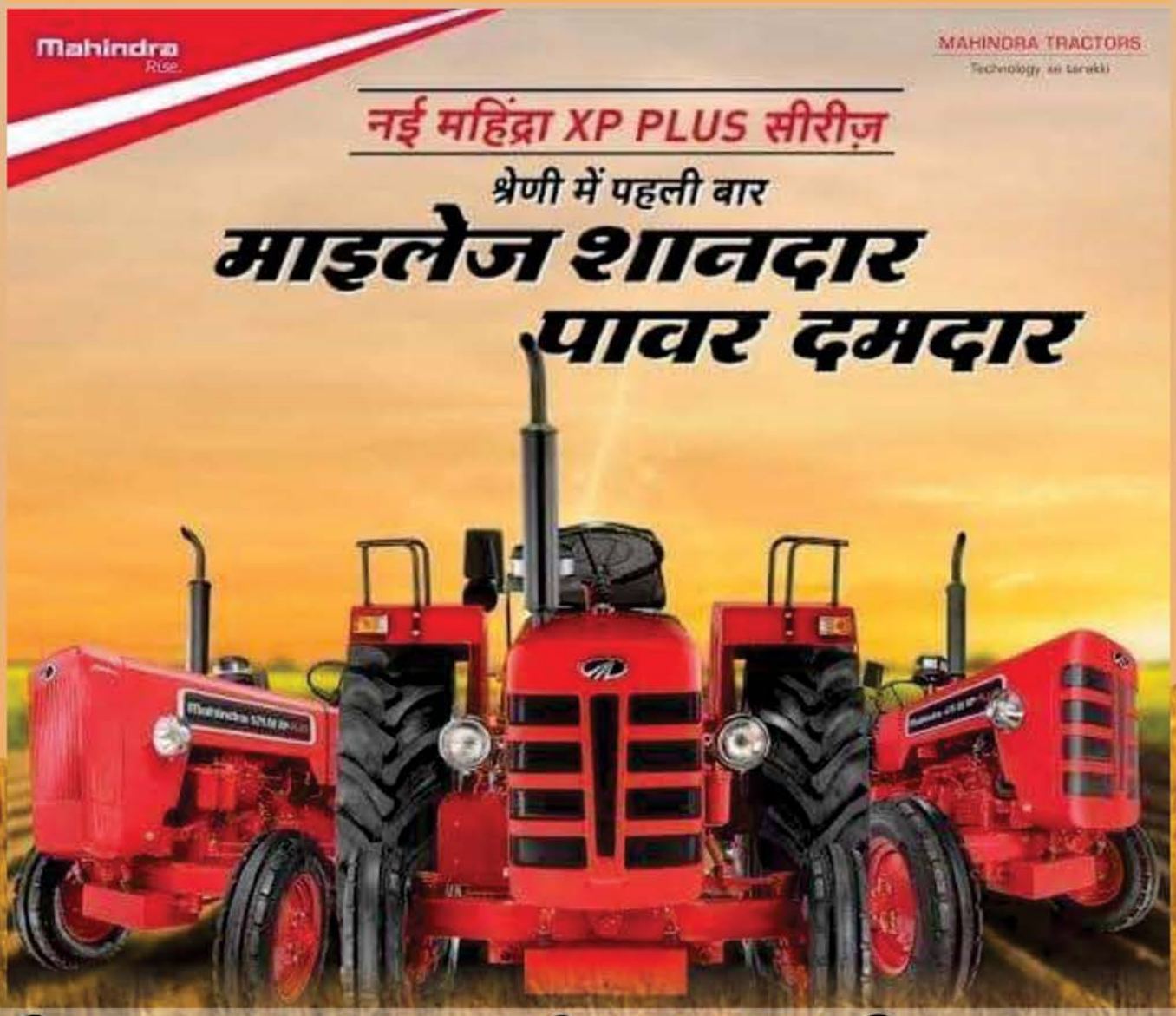

durgaautosale2000@gmail.com 9919528830 0545-4242216

इलाहाबाद-जौनपुर रोड, मद्धली शहर, जौनपुर, उ. प्र.।